टेलीफ़ोन-नम्बर : २०५

तार का पता : 'भविष्य'

भविष्य

वर्ष २ खण्ड १ | इलाहाबाद—सोमवार ; २ नवम्बर, १९३१ | सं० ५, पूर्ण सं० ५५

भारतीय स्वतन्त्रता के अनन्य पुजारी और पथ-प्रदर्शक—स्वर्गीय लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक

लन्दन-प्रवासी जिन डॉक्टर धनीराम 'प्रेम' की कहानियों को पढ़ने के लिए 'चाँद' और 'भविष्य' के पाठक उत्सुक रहते हैं, जिनकी पहली ही कहानी 'डोरा' ने कहानी-संसार में हलचल मचा दी थी, 'बल्लरी' उन्हीं की ग्यारह सरस सुन्दर कहानियों का संग्रह है। इसकी 'डोरा' कहानी में जहाँ आप करुणा की आहत सिसकियों से तड़प उठेंगे, 'कहानी-लेखक' में हास्य और कौतूहल का सामञ्जस्य देख कर अवाक् रह जायँगे, वहीं 'वेश्या का हृदय' और 'वह मुस्कान' में अन्तर के घात-प्रतिघातों का चित्र देख कर आपको स्तम्भित रह जाना पड़ेगा। 'चाँद' और 'भविष्य' में छपी हुई कई कहानियों के अतिरिक्त इसमें 'वह मुस्कान', 'गीत', और 'डोरा का रूमाल' आदि कई नई कहानियाँ भी हैं। जिन्होंने डोरा नाम की कहानी पढ़ी है, वे यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि 'डोरा के रूमाल' का क्या हुआ। यह बात पाठकों को 'डोरा का रूमाल' कहानी पढ़ने पर ही मालूम होगी और यह कहानी इसी पुस्तक में पढ़ने को मिल सकेगी।

यह उन अनमोल कहानियों का संग्रह है, जो आज तक हिन्दी-संसार में अप्राप्य थीं। इसकी प्रत्येक कहानी अत्यन्त रोचक, मधुर एवं अमूल्य है। जिस विषय को लेकर देवी जी ने कहानी प्रारम्भ की है, उसका सजीव चित्र दिखला दिया है। किसी कहानी में दीनता की करुण पुकार है, तो किसी में वीर-रस की धारा प्रवाहित हो रही है। किसी में दाम्पत्य प्रेम का स्वर्गीय आनन्द उमड़ रहा है, तो किसी में मातृ-भूमि का आर्तनाद एवं उसकी दयनीय विवशता देख कर हृदय छटपटा उठता है और देशभक्ति की उमङ्ग से मनुष्य पागल-सा हो उठता है। अधिक प्रशंसा न कर, हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी कहानियाँ आपने आज तक न पढ़ी होंगी। भाषा ऐसी सरल एवं मधुर है कि एक छोटा सा बच्चा भी आनन्द उठा सकता है। पुस्तक छप रही है, शीघ्र ही प्रकाशित होगी। अभी से ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए!

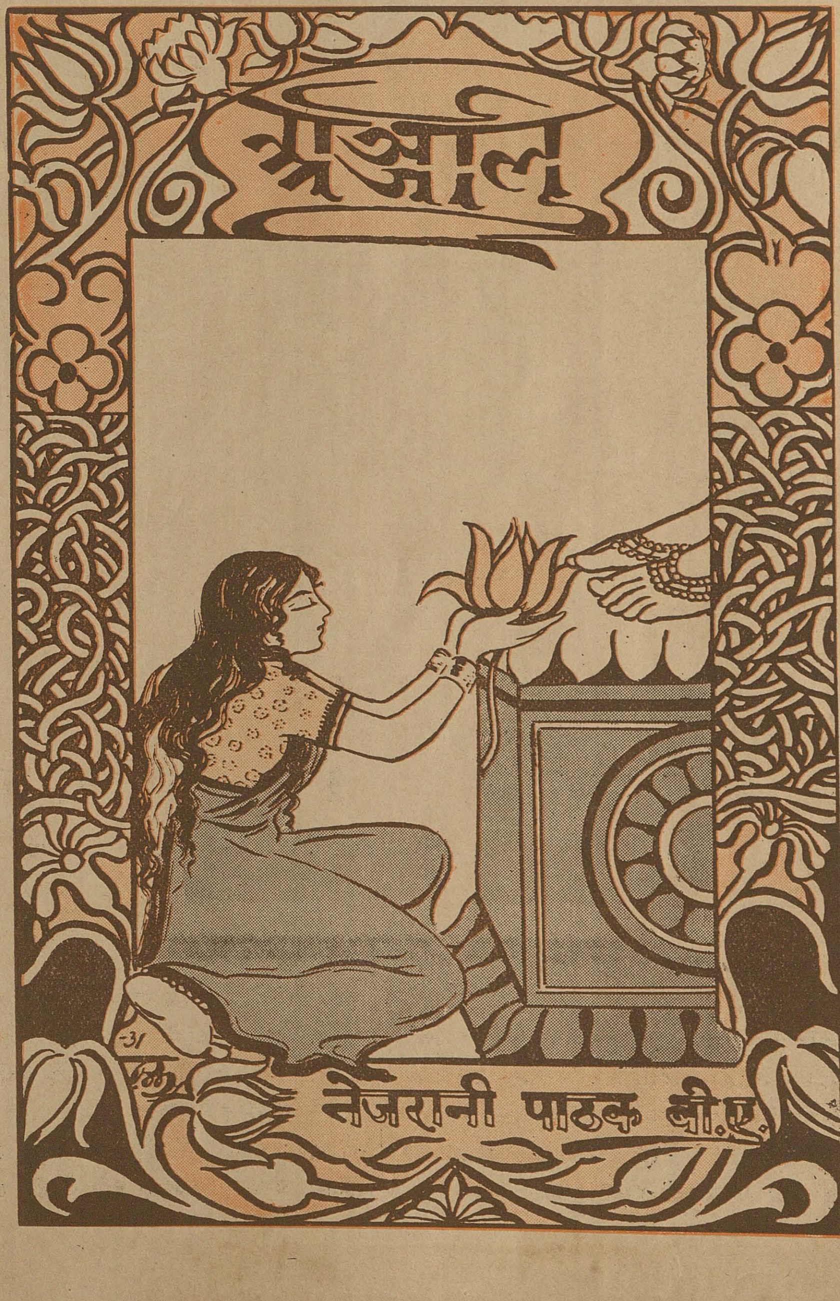

व्यवस्थापक—'चाँद' कार्यालय,
चन्द्रलोक, इलाहाबाद

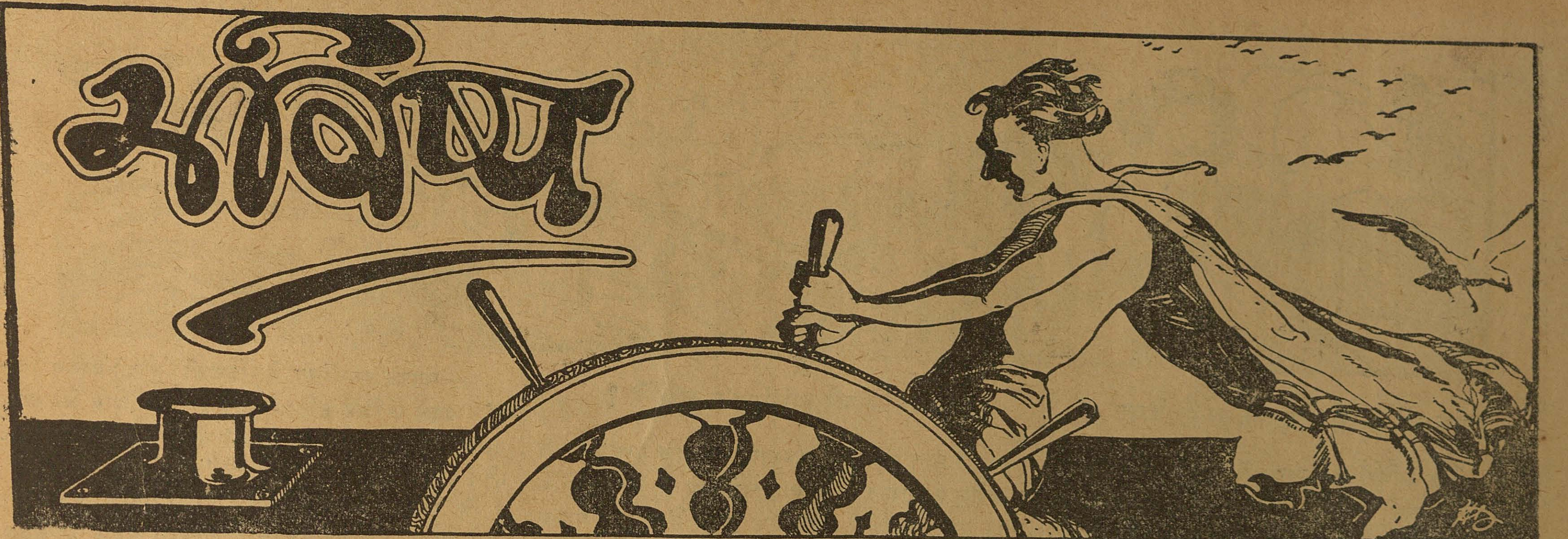

वर्ष २, खण्ड १ | इलाहाबाद—सोमवार ; २ नवम्बर, १९३१ | संख्या ५, पूर्ण संख्या ५५

बङ्गाल पर दमन के भीषण बादल मँडरा रहे हैं

क्या सरकार ने दमन पर कमर कस ली ?

मार्शल लॉ, देश-निकाला और गुप्त अदालतों की योजना

दिल्ली, ३० अक्टूबर

'पायोनीयर' का विशेष सम्वाददाता लिखता है कि वाइसरॉय की कौन्सिल में बङ्गाल की समस्या पर बड़ी गम्भीरता के साथ विचार हो रहा है। विचार बहुत गुप्त रीति से हो रहा है और आतङ्ककारी आन्दोलन को दबाने का क्या उपाय सोचा जा रहा है, यह कुछ ही दिनों में प्रकट हो जायगा। यहाँ लोगों की आम धारणा है कि कोई कड़ा उपाय निकाला जायगा और भारत सरकार जो कोई भी उपाय निकालेगी, वह व्यापक और आयलैंण्ड की भाँति होगा, जिसमें मुक़दमों की गुप्त जाँच और 'समरी' फ़ैसला होगा, और अभियुक्त को देश-निकाला दे दिया जायगा। और इस प्रकार आतङ्ककारी कार्यों द्वारा कानून को जो भङ्ग किया जा रहा है, उसी प्रकार उसका प्रतिकार होगा।

ख़बर है, कि जिन ज़िलों में आवश्यकता है, उनमें फ़ौज के प्रदर्शन करने का प्रबन्ध पहिले ही कर दिया गया है, जैसा कि इस शताब्दी के प्रथम भाग में किया गया था। कुछ सीमाओं में मार्शल-लॉ जारी करने का भी विचार प्रकट किया जाता रहा है, किन्तु इस समय उसका प्रश्न उठता नहीं दिखाई देता, क्योंकि आतङ्ककारी आन्दोलन में किसानों और आम जनता की सहानुभूति या सम्बन्ध नहीं है और मार्शल-लॉ का केवल अनिच्छित प्रभाव नहीं पड़ेगा ; बल्कि उसके दायरे में गुमराह युवक और गुप्त आतङ्ककारी दल नहीं आ सकेंगे। इसके विपरीत ऐसे स्थानों में फ़ौजें बैठाने और फ़ौजी झण्डा घुमाने से आबादी पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ेगा कि सरकार अभी क़ायम है। इससे भी ज़्यादा यह ज़रूरी इसलिए है कि इससे सम्राट् के कर्मचारियों का अपना कर्तव्य पालन करने में उत्साह बढ़े। सम्वाददाता का कहना है कि हर तरफ़ यह विचार प्रकट किया जा रहा है कि वर्तमान स्थिति बङ्गाल की साधारण पुलीस और मौजूदा क़ानूनों से बाहर हो गई है। इसलिए कहा जाता है कि ऑर्डिनेन्स के अलावा और भी क़ानून बनाने की ज़रूरत है। जिन लोगों को यहाँ की पूरी जानकारी है, उनका ख़याल है कि भारत सरकार इङ्गलैण्ड की राष्ट्रीय सरकार के पूर्ण-समर्थन के विश्वास पर और भारत के ज़िम्मेदार लोगों तथा गोलमेज़ में गए हुओं के पूर्ण-समर्थन की आशा पर परिस्थिति का मुक़ाबला करना चाहती है। ऐसे बहुत से कारण हैं जिनसे विश्वास होता है कि नए ऑर्डिनेन्स के साथ-साथ और भी क़ानून बनाए जाने में अब देर नहीं है।

राजनीतिक हत्याओं का कारण सरकार की नीति ही है

बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के विषय में म० गाँधी की सम्मति

लन्दन, ३१ अक्टूबर

आज कॉमन वेल्थ इण्डिया लीग की मीटिङ्ग में म० गाँधी ने नए बङ्गाल ऑर्डिनेन्स पर आक्षेप करते हुए कहा कि अब तक भी सरकार के हाथ में काफ़ी शक्ति थी। गाँधी जी ने मि० विलियर्स और ढाका के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट पर किए गए आक्रमणों को निन्दनीय और लज्जाजनक बतलाया और यह भी कहा कि ये मेरे लिए बाधा-स्वरूप हैं। पर साथ ही उन्होंने क्रान्तिकारियों के कार्य के लिए चटगाँव में प्रतिहिंसापूर्ण बदला लेने और हिजली की घटना की तरफ़ इशारा करके कहा कि ये बातें एक दूसरे के कारण और फल हैं और इस परम्परा का बराबर बढ़ते जाना स्वाभाविक है। इसका इलाज यही है कि ख़राबी के मूल कारण को ढूँढ़ा जाय और भारत को स्वतन्त्रता दी जाय। गाँधी जी ने कहा कि चटगाँव और हिजली की घटनाएँ ऐसी थीं कि जो मुझे भारत को लौट जाने का इशारा करती थीं। पर मैंने सोचा कि मुझे जल्दबाज़ी या अधैर्य से काम न लेना चाहिए। "मैं क्रोधित होकर कॉन्फ्रेन्स को न छोड़ जाऊँगा, वरन् मैं प्रतीक्षा करूँगा, प्रार्थना करूँगा और पैरवी करूँगा। पर मैंने अपना सत्याग्रह का अधिकार भी रक्षित रक्खा है और यदि राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स काँग्रेस की माँग को स्वीकार न करेगी तो हम उसे आरम्भ कर देंगे।" गाँधी जी ने साम्प्रदायिक मतभेद के लिए सरकार दोषी बतलाया और कहा कि यदि राउण्ड टेबिल कान्फ्रेन्स असफल हुई तो वह असहयोग को फिर से शुरू करने में न हिचकिचाएँगे और इस तरह पारस्परिक कलह की जड़ ही पर कुठाराघात करेंगे।

❀

"गाँधी को गोली मार कर ख़ुश होंगे"

रूस को अतिरिक्त सेना रखनी पड़ेगी

मि० बर्नार्डशा के विचार

ख्यातनामा अङ्गरेज़ लेखक मिस्टर बर्नार्डशा ने इङ्गलैण्ड के चुनाव के सम्बन्ध में विचार प्रकट करते हुए 'मैन्चेस्टर गार्जियन' के प्रतिनिधि से कहा—"मि० मैकडॉनेल्ड कट्टरों के प्रमुख हो गए हैं। कट्टर लोग नए कट्टर दल वालों की अपेक्षा पुराने साम्यवादी को अधिक पसन्द करते हैं। कट्टर दल वालों के इस बड़े बहुमत के कारण स्टालिन को रूस में, मालूम होता है, अतिरिक्त सेना सङ्गठित करनी होगी।......यदि मैकडॉनेल्ड कट्टरों पर अङ्कुश न रक्खेंगे तो पिछली बातें फिर होंगी।"

यह पूछने पर कि क्या महात्मा गाँधी निराश भारत लौटा दिए जाएँगे। मि० बर्नार्डशा ने कहा—"वे सिर्फ़ गाँधी को घर ही नहीं लौटा देंगे, बल्कि उन्हें गोली मार देंगे। बहुत से टोरी (कट्टर) दल वाले इस काम को करने में बहुत प्रसन्न होंगे।"

दिल्ली षड्यन्त्र केस

३० अक्टूबर को दिल्ली षड्यन्त्र केस की कार्रवाई आरम्भ हुई। अभियुक्त वात्सायन और विमलप्रसाद जैन ने उसमें भाग न लिया। पर नए ऑर्डिनेन्स के आधार पर उनकी ग़ैरहाज़िरी के कारण मुक़दमा स्थगित करना आवश्यक न समझा गया। पर चूँकि अभियुक्त विद्याभूषण हाईकोर्ट में मुक़दमे को दूसरी अदालत में बदलने की अर्ज़ी देने वाला है, इसलिए मुक़दमा ३ नवम्बर के लिए स्थगित कर दिया गया।

डाक के थैले फिर लूटे गए

खुलना, ३० अक्टूबर

ताला से खुलना जाते हुए तीन डाक ढोने वालों पर चार युवकों ने हमला किया और लाठियों से उन्हें ज़ख़्मी कर १९ थैले छीन ले गए। तीनों घायल सदर अस्पताल में पहुँचाए गए।

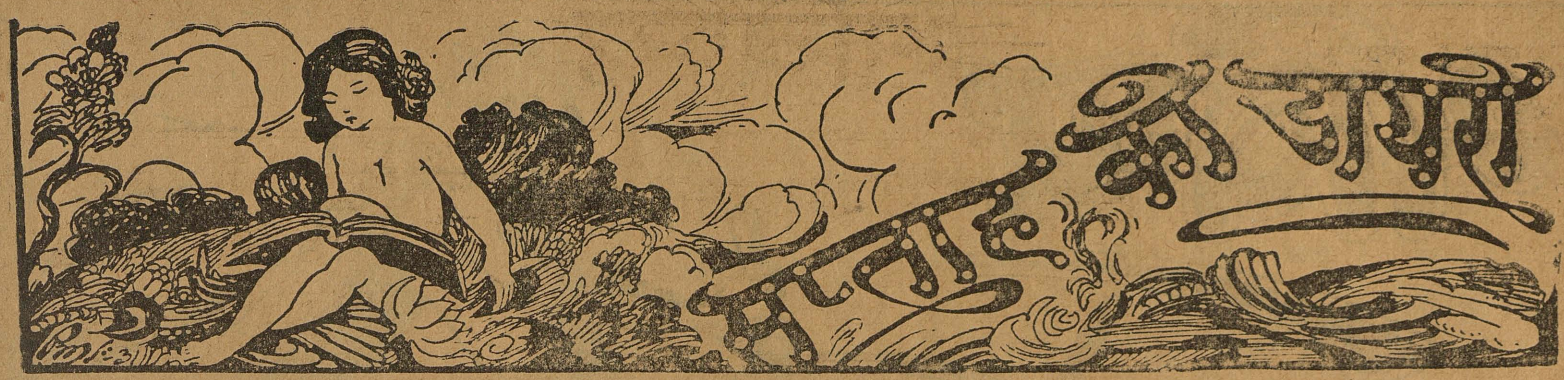

आगामी कॉङ्ग्रेस के प्रेज़िडेण्ट

—वर्किङ्ग कमिटी के सम्बन्ध में आए हुए कॉङ्ग्रेसी नेताओं की बातों से मालूम होता है कि आगामी कॉङ्ग्रेस के प्रेज़िडेण्ट पद के लिए श्री० राजगोपालाचारी और बाबू राजेन्द्र प्रसाद के पक्ष में अधिक लोगों की सम्मति है। प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटियों से कहा गया है कि वे आगामी ३० नवम्बर तक प्रेज़िडेण्ट के सम्बन्ध में अपनी राय भेज दें।

—नागपुर में गत २९ अक्टूबर को जी० आई० पी० रेलवे और बङ्गाल नागपुर रेलवे के कर्मचारियों की एक सम्मिलित सभा हुई और उसमें एक प्रस्ताव पास कर, यह अपील की गई कि समस्त भारतीय रेलवों में आम हड़ताल कर दी जाय और कर्मचारियों के अधिकार उपस्थित करते हुए यह माँग पेश की जाय, कि जो लोग निकाल दिए गए हैं वे फिर रक्खे जायँ और दूसरे लोग अब न निकाले जायँ। अखिल भारतीय रेलवेमेन्स फ़ेडरेशन से प्रार्थना की गई कि वह इन लोगों की माँगों पर आम हड़ताल घोषित कर दे।

—बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान मन्त्री ने बड़ी जाति के हिन्दुओं से प्रार्थना की है कि समाज से अछूतपन दूर करने और दलितों को ऊपर उठाने के लिए इनके लड़कों को अपने घरों में नौकर रक्खा जाय। इससे बड़ी जाति वालों में अछूतों के प्रति घृणा का भाव दूर होगा और अन्त्यज बालक समाज में अच्छे प्रकार से रहना सीखेंगे और शिक्षा भी प्राप्त करेंगे। इस कॉङ्ग्रेस कमिटी ने अन्त्यज बालकों की शिक्षा के लिए स्कूल और रात्रि-पाठशालाएँ खोली हैं और उनकी शारीरिक दशा सुधारने के लिए व्यायामशालाएँ भी स्थापित की हैं। कमिटी के पास कुछ दलित जाति के लोग ऐसे भी हैं, जो मोटर ड्राइवरी और मैशीन-पुर्ज़े आदि का काम सीखे हुए हैं।

—बम्बई में प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी की ओर से ताड़ी की दूकानों पर ज़ोरों से पिकेटिङ्ग होती है। कोई दिन ऐसा नहीं जाता, जिस रोज़ वालण्टियरों पर हमले न होते हों। उस दिन चन्द्राप्पा नामक एक वालण्टियर क्रासलेन में बेजन जी काउस जी की दूकान पर पिकेटिङ्ग कर रहा था। इसी बीच में किसी ने पीछे से वालण्टियर पर पटाखों का एक गुच्छा फेंका। जिससे वालण्टियर का कन्धा और हाथ की गदोरी जल गई। शीघ्र ही वह अस्पताल पहुँचाया गया। इस तरह की कार्रवाइयाँ वालण्टियरों को डराने और निरुत्साहित करने के लिए की जा रही हैं। कॉङ्ग्रेस ने निश्चय किया है कि जहाँ वालण्टियरों के साथ इस तरह का व्यवहार होगा, वहाँ और भी ज़ोरों से पिकेटिङ्ग की जायगी।

—बरार यूथ लीग कॉन्फ्रेन्स का अधिवेशन गत २४ और २५ अक्टूबर को अमरावती में बम्बई के श्री० मेहरअली की अध्यक्षता में हुआ। कॉन्फ्रेन्स में श्री० एम० एन० रॉय की गिरफ़्तारी और बरार को निज़ाम को देने की बात पर बहुत असन्तोष प्रकट किया गया। अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव कॉन्फ्रेन्स में पास हुए, जिनमें भारत की आज़ादी का ध्येय ब्रिटिश साम्राज्य से बिल्कुल सम्बन्ध न रख कर पूर्ण-स्वतन्त्रता रक्खा गया। समाज को साम्यवादी सिद्धान्तों के आधार पर पुनर्सङ्गठित करने को कहा गया।

मालवीय जी अमेरिका जाएँगे ?

इस बात की बहुत सम्भावना है कि मालवीय जी गोलमेज़ समाप्त होने के बाद अमेरिका जाएँगे। क्योंकि उनके पास बहुत से निमन्त्रण आए हैं। यदि प्रबन्ध ठीक हुआ, तो मालवीय जी जाने को उत्सुक हैं।

—बम्बई में बेकारी के कारण अभी हाल ही में एक हिन्दू ने अपनी दो लड़कियों को ज़हर देकर आत्म-हत्या कर ली थी। उसके बाद एक दूसरे हिन्दू ने पिछले मङ्गलवार को जीविका उपार्जन के लिए कोई काम न मिलने के कारण मकान की तीसरी मञ्ज़िल से गिर कर आत्म-हत्या कर ली। अब तीसरी घटना यह है कि एक मुख़्तारजी नौरोजीनामक व्यक्ति जिसकी अवस्था केवल ३० वर्ष की थी अफीम खाकर मर गया। अफ़ीम खाने से पहिले उसने अपने एक मित्र को पत्र लिखा, उसमें उसने लिखा कि जीवन से वह ऊब गया था और बेकारी के कारण उसने अफ़ीम खा ली है।

२५) नक़द पुरस्कार

चाँद की आगामी प्रतियोगिता के लिए

नवम्बर के 'चाँद' में प्रकाशित चित्र-पहेली के सही उत्तरदाता को २५) का नक़द पुरस्कार मिलेगा। विस्तृत विवरण जानने के लिए 'चाँद' के ग्राहक बन जाइए और नवम्बर का अङ्क पढ़िए।

प्रतीक्षा कीजिए

इसी महीने से हम 'भविष्य' में भी पुरस्कार-प्रतियोगिता प्रारम्भ करेंगे। इसके लिए कई पुरस्कार दिए जाया करेंगे। अपनी कॉपी नियमपूर्वक पाने का प्रबन्ध कर लीजिए, और विस्तृत विवरण के लिए प्रतीक्षा कीजिए।

—दक्षिण अफ्रीका के हीलब्रोन ऑरेञ्ज फ्रीस्टेट के निकट पृथ्वी के अन्दर से खोद कर अत्यन्त प्राचीन नगर निकाला गया है। नगर दो मील लम्बा और आध मील चौड़ा है। उसमें कुछ दफ़नाई हुई लाशें भी मिली हैं, जिनसे पता चलता है कि मनुष्य जाति के आदि-काल का यह नगर की अनेक बातें देख कर डॉ० लेडलर का कहना है कि मनुष्य जाति का आदि निवास-एशिया नहीं, अफ्रीका में था।

—मैसूर-राज्य प्रजा-कॉन्फ्रेन्स का अधिवेशन समाप्त हो गया। कॉन्फ्रेन्स में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव यह पास हुआ कि राज्य के बड़े-बड़े अफ़सरों के वेतन घटाने में जो देरी की जा रही है, उस पर कॉन्फ्रेन्स खेद प्रकट करती है और इस बात पर ज़ोर देती है कि अफ़सरों की तनख़्वाहें इस प्रकार घटाई जायँ:—दीवान के वेतन में ३३। फ़ी सैकड़ा, एक्ज़ीक्यूटिव कौन्सिलरों के वेतन में २५ फ़ी सैकड़ा, ज़िले के अधिकारियों के वेतनों में २० फ़ी सैकड़ा और इसी हिसाब से १०० रु० पाने वालों की तनख़्वाहें घटाई जायँ।

—बङ्गाल गवर्नमेण्ट ने हिजली गोली-काण्ड की जाँच करने के लिए जस्टिस मल्लिक और मि० जे० जी० ड्रमण्ड की जो कमिटी नियत की थी, उसने अपनी रिपोर्ट दी। कमिटी इस निर्णय पर पहुँची है कि सन्तरी नं० ३ ने किसी बात से उत्तेजित होकर ख़तरे की घण्टी बजा दी। इस पर हवलदार रहमान बख़्श के हुक्म से गारद और सन्तरी दरवाजे के भीतर घुस गए और उन्होंने कुछ नज़रबन्दों को, जो शायद दक्खिन वाले सिरे पर घूम रहे थे, मार कर हटा दिया। सन्तरियों ने कुछ गोलियाँ भी चलाईं। इसके बाद कुछ नज़रबन्दों ने बदला लेने की साधारण सी चेष्टा की, जिस पर सिपाहियों ने बिना किसी उचित कारण के नज़रबन्दों के निवास स्थान पर मनमाने ढङ्ग से गोलियाँ चलाना आरम्भ कर दिया। फल-स्वरूप दो नज़रबन्द मारे गए और कितने ही घायल हुए।

—फ़तेहपुर काङ्ग्रेस कमिटी की कार्यकारिणी ने दिल्ली में अखिल भारतीय काङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी के पास तार भेजा है कि फ़तेहपुर में १३१६ फ़सली की भाँति लगान लगाई गई है। ३१ लाख में सिर्फ़ ९ लाख की छूट बिल्कुल नाकाफ़ी है। ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी सत्याग्रह शुरू करने की तजवीज़ करती है और इलाहाबाद का अनुकरण करने को तैयार है।

—बम्बई के मेयर मि० जे० बी० लोमन बहराम ने सिटीज़न कन्सिलिएशन कमिटी के कहने पर चार जिमखानों की एक मीटिङ्ग जाड़े के दिनों में क्रीकेट मैच होने के प्रश्न पर विचार करने के लिए बुलाई थी। मीटिङ्ग में तय हुआ कि गोलमेज़ कान्फ्रेन्स का नतीजा न मालूम होने तक इस प्रश्न पर विचार करना स्थगित रक्खा जाय।

—स्वीट्ज़लैण्ड में अफ़ग़ानिस्तान के पदच्युत नादशाह अमानुल्लाखाँ के सम्बन्ध में तरह-तरह की ख़बरें उड़ रही हैं। एकाएक वह अपने मकान से ग़ायब हो गए। कुछ अख़बारों का कहना है कि कुछ दिनों से वह टर्की के समर्थकों की सहायता से अफ़ग़ानिस्तान के वर्तमान बादशाह नादिरशाह को गद्दी से हटाने का गुप्त प्रयत्न कर रहे हैं।

—बनारस का २६ ता० का समाचार है कि अछूत कमिटी के सेक्रेटरी ने महात्मा गाँधी के पास नीचे लिखा प्रस्ताव तार द्वारा भेजा है। यह प्रस्ताव अछूतों की एक सार्वजनिक सभा में, जिसके अध्यक्ष श्री० गौरीशङ्कर प्रसाद थे, पास किया था। प्रस्ताव इस प्रकार है:—

"बनारस के अछूतों की सार्वजनिक मीटिङ्ग डॉ० अम्बेडकर में अविश्वास प्रकट करती है और कॉङ्ग्रेस की माँग का समर्थन करती है।"

—चीन-जापान युद्ध का मामला जो राष्ट्र-सङ्घ के सामने पेश हुआ था, उसमें जापान की ज़बरदस्त नैतिक हार हो गई। ख़बर है कि राष्ट्र-सङ्घ के चीन-प्रतिनिधि डॉ० जे राष्ट्र-सङ्घ से यह अनुमति माँगेंगे कि यदि जापान अपनी सेना न हटाए, तो उसका आर्थिक बायकॉट किया जाय। जापान के प्रस्तावों से राष्ट्र-सङ्घ में असन्तोष फैला है। जापान वाले कहते हैं कि जापान अपने निश्चय पर दृढ़ रहेगा, चाहे सारा संसार उसके विरुद्ध हो जाय। जापान-सरकार राष्ट्र सङ्घ से अलग हो जाने पर बड़ी गम्भीरता से विचार कर रही है।

शासन की बागडोर शीघ्र ही भारतवासियों के हाथ आनी चाहिए

कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी ने सरकारी नीति का भण्डा फोड़ा

नई दिल्ली, २८ अक्टूबर, आज सुबह की बैठक में कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी ने करेन्सी और एक्सचेञ्ज की नीति, फ़ायनेन्स बिल और कॉङ्ग्रेस के चुनाव के सम्बन्ध में तीन प्रस्ताव पास किए, जो इस प्रकार हैं:—

(१) वर्किङ्ग कमिटी की सम्मति में भारत सरकार ने हाल में जो करेन्सी और एक्सचेञ्ज की नीति अख़्तियार की है, उसमें भारतवासियों की सम्मति की पूरी तरह से अवहेलना की गई है। साथ ही ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने रुपए का सम्बन्ध पौण्ड के साथ जोड़ कर, बजाय इसके कि उसे अपने पैरों पर खड़े होने को छोड़ दिया जाता, अप्रत्यक्ष रीति से इङ्गलैण्ड के व्यापार के लिए मार्ग खोल दिया है। यह कार्य भारत की जनता के हित के विरुद्ध है, क्योंकि इससे भारत का छोटा सा सुवर्ण-भण्डार और भी घट जायगा। इससे भारत में रिज़र्व बैङ्क की स्थापना में बाधा पड़ेगी और वह अपने विदेशों से किए वायदों को भी पूरा न कर सकेगा। कमिटी ब्रिटिश सरकार को आगाह करती है कि ऐसी ख़ुदग़र्ज़ी की पॉलिसी की पूरी ज़िम्मेदारी उसी के कन्धों पर रहेगी, और इससे भारत की जो हानि होगी उसका हिसाब-किताब भारत और इङ्गलैण्ड के बीच में आर्थिक समझौता होते समय पूरी तरह से किया जायगा।

(२) कमिटी की सम्मति है कि वर्तमान आर्थिक-सङ्कट में अपने बजट को पूरा करने के लिए भारत सरकार ने जिस अर्थनीति का सहारा लिया है और नए-नए भारी टैक्स लगाए हैं, बजाय इसके कि वह अपने ख़र्च में एकदम कमी कर देती, उससे सिद्ध होता है कि शासन की बागडोर का शीघ्र ही भारतवासियों के हाथ में दिया जाना और भी आवश्यक है। कमिटी ख़ास तौर पर नमक पर लगाए जाने वाले नए टैक्स का विरोध करती है, जोकि दिल्ली-समझौते को भङ्ग करना है, जिसका आशय यह था कि इस विषय में ग़रीबों को जल्दी ही पूरी तरह से भार-मुक्त कर दिया जाय।

(३) यह जानते हुए कि चूँकि प्रान्तों में कॉङ्ग्रेस का चुनाव कुछ ही समय पहले हुआ है, और नया सार्वजनिक चुनाव शीघ्र ही करना उचित नहीं है, यह निश्चय किया जाता है कि नीचे लिखे चुनावों के सिवाय और सब स्थानीय तथा प्रान्तीय चुनाव उस समय तक स्थगित रहें, जब तक कि दूसरी सूचना न दी जाय। पर ऑल इण्डिया कमिटी के सदस्यों का चुनाव प्रान्तीय कमिटियों को ३१ जनवरी, १९३२ से पहले कर डालना चाहिए। पर इस सम्बन्ध में बङ्गाल के लिए यह शर्त है कि स्थानीय और प्रान्तीय-कमिटियों का चुनाव श्री० अणे के फ़ैसले के अनुसार हो जाय। पञ्जाब के स्थानीय और प्रान्तीय चुनाव भी अपने नियत समय पर हो जाने चाहिए, क्योंकि पिछले चुनाव ज़्यादातर कितने ही दलों के पारस्परिक समझौते के आधार पर किए गए थे। सीमा-प्रान्त में भी वे स्थानीय और प्रान्तीय चुनाव हो जाने चाहिए, जिससे पुनर्सङ्गठन का कार्य जनवरी, १९३२ के अन्त तक पूरा हो जाय।

कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी ने इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट कॉङ्ग्रेस कमिटी की इस अर्ज़ी के सम्बन्ध में, कि यू० पी० गवर्नमेण्ट की वर्तमान किसानों सम्बन्धी नीति और वर्तमान आर्थिक सङ्कट के समय लगान और कर वसूल करने के विरुद्ध किसानों की तरफ़ से रक्षात्मक सत्याग्रह करने की आज्ञा दी जाय, एक प्रस्ताव पास किया है। वर्किङ्ग कमिटी ने उक्त अर्ज़ी को विचारार्थ संयुक्त प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सुपुर्द कर दिया है। अगर संयुक्त प्रान्तीय कमिटी समझेगी कि सत्याग्रह आरम्भ करने के लिए उचित कारण हैं तो कॉङ्ग्रेस के प्रेज़िडेण्ट (सरदार पटेल) अर्ज़ी पर विचार करेंगे और उसके सम्बन्ध में फ़ैसला सुनाएँगे।

भारत स्वतन्त्रता के लिए निर्भय होकर प्रयत्न करे

अङ्गरेज़ आई० सी० एस० की रॉय

'बॉम्बे क्रॉनिकल' के विशेष प्रतिनिधि से बातें करते हुए एक अवकाश-प्राप्त भारत के पुराने आई० सी० एस० मि० बेर्नार्ड हफ़्न ने बातें करते हुए कहा कि—"अब फिर लॉर्ड बर्कनहेड का ज़माना आ गया। भारत के हित के लिए निर्भीक साम्राज्यवाद कोरी बातों से, जिसमें भारत पिछले दो वर्षों से पड़ा रहा, कहीं अच्छा है। यह निश्चित है कि भारत के साथ कट्टर दल वालों के सिद्धान्त के अनुसार व्यवहार होगा, किन्तु आर्थिक सङ्कट के कारण वे लोग अपने घरेलू मामलों में अधिक ध्यान देंगे। इस समय भारत को यह नहीं भूल जाना चाहिए कि ब्रिटिश साम्राज्य इस समय या तो बिखर रहा है और या विद्रोह की दशा में है, इसलिए भारत को निर्भीकता के साथ अपनी ३० करोड़ भूखों मरने वाली जनता के लिए आज़ादी का प्रयत्न करना चाहिए।"

* * *

—लन्दन के 'डेली एक्सप्रेस' का कहना है कि निज़ाम के युवराज नवाब मीर हिमायतअली ख़ाँ आज़म जान की शादी पदच्युत ख़लीफ़ा की लड़की से पक्की हो गई। कहा जाता है कि पिछले मई में निज़ाम के दो राजकुमार इसी बातचीत को पक्की करने के लिए इङ्गलैण्ड गए थे।

क्या गोलमेज़ परिषद सचमुच ख़त्म होने वाली है?

कञ्ज़रवेटिवों के प्रधान समर्थ 'पोस्ट' की सम्मति 'मॉरनिङ्ग'

'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्बाददाता ने लन्दन से समाचार भेजा है कि गोलमेज़ परिषद के ख़ात्मे के सम्बन्ध में जो चर्चा फैल रही है, उसके विषय में पूछ-ताछ करने के लिए मैं २२ ता० को सुबह भारतीय प्रतिनिधियों से मिला। उनकी बातों से यह प्रकट नहीं होता था कि उन्होंने ६ और १३ नवम्बर को रवाना होने वाले जहाज़ों में जो जगहें रिज़र्व कराई हैं उस सम्बन्ध में उन्होंने अपने इरादे को बदल दिया है। सच पूछा जाय तो हर एक की यही राय है कि कॉन्फ़्रेन्स तब तक बिना कुछ फ़ैसला किए ख़त्म हो जायगी।

'डेली हेरल्ड' ने गाँधी जी और लॉर्ड इर्विन की भेंट के सम्बन्ध में जो ख़बर प्रकाशित की थी वह भी सच निकली। गाँधी जी २१ ता० को लॉर्ड इर्विन से मिले थे और उन्होंने कहा कि मैं आपके आग्रह से लन्दन आया, पर अब तक की कॉन्फ़्रेन्स की कार्रवाई से यहाँ मुझे कुछ आशा नहीं जान पड़ती है और इसलिए मैं लौट जाना चाहता हूँ। लॉर्ड इर्विन ने उनसे कहा कि वे चुनाव होने तक सब्र करें और उसका नतीजा देख कर कोई बात तय करें।

यद्यपि प्रधान मन्त्री मि० मैकडॉनल्ड और भारत-मन्त्री ने 'डेली हेरल्ड' पर झूठी अफ़वाह फैलाने का दोष लगाया था, पर कञ्ज़रवेटिवों के प्रमुख पत्र 'मॉरनिङ्ग पोस्ट' में भी उसी ढङ्ग की बातें छपी हैं। उसके मतानुसार प्रतिनिधि १३ ता० तक भारत वापस जा सकेंगे।

'लिबर्टी' को मालूम हुआ है कि बङ्गाल चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स के एक ज़िम्मेदार और प्रमुख मेम्बर ने इङ्गलैण्ड से कलकत्ते को तार भेजा है कि गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स का भङ्ग होना बिल्कुल निश्चित है।

मैजिस्ट्रेट लोग तैयार रहें

'लिबर्टी' का कहना है कि इस बात की पुष्टि हमें मिली हुई इस ख़बर से होती है कि बङ्गाल सरकार ने प्रान्त भर के मैजिस्ट्रेटों को पहिले ही लिख दिया है कि तैयार रहो।

लन्दन में भारत के ऋषियों का सन्देश

हिन्दू सिद्धान्त ईसा से ४,००० वर्ष पहिले के हैं

लन्दन, २६ अक्टूबर

मालवीय जी ने कल अङ्गरेज़ पुरुषों और स्त्रियों की सभा में 'भारतवर्ष के ऋषियों का सन्देश' सुनाया, आपने हिन्दू दर्शन-शास्त्र अनुसार आत्मा के आवागमन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आत्मा अमर है, उसका कभी नाश नहीं होता। आपने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारतवर्ष ने ईसा के जन्म से ४,००० वर्ष पहिले ही इस तथ्य को प्रकट किया था। आपने कहा कि ईश्वर का केवल अस्तित्व ही नहीं है, वरन् वह संसार के प्रत्येक जीव में विद्यमान है। ईश्वर हम में से प्रत्येक जीव में विद्यमान है। ईश्वर हममें से प्रत्येक में मौजूद है, इसलिए जाति, रङ्ग या धर्म का भेद करना केवल अज्ञानता है। हम सब को यह समझ लेना चाहिए कि हमें एक ही पिता की सन्तान की भाँति एक साथ काम करना है, चाहे हमारा विश्वास ईसा, बुद्ध, राम, ब्रह्म या अल्ला किसी में हो। इसी प्रकार बहुत देर तक मालवीय जी ने हिन्दू-धर्म का सन्देश सुनाया और ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति कह कर अपना उपदेश समाप्त किया।

* * *

ढाका के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट पर गोली

ढाका, २८ अक्टूबर

आज दोपहर के पश्चात् ढाका के कलक्टर पर गोली चलाई गई, जो उनके मुँह पर लगी। कलक्टर अस्पताल में भेजे गए। आक्रमणकारी भाग गए।

ढाका के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० एल० जी० डुरनो आज शाम को मोटर लञ्च द्वारा गोआलन्दो के लिए रवाना हो गए। उनके साथ उनकी पत्नी, सिविल सर्जन कर्नल ओब्रान, डॉ० एस० सी० घोष सर्जन, मिलफ़ोर्ड अस्पताल के सुप० हिल डिप्टी और नर्स मिस शार्प थे। रवानगी के वक्त उनकी दशा पहले से अच्छी जान पड़ती थी। इस गोली-काण्ड के सम्बन्ध में शहर में कितने ही घरों की तलाशियाँ ली गईं, पर कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई। मि० डुरनो पर आक्रमण के सम्बन्ध में विशेष जाँच करने पर पता लगा है कि उन पर दो बङ्गाली नवयुवकों ने, जब कि वे अपनी मोटर में बैठे थे, कई गोलियाँ चलाईं। मोटर पर छः गोलियों के निशान हैं। पुलीस ने अब तक दो गोलियों को निकाला है और अन्दाज़ा है कि बाक़ी चार गोलियाँ अभी मोटर के भीतर हैं।

यूरोपियन एसोसिएशन के प्रधान पर गोली

बङ्गाल में क्रान्तिकारी दल का उपद्रव

कलकत्ता में गोली चली::सरकारी दमन प्रारम्भ हो गया

कलकत्ता, २९ अक्टूबर

यूरोपियन एसोसिएशन के प्रेज़िडेण्ट मि० विलियर्स पर आज सुबह उनके ऑफ़िस में गोली चलाई गई, जिससे उनकी पीठ में साधारण घाव लगा है। जब मि० विलियर्स अपने क्लाइव स्ट्रीट के ऑफ़िस में बैठे हुए 'रॉयलिस्ट दल'—जिसकी स्थापना क्रान्तिकारियों का मुक़ाबला करने के लिए कलकत्ता में हाल ही में की गई है—के तीन सदस्यों से बातें कर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक नवयुवक एकाएक उनका दरवाज़ा खोल कर भीतर घुस आया। उसने घुसते ही धड़ाधड़ तीन गोलियाँ चलाईं। गोलियाँ किसी मर्म-स्थान में न लगीं, केवल पीठ में साधारण चोट आई। रॉयलिस्ट सदस्यों ने फ़ौरन ही आक्रमणकारी को गिरफ़्तार कर लिया। कहा जाता है कि वह विमलदास गुप्त है जिसने मिदनापुर के कलक्टर मि० पैडी को मारा था। पर पुलीस अभी तक उसकी शनाख़्त नहीं कर सकी। उसके जेब में एक काग़ज़ पाया गया है जिसमें यूरोपियन एसोसिएशन से बदला लेने की क़सम ली गई है। उसके पास से सफ़ेद पाउडर की दो पुड़ियाँ भी मिली हैं, जिसे सङ्खिया ख़याल किया जाता है। अनुमान किया जाता है कि आक्रमणकारी का विचार गोली चलाने के बाद आत्म-हत्या कर लेने का था, पर वह इसमें सफल न हो सका। उसके जेब में एक रिवॉल्वर और एक पिस्तौल भी पाई गई। यद्यपि वह मुसलमानों के से कपड़े पहिने था, पर इस बात का प्रमाण दृढ़ होता जाता है कि वह विमलदास गुप्त है। मि० विलियर्स की पीठ से गोली निकाल ली गई है और उससे प्रकट होता है कि पीछे की तरफ़ मुड़ जाने से ही उनके प्राण बच गए।

पबना में कल राजशाही कॉलेज के थर्ड इयर का विद्यार्थी सुधेन्दु सरकार बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट ऐक्ट में गिरफ़्तार कर लिया गया। उसके पिता श्री० सुरेश सरकार मुख़्तार के घर की तलाशी भी ली गई।

बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट ऐक्ट के अनुसार आज दिन निकलने से पहले ही छत्रपति रॉय ननी गोपाल बागची, दान्तु चटर्जी और तारा प्रसन्न सर्वाधिकारी के घरों की तलाशी ली गई और उनको गिरफ़्तार कर लिया गया।

आज बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट ऐक्ट (१९३०) का संशोधित ऑर्डिनेन्स जारी कर दिया गया।

भारत में अङ्गरेज़ों की रक्षा का प्रयत्न

कलकत्ते में 'रॉयलिस्ट' दल की स्थापना

कलकत्ता, २९ अक्टूबर

अङ्गरेज़ों के हितों और व्यवसाय की रक्षा और हत्याकारी आक्रमणों का मुक़ाबला करने के लिए 'रॉयलिस्ट' नामक एक दल की स्थापना हुई है। इस दल की स्थापना यों तो कुछ सप्ताह पहले ही चुपके से हुई थी, किन्तु ढाका के मैजिस्ट्रेट मि० डुरनो और कलकत्ता यूरोपियन एसोसिएशन के प्रेज़ीडेण्ट मि० विलियर्स पर आक्रमण होने के बाद से यह दल मैदान में आ गया है। आज कलकत्ते में रॉयलिस्ट दल की ओर से लाल पर्चे बाँटे गए, जिसमें बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—"कॉङ्ग्रेस की आतङ्ककारिता को ज़रूर कुचल देना चाहिए।" पर्चे में अब तक हत्या किए गए और ज़ख़्मी अफ़सरों की सूची देते हुए लिखा था—"कल डुरनो", "आज विलियर्स" अन्त में लिखा था—"हम लोग काम करना चाहते हैं।"

इस दल की स्थापना क्यों की गई, इस सम्बन्ध में दल की कार्यकारिणी कमिटी के मेम्बरों ने कहा कि यह देखते हुए कि सरकार इस बात की बहुत कम परवाह करती है कि अङ्गरेज़ी व्यवसाय और अङ्गरेज़ी हितों का क्या हो रहा है इसलिए इस उदासीनता को दूर करने और अङ्गरेज़ जाति को एक करने तथा मज़बूती के साथ मुक़ाबला करने के लिए दल की स्थापना की गई है। इसी उद्देश्य के लिए अङ्गरेज़ जाति के नवयुवकों का यह दल सङ्गठित किया गया है। यह दल सरकार पर इस बात का दबाव डालेगा कि वह अमन-आमान क़ायम रक्खे, साथ ही ध्वंसात्मक आन्दोलनों और हिंसात्मक संस्थाओं का यह विरोध करेगा। इसी दल की नीति और स्कीम पर विचार करते समय मि० विलियर्स पर आक्रमण किया गया था।

❀

ढाका में ५८ नवयुवक गिरफ़्तार

कलकत्ते में तलाशियों की धूम :: मि० डुरनो की एक आँख जाती रही

कलकत्ता, ३० अक्टूबर

लेफ़्टिनेण्ट कर्नल ए० एच० प्रोक्टर ने ढाका के कलक्टर मि० एल० जी० डुरनो का ऑपरेशन किया, जिसमें तीन घण्टे लगे। ऑपरेशन करने से पहले मि० डुरनो के शरीर में पिचकारी द्वारा ख़ून भरा गया। उनकी दाहिनी आँख बिलकुल निकाल ली गई है। दूसरी गोली जबड़े से निकाली है। उनकी दशा आशाजनक है। दूसरी आँख को किसी तरह का नुक़सान पहुँचने का डर नहीं है।

आज सुबह हाल के राजनीतिक उपद्रवों के सम्बन्ध में कलकत्ते के बहुत से मकानों की तलाशियाँ ली गईं और बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार चार व्यक्ति, जिनमें दो कॉलेज के विद्यार्थी हैं, गिरफ़्तार कर लिए गए। इसी प्रकार बरहमपुर और कुष्टिया में भी गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। ढाका में अब तक कुल मिला कर ५८ व्यक्ति गिरफ़्तार किए जा चुके हैं।

यूरोपियन बिना हथियार नहीं निकलते

ढाका, २९ अक्टूबर

ढाका के यूरोपियनों में बड़ी सनसनी फैली है। पिछले १२ महीनों में २० हत्याकारी आक्रमण हुए हैं और सरकारी तथा प्राइवेट रुपए लूटने का प्रयत्न किए गए हैं। ढाका शहर के सभी ख़ज़ानों पर हथियार बन्द पहरे बैठा दिए गए हैं। कहा जाता है यहाँ के यूरोपियन बहुत दिनों से ख़तरे में हैं और कोई यूरोपियन (सरकारी या ग़ैर-सरकारी) बिना हथियार लिए नहीं निकलते।

दुबे जी की चिट्ठी

(९वें पृष्ठ का शेषांश)

"नहीं कमज़ोरी की बात नहीं, बदनामी की बात है।"

"बदनामी! कैसी बदनामी? बदनामी-वदनामी कुछ नहीं, यह सब बहता हुआ पानी है। आज कुछ है तो कल कुछ।"

अपने राम बोल उठे—बेशक! बहता हुआ पानी और वह भी 'फ़ादर टेम्स' का, जिसमें बड़े-बड़े जहाज़ बह जाते हैं।

"तो क्या आपको आशा है कि आप पार्लामेण्ट के लिए चुन लिए जायँगे?"

"निश्चय! न चुना जाना क्या मानी रखता है? देखना लोग मुझे कैसी ख़ुशी से चुनते हैं। मैंने ब्रिटिश जाति की ठोस सेवा की है बेटा! भारत का विरोध भी सेवा ही है। अपनी नेकनामी का बलिदान देकर यह सेवा की है। इसे इङ्गलैण्ड के आदमी भूल थोड़ा ही जाएँगे।"

सम्पादक जी! इतना सुनना था कि अपने राम के तो होश गुम हो गए। सोचा ये सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं, इनकी माया समझना बड़ा कठिन है। चलो अपने घर।

यह सोच कर वहाँ से रस्सियाँ तुड़ा कर भागा और सवेरा होते-होते अपने झोपड़े में आ गया।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

❀ ❀ ❀

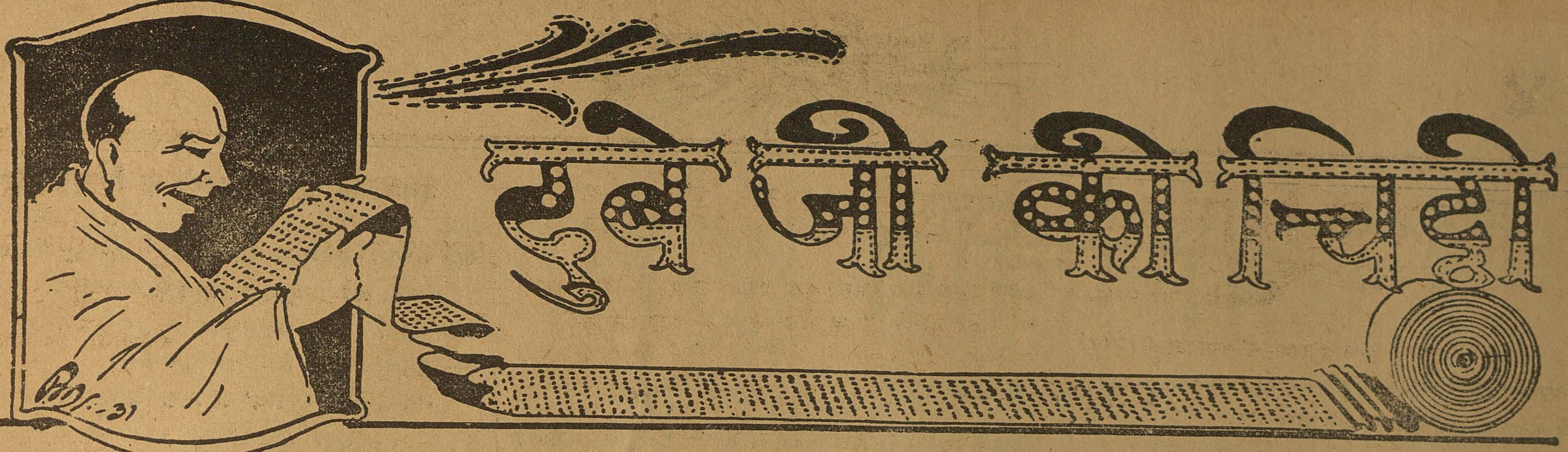

अजी सम्पादक जी महाराज

जय राम जो की।

पिछली चिट्ठी में अपने राम ने लिखा था कि स्वप्न का शेष वृत्तान्त अगली चिट्ठी में लिखूँगा। सो वही लिखता हूँ, ज़रा ग़ौर से पढ़ियेगा।

जब गोलमेज़ के मुस्लिम प्रतिनिधियों में चित-पट की नौबत आ पहुँची तो अपने राम वहाँ से नौ-दो ग्यारह हुए।

घूमते-घामते एक स्थान पर पहुँचे। एक मकान के कमरे में रोशनी देख कर चौंक पड़े। रात का एक बज चुका था। म्युज़िक हॉल, केबेरेट, थियेटर और कुछ प्राइवेट "डान्स" के अतिरिक्त और सब मकानों में अँधेरा था। सब ख़र्राटे की नींद सो रहे थे। परन्तु इस मकान में उजाले का क्या कारण था। एक खिड़की से झाँक कर देखा तो मि० रामजी मेकडॉनेल बैठे दिखाई पड़े। उनके सामने मेज़ पर कुछ काग़ज़ात फैले हुए थे। मेज़ के दूसरी ओर दो अन्य अङ्गरेज़ बैठे थे। मि० रामजी बोले—आप लोगों ने खूब जाँच लिया है। इस लिस्ट में जिन वोटरों के नाम हैं, वे सब मुझे वोट देने के लिए तैयार हैं?

एक अङ्गरेज़ बोला—सब तैयार हैं। स्वयम् तो वे तैयार हई हैं, दूसरों को भी तैयार करेंगे। आपकी परसों वाली स्पीच से लोग बड़े प्रभावित हुए हैं। आपने वादे भी तो बड़े-बड़े कर दिए हैं।

मि० रामजी मुस्करा कर बोले—जो शब्द मैंने कहे हैं उनके न जाने कितने अर्थ निकल सकते हैं। जब जैसा अवसर आएगा, उस समय वैसे अर्थ लगा लिये जायँगे। फ़िलहाल मुझे सब से बड़ी चिन्ता भारत की है। यदि मैं प्रधान मन्त्री न हुआ तो भारत की आज़ादी ख़तरे में पड़ जायगी।

एक दूसरे अङ्गरेज़ ने पूछा—आप सचमुच भारत को आज़ाद करना चाहते हैं?

मि० रामजी मुँह बना कर बोले—करना ही पड़ेगा।

"यदि न किया जाय तो क्या होगा?"—एक अङ्गरेज़ ने पूछा।

"सत्याग्रह होगा, लगानबन्दी होगी, राजविद्रोह बढ़ेगा!"

"परन्तु हिन्दू-मुस्लिम समस्या तो अभी सुलझी नहीं।"

"हाँ, मैं यह कहना भूल गया था कि भारत की आज़ादी हिन्दू-मुस्लिम समस्या सुलझने पर निर्भर है। पहले हिन्दू-मुस्लिम समझौता हो जाना बड़ा आवश्यक है।"

"सो तो होता दिखाई नहीं देता।"

"यही तो मुझे बड़ा भारी चिन्ता है। यदि हिन्दू-मुस्लिम समझौता न हुआ तो कुछ न हो सकेगा। और हिन्दू-मुस्लिम समझौता कराना मेरे सिवा और कोई जानता नहीं। इसालिए तो कहता हूँ कि मेरा प्रधान मन्त्री होना बड़ा ही आवश्यक है। दुआ माँगो, ईसा मसीह से दुआ माँगो कि मैं प्रधान मन्त्री हो जाऊँ, अन्यथा ब्रिटिश जाति की ख़ैर नहीं।

इस अवसर पर अपने राम बोल उठे—सरकार, यदि किसी मरे-खपे का वोट डलवाना हो तो अपने राम बिल्कुल तैयार हैं। भारत को स्वराज्य मिले या न मिले परन्तु प्रधान मन्त्री आप ही को बनना चाहिए।

एक अङ्गरेज़ ने पूछा—"ब्रिटिश जाति की ख़ैर क्यों नहीं?"

"बस यही मत पूछो। जो मैं कहता हूँ उसे आँख-कान बन्द करके मान लो।"

अपने राम ने कहा—'ईजानिब बिना आँख-कान बन्द किए मानने को तैयार हैं।

मि० रामजी कहते गए—यह समझ लो कि इस समय "साँप मर जाय और लाठी न टूटे' वाली नीति में ही हमारी ख़ैर है। हमारा ज़ोर हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर रहना चाहिए। यह कहते रहो कि हम हिन्दुस्तान को आज़ादी देने को तैयार हैं, परन्तु पहिले हिन्दू-मुस्लिम समस्या सुलझ जानी चाहिए। बस इस महामन्त्र में ही हमारा कल्याण है।

"परन्तु मान लीजिए किसी प्रकार हिन्दू-मुस्लिम समस्या सुलझ गई?"

मि० राम तब मुस्करा कर बोले—देखते चलो। हमें मुस्लिम प्रतिनिधियों की राजभक्ति पर पूरा विश्वास है। वे इतने बुद्धिमान हैं कि बिना हमारा सङ्केत पाये कोई समझौता नहीं करेंगे। मुझे यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कुछ आदमी मुस्लिम प्रतिनिधियों के जिगरी दोस्त तथा मन्त्री बने हुए हैं!

अपने राम ने कहा—बेशक! बेशक! उनकी मन्त्रणा का दृश्य अपने राम अभी-अभी देखे चले आ रहे हैं। यदि ऐसी ही मन्त्रणा तथा दोस्ती रही तो मुसलमानों का बेड़ा निश्चय पार लग जायगा।

दूसरा अङ्गरेज़ बोला—परन्तु इनको तो मि० गाँधी हिन्दुस्तान के मुसलमानों का प्रतिनिधि ही नहीं मानते।

"मि० गाँधी न मानें, हम तो मानते हैं। वे हिन्दुस्तान के मुसलमानों के प्रतिनिधि नहीं, परन्तु हमारी दृष्टि में जैसे प्रतिनिधि उन्हें होना चाहिए वैसे हैं।"

"और सब सुशिक्षित हैं!"—पहले अङ्गरेज़ ने हँस कर कहा।

"यह हमारा सौभाग्य है कि लोग उन्हें सुशिक्षित समझते हैं।" मि० रामजी ने दाहिनी आँख दाब कर कहा।

"आप निश्चय प्रधान मन्त्री बनाने योग्य हैं।"

"मानते हो?"—मि० रामजी ने मुस्करा कर पूछा।

"बेशक, बिना माने छुटकारा नहीं।"

"तब तो तुम्हें जानो-दिल से मेरे लिए कोशिश करना चाहिए।"

"जानो-दिल से कोशिश करेंगे और आपको प्रधान मन्त्री बना कर ही छोड़ेंगे। अच्छा तो अब विदा दीजिए।"

"बहुत अच्छा! गुड नाइट"

वे दोनों बाहर आकर मोटर पर बैठे और चल दिए। मोटर ऐसे अँधेरे में खड़ी थी कि अपने राम ने पहले देखी ही नहीं।

उन दोनों के चले जाने के पश्चात् मि० रामजी ने काग़ज़ात समेट कर मेज़ की दराज में रक्खा। इसी समय एक युवती आकर बोली—"हलो पापा! अब तक जाग रहे हो?"

"हाँ बेटी, दो बेवक़ूफ़ों को राह पर लाना था।"

"आ गए राह पर?"

"हाँ, इसके लिए मैं उनकी अज्ञानता को धन्यवाद देता हूँ।"

"परन्तु पापा! एक बात तो बताओ। तुम सब से वादे कर रहे हो। इतने वादे पूरे कैसे करोगे?"

"जिन वादों के पक्ष में बहुमत होगा अथवा जिनके पक्ष में मैं बहुमत को बना सकूँगा—केवल उन्हीं को।"

"और शेष?"

"उनका किसी को ध्यान भी न आएगा।"

"यदि आया तो।"

"ओह! प्रधान मन्त्री कोई वादा पूरा करने के लिए बाध्य नहीं होता।"

"अच्छा पापा! गुड नाइट! अब आराम करो।"

"हाँ, अब सोऊँगा।"

युवती चली गई।

अपने राम ने कहा—सरकार, हमारे जी में भी बहुत सी बातें पूछने की इच्छा थी। परन्तु अब न पूछेंगे। क्योंकि हमें भी इसी प्रकार उल्लू बना कर चलता करोगे।

"आल राइट! गुडनाइट एण्ड ए हेपी ड्रीम ऑफ़ प्रीमियरशिप!"

इसके पश्चात् सोचा कि अब कहाँ चलें। सोचते-सोचते ध्यान आया कि अपने पुराने कृपा-पात्र मिस्टर चर्चिल को तो देखते चलें कि किस रङ्ग में हैं। जब से उनकी बोलती बन्द हुई, तब से अपने राम का तो मज़ा ही किरकिरा हो गया। परन्तु लाख बोलती बन्द हो, लाख अज्ञातवास में बैठे हों, परन्तु पार्लामेण्ट में पहुँचने की चेष्टा अवश्य करेंगे। इससे चूक नहीं सकते। और कुछ न सही, टर्र-टर्र करने का मौक़ा तो मिलेगा ही। यह सोच कर मि० चर्चिल के भवन में पहुँचे। भीतर जाना ख़तरनाक समझ कर बाहर ही से झाँका। मि० चर्चिल टहल रहे थे और उनके सुपुत्र बैठे हुए थे। टहलते हुए कह रहे थे—पार्लामेण्ट में तो मेरा पहुँचना आवश्यक है। इस बार निश्चय अनुदार दल का बहुमत होगा।

"परन्तु पिता जी, यदि मेरा इतना विरोध होता तो मैं तो कभी पार्लामेण्ट में जाने का नाम भी न लेता।"

"राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे विरोध का कोई मूल्य नहीं होता बेटा, अभी तुम इन बातों को नहीं समझ सकते। आज जो विरोध कर रहे हैं, सम्भव है कल वही हमारे अनुकूल हो जायँ।"

"परन्तु इतना मैं अवश्य कहूँगा कि भारत के सम्बन्ध में आपकी नीति ठीक नहीं रही।"

"बहुत ठीक रही। तुम यही तो ग़लती करते हो कि बात की तह तक नहीं पहुँचते। यदि सब लोग भारत को स्वाधीनता का समर्थन करने लगें तो काम ही बिगड़ जाय। कुछ विरोधी भी रहना चाहिए।"

"विरोध करने का कार्य आप स्वयम् न लेकर किसी दूसरे को सौंप देते तो अच्छा था।"

"क्यों? क्या मैं किसी से कमज़ोर हूँ?"

(शेष मैटर चौथे पृष्ठ में देखिए)

बातचीत

एजेण्टों से—

आवश्यक सूचना

हमारे जो एजेण्ट 'चाँद' के विशेषाङ्क 'राजपूताना-अङ्क' की प्रतियाँ मँगाना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि वह शीघ्र ही कॉपियों का मूल्य कमीशन काट कर मनीऑर्डर से एक सप्ताह के अन्दर कार्यालय को भेज दें। रुपया न मिलने पर कॉपियाँ भेजना सम्भव नहीं है। जिन एजेण्टों ने अभी तक कॉपियों के लिए ऑर्डर नहीं दिया है, वह भी शीघ्र ही ऑर्डर भेज दें ताकि बाद में प्रतियाँ समाप्त होने पर उन्हें व्यर्थ में लिखा-पढ़ी करने का अवसर न मिले।

—प्रबन्धक

निम्न-लिखित एजेण्टों का रुपया हमें साप्ताहिक 'भविष्य' की बिक्री के हिसाब में प्राप्त हुआ है :—

संख्या	नाम एजेण्ट	प्राप्त रक़म	विवरण
१	मेसर्स रामचरन लाल एण्ड सन्स, बेतूल, ...	=)	जुबली-अङ्क तक के मूल्य में
२	मेसर्स ईश्वरदत्त लीलाधर जोशी, हापुड़ ...	१०)	जुबली अङ्क तक के मूल्य में
३	सरस्वती पुस्तकालय, भागलपुर	४॥=)	सितम्बर मास के हिसाब में
४	श्री० आर० बी० गुप्ता, खण्डवा (सी० पी०) ...	६।॥)	जुबली-अङ्क तक के मूल्य में
५	श्री० दुलीचन्द जी, रीवाँ	३।=)	सितम्बर की बिक्री का रुपया
६	श्री० हरिप्रसाद जी शर्मा, एटा	६।=)	जुबली-अङ्क तक के हिसाब में
७	श्री० मिट्ठूमल जी, चन्दौसी	१०)	जुबली-अङ्क तक के हिसाब में
८	श्री० रमाशङ्कर जी, फ़तेहपुर	५॥=)	अक्टूबर की ३० कॉपी का मूल्य
९	श्री० गौरीशङ्कर जी मित्तल, भरतपुर ...	१८॥)	जुबली-अङ्क तक का मूल्य
१०	श्री० मङ्गतराम जी वरतरिया, देहरादून ...	१९॥=)	जुबली-अङ्क तक के हिसाब में
११	मेसर्स न्यूज़ पेपर एजेन्सी, जोधपुर	२५)	
१२	श्री० पुरुषोत्तमदास जी, रङ्गून	१०)	जुबली-अङ्क तक के हिसाब में
१३	श्री० रामवल्लभप्रसाद जी, समस्तीपूर	४॥=)	सितम्बर के हिसाब में
१४	श्री० रघुनन्दनप्रसाद जी, उन्नाव	१८)	जुबली-अङ्क तक के हिसाब में
१५	श्री० एस० आर० सिनहा, बाराबङ्की	३।=)	सितम्बर का मूल्य
१६	श्री० सुखराम जी वर्मा, खैरागढ़	३≡)	जुबली-अङ्क तक के हिसाब में
१७	राष्ट्रीय महाबीर पुस्तकालय, दमोह	१९॥≡)	जुबली-अङ्क तक के मूल्य में
१८	श्री० रामदास साहू, ग़ाज़ीपूर	१३।≡)	साप्ताहिक तथा दैनिक के सितम्बर के हिसाब में
१९	श्री० सन्तराम जी खन्ना, जालन्धर	४॥=)	जुबली-अङ्क तक के मूल्य में
२०	श्री० चिरञ्जीलाल जी, रायपुर	२५)	जुबली-अङ्क तक के हिसाब में
२१	मेसर्स काशीनाथ सरजूप्रसाद, बस्ती	६।=)	सितम्बर के हिसाब में
२२	बाबू कर्णसिंह जी वर्मा, बिजनौर	१३॥)	जुबली-अङ्क तक के मूल्य में
२३	श्री० विशम्भरदयाल अग्रवाल, कासगञ्ज	११।)	जुबली-अङ्क तक के मूल्य में
२४	श्री० चन्द्रभूषण जी, सीवान	१०)	सितम्बर के हिसाब में
२५	श्री० मोहनलाल हुकुमचन्द, हरिद्वार	५—)	सितम्बर का रुपया
२६	श्री० जोतीप्रसाद जी, सहारनपूर	४॥)	सितम्बर के हिसाब में
२७	लाला नाथूराम जी, कनखल	८=)	'भविष्य' तथा 'चाँद' के सितम्बर के हिसाब में
२८	श्री० ब्रजमोहन जी, नवादा	८॥=)	सितम्बर के हिसाब में
२९	श्री० रामनारायण जी, इटावा	२०)	जुबली-अङ्क तक के 'भविष्य' के तथा सितम्बर के 'चाँद' के हिसाब में
३०	श्री० कन्हैयालाल जी, खुर्जा	१०)	
३१	श्री० देवराज जी, बरनाला मण्डी	५)	'भविष्य' के जुबली-अङ्क तक के मूल्य में।
३२	श्री० गणेशप्रसाद जी, बनारस	४६।)	'भविष्य' का सितम्बर का मूल्य
३३	श्री० रामानन्दसिंह, रङ्गून	१०)	सितम्बर तक के मूल्य में

ग्राहकों से—

निम्नाङ्कित ग्राहकों के पते इस सप्ताह से बदल दिए गए हैं :—

२६३७, ३०६६, २८९७, २५८३, ६०३, ३१३२, २६१० और २६०२।

निम्नाङ्कित ग्राहकों की सेवा में नीचे लिखे अङ्क दुबारा भेजे गए हैं :—

४९वाँ—१३८५

५२ वाँ—५०७, २५५६, २३३५, २६७० और ३०३६

५३।वाँ—५०७, ८६९, २५५६ और ३२०८

गत सप्ताह में 'भविष्य' के निम्न-लिखित पुराने ग्राहकों का चन्दा प्राप्त हुआ। जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त हुआ है उनका ग्राहक-नम्बर तथा चन्दे की रक़म नीचे दी जा रही है :—

ग्राहक नं०			प्राप्त रकम
२५६२	...	...	१२)
२५५०	...	...	६॥)
२५३७	...	...	६॥)
७६७	...	...	८॥)
२४२२	...	...	३॥)

हमारे पास बहुत से ग्राहकों की शिकायतें 'जुबली-अङ्क' न मिलने के विषय में आई हैं। परन्तु हमें अत्यन्त खेद के साथ लिखना पड़ता है कि जुबली-अङ्क अब सर्वथा अप्राप्य है, अतएव दुबारा भेजने में असमर्थ हैं। ग्राहक-गण कृपया हमारी असमर्थता के लिए क्षमा करते हुए अब जुबली-अङ्क के लिए सन्तोष करें।

गत सप्ताह 'भविष्य' के निम्न-लिखित नवीन ग्राहक हुए हैं। जिन-जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त हुआ है, उनका नाम तथा ग्राहक-नम्बर के साथ चन्दे की रक़म नीचे दी जा रही है। ग्राहकों से प्रार्थना है कि वे अपना ग्राहक-नम्बर स्मरण रक्खें तथा पत्र-व्यवहार के समय इसे लिखना न भूलें, ताकि उचित कार्यवाही करने में किसी भाँति का बिलम्ब न हो :—

ग्रा० नं०	नाम ग्राहक	रक़म
३२२६	बा० हरीराम जी सरावगी, कलकत्ता ...	३॥)
३२२७	कु० विवेकानन्दसिंह जी रईस, आज़मगढ़	३॥)
३२२८	मिस्टर तेजप्रतापसिंह, इलाहाबाद ...	३॥)
३२२९	श्री० सनचियालाल वैद्य, बीकानेर ...	१२)
३२३०	श्री० बालमुकुन्द सेठी, शाहपुर ...	१२)
३२३१	श्री० रामगोपाल चेयरमैन, जालौन ...	१२)
३२३२	सेक्रेटरी श्री० सरस्वती बालसंस्था, मण्डले (बर्मा)	६॥)
३२३३	श्री० बनबिहारी लाल दुबे, बीजावर स्टेट	३॥)
३२३४	रे० जे० खलखो, राँची	६॥)
३२३५	पं० श्रीनारायण मिश्र, आरा	६॥)
३२३६	सेक्रेटरी श्री० महाबीर जैन लायब्रेरी, भागलपुर	१२)
३२३७	श्री० विश्वनाथ वैद्य सीरोही	१२)
३२३८	डॉ० बी० विशाल, वाजपेई, सिलहट ...	६)
३२३९	श्री० जेठानन्द संघर (सिन्ध) ...	३॥)

निम्न-लिखित ग्राहकों की सेवा में साप्ताहिक 'भविष्य' आगामी सप्ताह में वी० पी० द्वारा भेजा जायगा। आशा है, ग्राहकगण स्वीकार कर कृतार्थ करेंगे। चन्दा समाप्त होने की सूचना पहले दी जा चुकी है :—

११०६, ११३९, ११००, १५२२, २२९०, २२९१, २३०९, २३३१, २३३९, ११७४, १२०६, २८७८, २९११, २९९२, २९९४, २९९५, २०३९ २७२९, २७३२, २७३५, २७३७, २७४७, २७४८, २७५१, २७५२, १७५९, ३०४३ ए, ३०५१, ३०५६ ३०९४, १६५०।

❀

'भविष्य'

(साप्ताहिक संस्करण)

की

सजिल्द फ़ाइलें

'भविष्य' की पूरे १ साल की ४ सजिल्द फ़ाइलें बन कर तैयार हैं। फ़ी फ़ाइल का मूल्य ५) रु० और चारों फ़ाइलें साथ लेने वालों से १५) रु० मात्र। डाक-व्यय अलग। ऑर्डर के साथ ५) रु० पेशगी भेजना ज़रूरी है।

व्यवस्थापक 'भविष्य'

चन्द्रलोक—इलाहाबाद

"न तो मैं साधु हूँ न शैतान"

चरख़ा मुक्ति-चिह्न है :: कमर को लँगोटी सिद्धान्तों का परिच्छद है

[गत २८ सितम्बर को लन्दन के 'डेली-हेरल्ड' नामक पत्र में महात्मा गाँधी ने एक अतीव महत्वपूर्ण लेख लिखा था, जो गत १६ अक्टूबर के 'सर्चलाइट' में उद्धृत किया गया है। उसी का अनुवाद श्री० दिवाकरप्रसाद जी विद्यार्थी ने हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा है। इसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं।

—स० 'भविष्य']

मैं यहाँ किस लिए आया हूँ? किस वस्तु में मेरा विश्वास है? मैं कैसे भारत का निर्माण चाहता हूँ? अच्छा, मैं और सभी बातों के पहले आपके सामने 'सत्य' की माँग पेश करने आया हूँ। सत्य जिस रूप में मैं उसे देखता हूँ। क्योंकि मेरा विश्वास है कि सत्य ही जीवन की कुञ्जी है। इसी की नींव पर अन्यान्य वस्तुएँ टिकी हैं। जीवन की अथ-इति में सर्वत्र सत्य व्याप्त है तथा सभी बातों में सत्य को सर्वथा आगे रखना पूर्णतया सम्भव है। अपने लिए मैं यही करने की सदा चेष्टा करता हूँ। मेरी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं में झूठ फ़रेब को कोई स्थान नहीं है। किसी भी ध्येय की प्राप्ति के लिए मैं छल की शरण नहीं जा सकता।

मेरे जो बहुत से उलटे-सीधे वर्णन निकले हैं, उन्हें मैंने ध्यान से पढ़ा है। कुछ लोग मुझे साधु कहते हैं। दूसरे शैतान समझते हैं। परन्तु मैं न तो साधु हूँ न शैतान। मेरी एक-मात्र आकांक्षा ईमानदार तथा ईश्वर-भीरु बनने की है और मेरा विश्वास है कि मैं कुछ अंशों में सफल हुआ हूँ।

अपने सम्बन्ध की जो बहुत सी भिन्न-भिन्न बातें मैं पढ़ता हूँ, वे मुझे क्षुब्ध नहीं करतीं। करें ही क्यों? मेरी अपनी अलग 'फ़िलॉसफ़ी' है और अपना ख़ास लक्ष्य। प्रत्येक दिन कुछ समय तक मैं चरख़ा कातता हूँ। कातता रहता हूँ और सोचा करता हूँ। बहुत सी बातें सोचता हूँ। पर उन विचारों से अप्रिय तीखापन दूर रखने की सर्वथा चेष्टा करता हूँ।

मेरे इस चरख़े का अध्ययन कीजिए। यह आपको ऐसी बहुत सी बातें सिखलाएगा, जिन्हें स्वयम् मैं सिखलाने में असमर्थ हूँ—अध्यवसाय, धन्धा और सादगी। भारत के करोड़ों भूखों के लिए यह चरख़ा मुक्ति-चिह्न है।

कमर की लँगोटी

मेरी पोशाक की, जिसे अख़बारों में 'कमर की लँगोटी' कहा गया है, समालोचना हुई है। इसकी खिल्ली उड़ाई गई है, तमाशा बनाया गया है। मैं इसे क्यों पहिनता हूँ, लोग मुझसे पूछ रहे हैं। कुछ लोग इस पहनावे से क्रुद्ध भी गए हैं।

जब अङ्गरेज़ भारत जाते हैं तो क्या वे यूरोपीय वेश-भूषा छोड़ कर, जल वायु के लिहाज़ से अधिक उपयुक्त पूर्वीय पोशाक धारण कर लेते हैं? नहीं। और यही उन लोगों को मेरा उत्तर है जो पूछते हैं—मैं इङ्गलैण्ड में क्यों वही भारतीय पोशाक पहनता हूँ, जिसका मैं चिर-अभ्यस्त हूँ।

अङ्गरेज़ नागरिक की हैसियत से यदि मैं ज़िन्दगी बसर करने यहाँ आया होता तो यहाँ का रहन-सहन अपनाता और अङ्गरेज़ों की पोशाक पहनता। पर मैं तो यहाँ एक महान ध्येय-विशेष लेकर आया हूँ और यह मेरी 'कमर की लँगोटी' (यदि आप इसे यही कहना पसन्द करते हैं) मेरे सिद्धान्तों का परिच्छद है; भारतीयों की पोशाक है। एक पवित्र विश्वास की रक्षा का भार मुझे सौंपा गया है। मुझे एक ख़ास काम करने को दिया गया है। अतएव अपने ध्येय के, लक्ष्य का चिह्न धारण करना मेरे लिए आवश्यक है। अपने सम्बन्ध की विभिन्न व्याख्याएँ मुझे मनोरञ्जक जान पड़ती हैं, कभी-कभी आमोदप्रद भी। पर मैं अपनी जनता का केवल प्रतिनिधि हूँ। जिस कार्य का भार उसने मुझे सौंपा है, उसे पूरा करने की कोशिश कर रहा हूँ।

हाँ, मैं स्त्रियों के लिए पूर्ण समानता का पक्षपाती हूँ तथा जिस भारत के निर्माण की चेष्टा कर रहा हूँ, उसमें स्त्रियों को पूर्ण समानता अवश्य मिलेगी। मुझे जो इतनी सहसेविकाएँ मिली हैं, उसका कारण जहाँ तक मैं समझता हूँ, मेरा पवित्र ब्रह्मचर्य और स्त्रियों के प्रति मेरी स्वाभाविक सहानुभूति है।

सम्भवतः आपने सुना होगा, मेरे यहाँ स्त्रियों का स्थान नीचा है। पर यह समस्या का केवल बाहरी पहलू है। वास्तव में उनका प्रभाव सर्वदा सबसे ज़्यादा मज़बूत रहा है। सदियों से स्त्रियाँ पुरुषों के साथ-साथ, एक ही क्षेत्र में, काम करती आई हैं। यदि वे अपना हाथ खींच लेतीं तो कितने पुरुष भूखों मर गए होते।

खिलौने

फ़सलों की उपज में हमारी स्त्रियाँ पुरुषों के साथ-साथ मिहनत मज़दूरी करती हैं। स्त्रियों का भी जीवन परिश्रमपूर्ण होता है। केवल अवकाश-प्राप्त अमीरों की श्रेणी में ही स्त्री-पुरुष की स्थिति विभाजक रेखा स्पष्टतः पाई जाती है। ऐश्वर्य-सम्पन्नता ने स्त्रियों के मस्तिष्क से व्यावहारिकता का धर्म भुला कर दूर कर दिया है। इस प्रकार ऐश्वर्यशालिनी स्त्रियों में एक प्रगति ज़ोर पकड़ रही है, महज़ आभूषण पहनने की, निरे खिलौने बन जाने की।

मैं कुल दफ़्तरों, रोज़गारों तथा उद्योग-धन्धों का द्वार स्त्रियों के लिए खुला देखना चाहता हूँ, नहीं तो वास्तविक समानता हो ही नहीं सकती। पर मैं पूरी सचाई के साथ विश्वास करता हूँ, स्त्री अपने लिए 'घर की रानी' का पुराना प्रतिष्ठित पद अक्षुण्ण रक्खेगी।

स्त्रियाँ इस राजपद से कभी हटाई नहीं जा सकतीं। सचमुच ही वह सूना घर होगा, जहाँ के सारे कार्य गृहिणी में केन्द्रीभूत न हों। उदाहरण के लिए मैं उस घर के सचमुच सुखी होने की कल्पना कदापि नहीं कर सकता, जहाँ पत्नी 'टाइपिस्ट' हो और घर में रहने का शायद ही मौक़ा पाती हो। ऐसी परिस्थिति में महा-दरिद्र परिवार के भी उज्ज्वल सितारे—उगते बच्चों की देख-रेख कौन करेगा?

पहले परिवार

ऐसे उदाहरण भी दिए जा सकते हैं, जहाँ कर्तव्य-कुशल गृहिणी अपने बच्चों की रक्षा का भार किसी वेतन-भोगी व्यक्ति पर छोड़ कर बाहर निकलती है, अपनी रोटी आप पैदा कर सकती है और परिणाम-स्वरूप बच्चों के लिए अधिक द्रव्य दे सकती है। पर ऐसी स्त्री-विशेष की बात ही दूसरी है। जीवन के प्रत्येक पहलू में अपवाद होते ही हैं और इन अपवादों की भित्ति पर कोई सार्वभौमिक सत्य या सिद्धान्त नहीं खड़ा कर सकता।

साधारणतः परिवार के लिए रोटी कमाने का भार पिता पर है। यह जान कर कि उसे भरी-पूरी स्वस्थ गृहस्थी है, वह और जी-तोड़ परिश्रम कर सकेगा और सुकुमार शिशुओं के समुचित लालन-पालन का सुख, जिसे वे केवल अपनी माताओं ही से पाने की आशा रखते हैं, हड़प बैठना घोर अन्याय होगा।

अपने बच्चों का उचित पालन-पोषण तथा उनका चरित्र-निर्माण माता के पावन कर्तव्य हैं। मेरी मनोकामना है, स्त्रियाँ पुरुषों के साथ पूरी स्थिति-समानता पाने का अमोल प्रयत्न अवश्य करें। पर यदि माता सन्तान के प्रति अपने सारे फ़र्ज़ अदा नहीं कर सकी तो कोई भी इस घोर क्षति की पूर्ति नहीं कर सकता।

कोई भी जाति, कैसा भी परिवार क्यों न हो, बच्चे का जीवन उसके लिए अग्रतम और सबसे अधिक महत्वपूर्ण समस्या है। इसकी पावनता की रक्षा करनी ही होगी। इसी पर राष्ट्र का मङ्गल, जाति का कल्याण निर्भर करता है। बुरा हो या भला, पारिवारिक संस्कारों का प्रभाव पड़ता ही है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं हो सकता। कोई भी समाज क़ायम नहीं रह सकता, अगर पारिवारिक जीवन के स्वत्वों की रक्षा न की जाय।

कुछ ऐसे भी व्यक्ति हो सकते हैं जो किसी महान ध्येय या उद्देश्य की पूर्ति के लिए, मेरे ही समान पारिवारिक जीवन का मधुर आनन्द छोड़, आत्म-बलिदान और कठोर ब्रह्मचर्य का जीवन अपने लिए अधिक पसन्द करें। पर जनता के लिए—सर्व-साधारण के लिए—पारिवारिक जीवन की सुविधाएँ सुरक्षित रखना आवश्यक हैं।

❀

मि० ब्रेल्सफ़र्ड और महात्मा गाँधी की मनोरञ्जक बातचीत

[इङ्गलैण्ड के विख्यात पत्रकार मि० ब्रेलसफ़र्ड को 'भविष्य' के पाठक भूले न होंगे। गत सत्याग्रह संग्राम के समय आप भारतवर्ष का भ्रमण करने आए थे और कई पक्षपातहीन लेखों द्वारा यहाँ की राजनीतिक परिस्थिति और उसके भविष्य पर प्रकाश डाला था।

गत ५ अक्टूबर को आपने महात्मा गाँधी से मुलाकात करके भारत की राजनीतिक अवस्था के सम्बन्ध में जो आलोचना की थी, उसका विस्तृत विवरण इङ्गलैण्ड के कई अख़बारों में छपा है, उसी का मर्मानुवाद हम 'भविष्य' के पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे देते हैं :—

--स० 'भविष्य']

मि० ब्रेलसफ़र्ड—नमक पर जो कर लगाया गया है, उसके उठ जाने पर सरकार की आमदनी घट जाएगी। इस घाटे की पूर्त्ति के लिए आप कौन सा उपाय काम में लाएँगे?

महात्मा गाँधी—नमक-कर एक मामूली कर है, इसके उठ जाने से विशेष घाटा नहीं होगा। वास्तविक समस्या है ताड़ी और शराब आदि मादक द्रव्यों के कर से होने वाली आमदनी। अगर मादक द्रव्यों का प्रचलन बन्द कर दिया गया तो भारतीय राज-कर में विशेष कमी की सम्भावना है। परन्तु इसकी पूर्त्ति का एक मात्र उपाय है, सामरिक व्यय में कमी करना। यह फ़ौजी ख़र्च ही राक्षस की तरह हमारा रक्त चूस रहा है। इस शोषण को अवश्य ही बन्द कर देना होगा।

ब्रे०—हमारा ख़्याल है कि यही गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में प्रधान आलोच्य विषय होगा।

म०—निश्चय ही। इस प्रश्न को किसी तरह भी छोड़ा नहीं जा सकता।

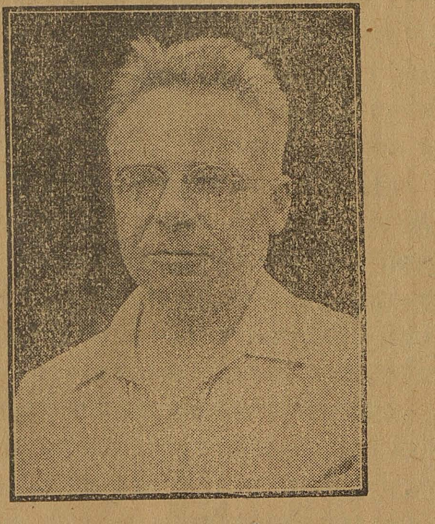

मि० ब्रेल्सफ़र्ड

ब्रे०—तो क्या गोरी फ़ौज को एकदम भगा देना ही आपका अभिप्राय है?

म०—निश्चय ही मैं उन्हें बिदा कर देना चाहता हूँ।

ब्रे०—परन्तु सेना-विभाग के अलावे जो और गोरे राज-कर्मचारी हैं, उनकी भी गणना क्या आप फ़ौजी कर्मचारियों के साथ ही करेंगे?

म०—हमारे ऊपर जो भार लदा है, उसके लिए कुछ अंशों में ये भी ज़िम्मेदार हैं। इन्हीं के कारण हमारे देश का शासन-सम्बन्धी ख़र्च इतना बढ़ा हुआ है। ये लोग जो वेतन लिया करते हैं, वह कदापि न्याय-सङ्गत नहीं है। विलायत में इस श्रेणी के राज-कर्मचारी जिस प्रकार जीवन यापन करते हैं, उनकी अपेक्षा ये भारतीय गोरे कर्मचारी अधिक ख़र्चीला जीवन बिताते हैं।

ब्रे०—बड़ी तनख़्वाहों के बारे में क्या कुछ कहा ही नहीं जा सकता। ये बेचारे गोरे राज-कर्मचारी अपने बाल-बच्चों को छोड़ कर निर्वासित की तरह विदेश में रहते और वहाँ की भीषण गर्मी में रहने को बाध्य होते हैं। क्या इसका बदला उन्हें नहीं मिलना चाहिए?

म०—नहीं। क्योंकि आजकल वह पुरानी अवस्था नहीं है। आने-जाने के लिए अच्छी व्यवस्था हो गई है। इसके फल-स्वरूप प्राचीन व्यवस्था में परिवर्तन हो गया है। प्रत्येक दो सप्ताह के बाद विलायती डाक बँटती है। इसलिए गोरे कर्मचारी आसानी से अपने परिवार-वर्ग के साथ पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। इसके अलावा गर्मियों में शैल-शिखर पर चले जाने की व्यवस्था है। इससे उनकी तकलीफ़ बहुत कुछ कम हो गई है। वे अगर हमारे साथ मिल कर भारतवासी की तरह रहना स्वीकार करें, हम बड़े आदर के साथ उनकी अभ्यर्थना करेंगे। परन्तु वे तो हमसे अलग रहते हैं, हमारे साथ मिल-जुल कर रहना पसन्द ही नहीं करते। कैण्टोण्मेण्ट ही उन्हें अधिक पसन्द है। उन कैण्टोण्मेण्टों में आज भी फ़ौजी क़ानून जारी है। कैण्टोण्मेण्ट की सीमा के अन्दर के हर एक मकान को सरकार जब चाहे दख़ल कर सकती है। सैनिक अगर कह दें कि इस मकान की हमें ज़रूरत है तो उसकी रक्षा नहीं, उसे सरकार अवश्य ही दख़ल कर लेगी।

ब्रे०—सेना विभाग के सम्बन्ध में प्रधानतः दो प्रश्न उठ सकते हैं। पहला यह कि सेना पर भारतवासियों का अधिकार रहना उचित होगा या नहीं। यह नीतिगत प्रश्न है। दूसरा यह कि सेना की संख्या घटा कर ख़र्च कम करना चाहिए या नहीं। यह अर्थनीतिक प्रश्न है। क्या आप इन दोनों प्रश्नों पर ज़ोर देना चाहते हैं?

म०—हमें पहले तो यही देखना होगा कि अपने देश के सेना-विभाग पर हमारा अधिकार है या नहीं?

ब्रे०—जिस जाति का ऐसा कोई अधिकार नहीं, उसे तो एक सम्पूर्ण राष्ट्र स्वीकार ही नहीं किया जा सकता।

म०—जो लोग यह कहा करते हैं कि पठानों के आक्रमण से भारत की रक्षा करने के लिए गोरी सेना का रहना अनिवार्य है। उन्हें मैं बता देना चाहता हूँ कि उनकी संरक्षता में रहना अब हमें स्वीकार नहीं है। हमें अपनी इच्छानुसार रहने का अधिकार मिलना चाहिए। हम पठानों के साथ लड़ सकते हैं और प्रयोजन होने पर उन्हें प्रसन्न रखने की व्यवस्था भी कर सकते हैं। असल बात यह है कि स्वाधीन भाव से काम करने का अधिकार हमें होना चाहिए। कुछ दिनों के लिए गोरी सेना को भारत में रखने के प्रस्ताव का मैं समर्थन करता। परन्तु हमसे कहा जाता है कि किसी भी भारतीय सरकार को गोरी सेना पर शासन करने का अधिकार नहीं दिया जा सकता।

ब्रे०—उनकी सम्मति के बिना गोरी सेना भारतवासियों के अधीनता में नहीं रक्खी जा सकती। परन्तु मेरा ख़्याल है कि सन्तोषजनक व्यवस्था होने पर इनमें से बहुत से ऐसे होंगे जो भारतवासियों की अधीनता में काम करना स्वीकार कर लेंगे।

म०—(प्रसन्नता से) हाँ, इसी उपाय से समस्या का समाधान हो सकता है। परन्तु मुझे आशङ्का हो रही है कि सैन्य संख्या कम कर देने से आपके देश के बेकारों की संख्या कुछ और बढ़ जायगी।

ब्रे०—अच्छा, अगर नीति के हिसाब से ब्रिटिश सैनिकों के ऊपर भारतवासियों का कर्तृत्व स्वीकार कर लिया जाय तो क्या आप सेना की संख्या, उनका ख़र्च और अन्यान्य विषयों के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार के साथ बातचीत करने के लिए तैयार हो जाएँगे।

म०—हाँ, अगर भारत के स्वार्थ के विरुद्ध कोई बात न हो तो इस प्रस्ताव पर विचार करने को हम तैयार हैं।

ब्रे०—हम समझते हैं, वह प्रस्ताव आपकी अपेक्षा हमारे स्वार्थों के ही अधिकतर अनुकूल होगा।

म०—(हँस कर) जो हो, हम इसमें राज़ी हैं।

ब्रे०—सेना-विभाग पर अधिकार करने के सम्बन्ध में जो नीतिगत बात आपने कही है, वही सारी जटिलता का कारण है। इसी नीति के कारण ही सारा झमेला हो रहा है। नीति के अनुसार आपको ऐसा अधिकार मिलना चाहिए, इस तरह की बात हमारे ख़्याल में नहीं आती। परन्तु सेना की संख्या में कमी करने की बात अलग है। किसी अंश में उसी की पूर्त्ति होगी। निरस्त्रीकरण सम्बन्धी सम्मेलन में ब्रिटिश जाति का आग्रह है। शीघ्र ही हम लोग इस सम्बन्ध में

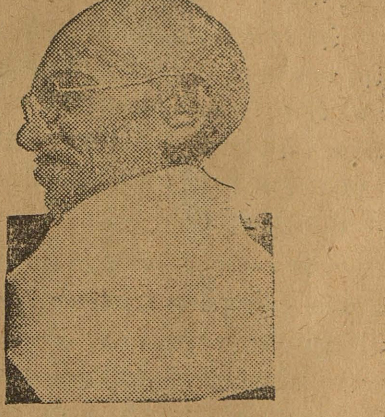

महात्मा गाँधी

अग्रसर होंगे। इस सुयोग के समय भारतीय सेना में कमी हो जाना कुछ असम्भव नहीं है।

म०—हमें जो चाहिए, वह मैंने बता दिया है। मैं क्या चाहता हूँ, वह सब ने जान लिया है। परन्तु अभी तक आगे नहीं बढ़ रहे हैं। कितना वे मन्ज़ूर करेंगे, यह बताने में मानो उन्हें भय मालूम हो रहा है। परन्तु मैं अपेक्षा करने के लिए भी प्रस्तुत हूँ।

ब्रे०—अर्थ-सङ्कट के कारण हम लोग परेशान हैं, इस समय विशेष कुछ काम न होगा। इसलिए अपेक्षा करना ही उचित होगा।

म०—इससे शायद सुविधा ही हुई है।

ब्रे०—मैं एक बाहरी आदमी हूँ और उसी के अनुसार प्रश्न भी कर रहा हूँ। क्या आपके पथ में और कोई अड़चन नहीं है? भारतीय नरेश क्या आपकी अभीष्ट-सिद्धि के पथ में रोड़े नहीं हैं?

म०—भारतीय नरेश वास्तव में ब्रिटिश सरकार के ही कर्मचारी हैं। ब्रिटिश सरकार का आदेश उन्हें मानना पड़ता है। इसलिए वे भारतीय वेष में ब्रिटेन के ग़ुलाम होने के सिवा और कुछ नहीं हैं।

(शेष मैटर १२वें पृष्ठ में देखिए)

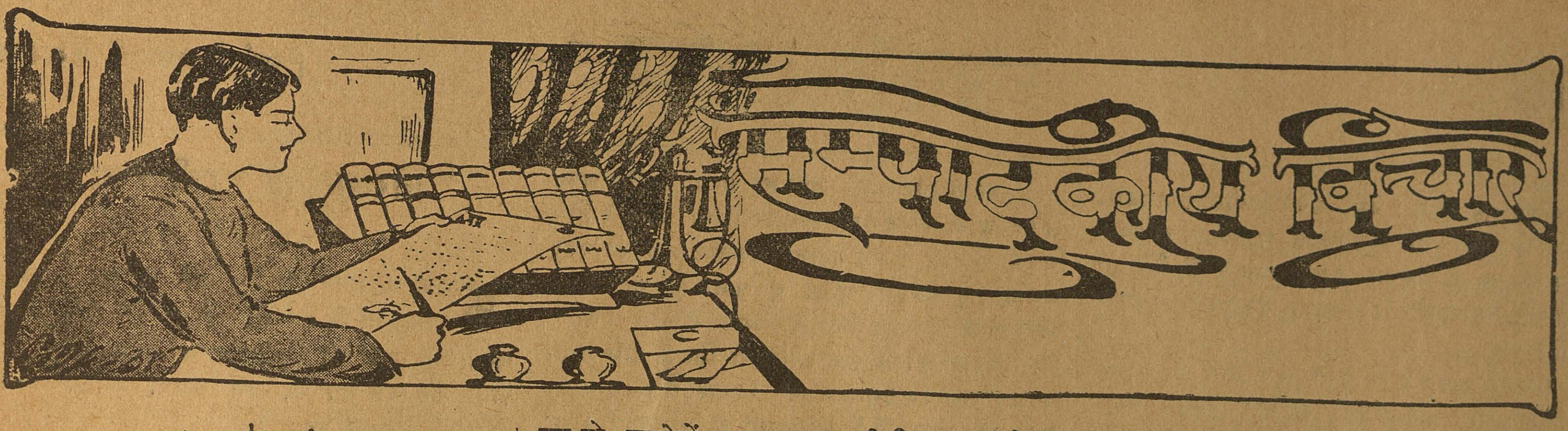

भविष्य

२ नवम्बर, सन् १९३१

ग्रेट-ब्रिटेन की मनोवृत्ति

आज़ादी की प्यास भारत के प्रत्येक प्राणी में असह्य वेदना उत्पन्न कर रही है। हमारे देश के विद्वान, जो समझदारी और दूरन्देशी में संसार की किसी भी जाति से कम नहीं हैं, उस उपाय को काम में लाने के अगुआ हैं, जिससे हमारी ग़ुलामी मिट सकती है। हमारे दूकानदार और दूसरे ग़ुलामी में फँसे हुए औसत दर्जे के लोग आज़ादी हासिल करने की आशा और उत्साह से भरे हुए काम करने को तैयार खड़े हैं। हमारे देश के कारीगर, मज़दूर और कला-कौशल के पण्डित अब अधिक पूँजीवादियों की एड़ी तले पिस कर जान देने को पाप समझ चुके हैं। वह दिन अब नहीं रहे, जब हमारे किसान रात-दिन खेतों में जान खपा कर भी धरती के ऊपर और आसमान के नीचे अपना कोई स्थान नहीं देखते थे, पके हुए खेतों से बहुत सा अनाज इकट्ठा कर लेने पर भी भूखे-प्यासे सो जाते थे और चू तक भी न करते थे। आज हमारे अधिकांश बच्चे कॉलेजों और स्कूलों में केवल इसलिए पढ़ना नापसन्द करते हैं, कि वह अपने देश में रहते विदेश की ग़ुलामी करके आधे पेट खाने से सन्तुष्ट नहीं हैं। आज हमारे देश की स्त्रियाँ अपने प्रकृत अधिकार, मान-मर्यादा और अपने तथा अपने बच्चों के प्यारे प्राण बचाने के लिए सब तरह की कठिनाइयाँ झेलने को सहर्ष दौड़ पड़ती हैं।

यह भारत की बेचैनी है, यह उसकी स्वराज्य-प्राप्ति की उत्कण्ठा है, जिसे वह प्रत्यक्ष व्यवहार में—ऐसे प्रकाश रूप में दिखा रहा है, कि जिससे कोई आँख खोल कर देखने वाला इन्कार नहीं कर सकता। अगर ग्रेट-ब्रिटेन के विद्वान, जिनके हाथों में शासन की बाग-डोर है, हुकूमत के अख़्तियारात हैं, नहीं देख सकते तो यह मनुष्य-जाति के लिए बड़े दुर्भाग्य की बात है। यदि आज ब्रिटेन भारत की शक्ति को नहीं देख सकता तो वह अपनी त्रुटियों और कमियों के लिए ज़िम्मेदार है।

भारत समझने लगा है कि उसके लिए विदेशी तलवार के साए में जीवन व्यतीत करना घोर अपमान है। वह दूसरों को सताने का स्वप्न में भी विचार नहीं रखता, लेकिन वह दूसरों से भी सताया जाना पसन्द नहीं करता, वह औरों पर अत्याचार नहीं करता तो औरों का अत्याचार भी मौन होकर नहीं सह सकता। इसी प्रकार जब भारत पर अङ्गरेज़ों का विश्वास नहीं रहा तो अङ्गरेज़ों पर भारत का भी विश्वास न होना बहुत स्वाभाविक है। विश्वास से विश्वास और अविश्वास से अविश्वास ही उत्पन्न होता है। यदि हमारे सद्भावों और धार्मिकता पर ग्रेट-ब्रिटेन का विश्वास होता तो भारत में अपने हाथ के नीचे एक प्रबल सेना का केवल भारतवासियों को दबाए रखने के उद्देश्य से रखना, वह ज़रूरी न समझता, न ऐसी अनुचित बात के लिए हठ करता।

सम्भव है कि हमारे देश के मुट्ठी भर लोग, चाहे वे राजा-रईस हों, चाहे ताल्लुक़ेदार-ज़मींदार अथवा स्वार्थी धर्मान्धों का जत्था—अपने देश को ग़ुलाम बनाए रखने ही में अपना भला देखते हों। यह थोड़े से लोग भारत की करोड़ों आदमियों की आबादी में अगण्य हैं। भारत इनसे नहीं बनता, भारतवर्ष ८९ प्रति सौ लोगों का नाम है, जो वर्तमान हुकूमत से नाराज़ और बेज़ार हो चुका है। इतनी बड़ी जनता का नाम-निशान ज़मीन पर से मिटा देना असम्भव है इतनी बड़ी जनता के नामोनिशान मिटाने की कोशिश करना नादानी है। यह तो प्रेम से ही बँध सकती है, न कि सेना की तलवार और बन्दूक़ के भय से। लेकिन दुख से देखा जाता है कि ग्रेट-ब्रिटेन के हथियारख़ाने में बहुत तरह के क़ातिल, मारात्मक हथियारों के होते हुए भी प्रेम और विश्वास के नागफाँस नहीं हैं।

जब तक भारत को अपने देश के वसूल किए हुए कर को अपनी सुविधा और ज़रूरत को देख कर ख़र्च करने का अधिकार न होगा, जब तक उसे यह अधिकार न होगा कि अपनी समझ के मुताबिक़ कर लगाए, अपनी ज़रूरत देख कर नौकर रक्खे, अपने ख़ज़ाने की शक्ति देख कर वेतन दे और अपनी आर्थिक रक्षा अपने ढङ्ग से करे; तब तक देश की दरिद्रता दूर नहीं हो सकती। और जब तक कि दरिद्रता दूर न हो तब तक शान्ति का होना असम्भव है।

इधर के नवीन सम्वादों से, जो देशी और विलायती समाचार-पत्रों से अथवा निज सम्वाददाताओं से मिलते रहते हैं, निश्चय किया जाता है कि भारत को अपने धन पर कोई अधिकार न होगा और वह इसलिए कि अगर ख़ज़ाने पर भारत का अधिकार होगा तो ग्रेट-ब्रिटेन हर साल भारत की सारी आमदनी का तीन चौथाई से अधिक रुपया फ़ौज और सिविलियनों के ख़र्च के नाम से आज़ादी के साथ बरबाद न कर सकेगी, न मनमाना टैक्स लगा सकेगी।

सेना की बाबत हमारे 'एक-मात्र प्रतिनिधि' के घोर विरोध करने पर भी जो तजवीज़, भारत को स्वराज्य देने की, लॉर्ड साङ्की तैयार कर रहे हैं, उसमें साफ़ यह बात रक्खी गई है कि फ़ौज और पर-राष्ट्र-नीति (विदेशों के सम्बन्ध की नीति) सदा की भाँति इङ्गलैण्ड के महाराज के हाथ में रहेगी और इन मुहक़मों का काम उन मिनिस्टरों (सचिवों=वज़ीरों) के हाथ में रहेगा जो महाराज इङ्गलैण्ड के सामने अपने कामों के ज़िम्मेदार होंगे, न कि भारत की सरकार के सामने! इससे भी साफ़ ज़ाहिर है कि इङ्गलैण्ड की नौकरशाही (केबीनेट) और भारत की नौकरशाही का ही लड्डू सदा की भाँति पुजता रहेगा। (पाठकों को जान लेना चाहिए कि जैसे पुजारी लोग देवी-देवता का नाम लेकर अपनी मनमानी करते हैं, वैसे ही महाराज इङ्गलैण्ड (क्राउन) के नाम की दुहाई देकर इङ्गलैण्ड के अधिकारी अपनी मनमानी करते हैं)

हमें तो यही गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स की दो बार की लम्बी-चौड़ी बैठकों का नतीजा नज़र आ रहा है।

❀ ❀ ❀

देशी रजवाड़े और भारत-सरकार

किसी आदमी के लिए भारत-सरकार की नीति को जान लेना एक कूट-पहेली है, इसके न्याय का रूप पहचान लेना एक असम्भव काम है। अलवर की रियासत के भीतर नीमुचाना में लोमहर्षण-काण्ड हो गया, गाँव जलाया गया, कितनों के प्राण-कीट पतङ्गों की तरह अधिकारियों की क्रोधाग्नि में भस्म हो गए, लेकिन ब्रिटिश गवर्नमेण्ट का आसन नहीं डोला, न तो कोई जाँच-कमिटी बैठी, और न कोई कमीशन ही नियत हुआ। ऐसा क्यों नहीं हुआ, इसका उत्तर देना सरकार के अधिकार-प्राप्त कर्मचारियों का ही काम है। बाहिरी आदमी तो अनुमान मात्र कर सकता है।

फिर रियासत निज़ाम हैदराबाद की गुलबर्ग की घटना को याद करते हैं, तो भी यही मालूम होता है कि गवर्नमेण्ट ने हिन्दुओं के प्राणों का मूल्य इतना भी नहीं समझा कि वहाँ कोई जाँच-कमिटी या कमीशन नियत करती। गुलबर्ग के मामले में हिन्दुओं ने कोई राज-विद्रोह नहीं करना चाहा था।

ब्रिटिश सरकार को यह बतलाने की ज़रूरत नहीं है कि निज़ाम हैदराबाद में १०० में ९० हिन्दू हैं, इन हिन्दुओं को अपने मन्दिरों के जीर्णोद्धार की इजाज़त नहीं दी जाती, इनके लिए इनकी मातृ-भाषा तेलगू और धर्म-भाषा संस्कृत पढ़ाने का कुछ भी प्रबन्ध नहीं है। क्या सम्भव नहीं है कि इस प्रकार के अनेक कष्टों और अत्याचारों को सहते-सहते कभी प्रजा में घोर असन्तोष पैदा होकर विद्रोह के रूप में फूट पड़े? क्या इस प्रकार के उपद्रवों को रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार का कर्तव्य नहीं है कि पहले से ही प्रबन्ध करे?

हाल में ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने काश्मीर-काण्ड की तहक़ीक़ात के लिए एक कमीशन बैठाया है। मुसलमानों की माँगें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। सम्भवतः इन पर विचार होगा।

कोई भी समझदार आदमी नहीं चाहता कि देश के किसी भी राज्य में फ़िज़ूल ख़र्च, बदचलन, नशेबाज़ और अत्याचारी शासक हो। देशी रजवाड़ों में जो अन्याय होते हैं, उन्हें देख कर यह कहना अत्युक्ति न होगा, कि देशी रियासतों की रहने वाली जनता मनुष्य ही नहीं समझी जाती! यह परिस्थिति सर्वथा अवाञ्छनीय है।

ब्रिटिश सरकार का प्रधान धर्म यह होना चाहिए कि वह सब रजवाड़ों के लिए ऐसा प्रबन्ध करे कि कोई राजा, नवाब कितना ही बड़ा या छोटा क्यों न हो, जनता के धर्म और संस्कृति में, घर की पवित्रता और कुल-मर्यादा में हस्तक्षेप न कर सके, मनुष्यों के प्राणों की पवित्रता को न भूले। सरकार की ओर से इस धर्म

का पालन नहीं होता। धर्म, सच्चाई और ईमानदारी चाहता है। जो बातें काश्मीर के मुसलमान काश्मीर में राज-नियम के अनुसार कराना चाहते हैं, वैसी ही परिस्थिति भोपाल और निज़ाम हैदराबाद में होनी चाहिए।

यह हम जानते हैं कि देशी रियासतों के शासक ज़मींदारों और ताल्लुक़ेदारों की तरह बिल्कुल फ़ज़ूल हैं, परन्तु विदेशी सरकार की सुविधा इसीमें है कि वह बने रहें, सरकार को पैसे की तहसील-वसूल में कष्ट न उठाना पड़े। इसलिए जब तक भारत की बहुत सी जनता इस ग़ुलामी दरग़ुलामी के प्राणघातक पञ्जे से छुटकारा न पावे, तब तक यह ज़रूरी है, कि कम से कम उतनी स्वतन्त्रता तो उन्हें मिले, जितना कि ब्रिटिश भारत की जनता को प्राप्त है!

ब्रिटिश भारत में हो या देशी राज्यों में, ब्रिटिश सरकार द्वारा हो या देशी राजाओं के द्वारा हो, पक्षपात का होना किसी दशा में हितकारी नहीं होता। इसलिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को कम से कम अपने न्याय, अपनी सच्चाई और अपनी ईमानदारी का विश्वास स्थापित करने के लिए वही काम करना चाहिए, जिसमें जनता उसे पक्षपात का लाञ्छन न लगा सके। जो प्रचार महाराजा काश्मीर के विरुद्ध लन्दन में और भारत में हो रहा है, उसे देख कर भारतवासियों को पुराना काश्मीर का षड्यन्त्र याद आता है और अनुमान होता है कि इस बार भी काश्मीर को बरबाद करने के लिए वही हाथ काम कर रहे हैं, जो महाराजा गुलाबसिंह के समय में करते थे।

हैदराबाद में जो ज़ुल्म होते हैं और हो सकते हैं, उनका अनुमान हमको लखनऊ के 'हमदर्द' के उन शब्दों में मिलता है, जो उसने महाशय ख़ुशहालचन्द, मालिक 'मिलाप' लाहौर, के सम्बन्ध में इसलिए लिखा है, कि उन्होंने हैदराबाद रियासत में होने वाले अत्याचारों का उल्लेख किया था। ऊपर सङ्केत किए गए शब्द ये हैं :—

"महाशय ख़ुशहालचन्द अगर कहीं दकन में मौजूद होते तो उनको जान सलामत लाना दुशवार हो जाता। लाहौर में बैठ कर वह जो चाहें, लिख सकते हैं।"

❀ ❀ ❀

बिजली कम्पनियों की लूट

विलायत में मेहनत अर्थात् मज़दूरी महँगी है, कोयले और तेल का दाम भी महँगा है, फिर भी वहाँ एक पेनी प्रति यूनिट बिजली ग़रीबों को मिल सकती है। भारत में यह सब चीज़ें सस्ती हैं। इसके अतिरिक्त 'हाइड्रो इलेक्ट्रिक सरवे' ने सिद्ध कर दिया है कि भारत में सस्ती और बलवती बिजली की शक्ति भरी पड़ी है, ज़रूरत है ऐसे समझदार व्यापार-बुद्धि वाले की, जो अपने स्वार्थ का अन्धा न हो, किन्तु देश की जनता का हित ईमानदारी के साथ देखता हो।

कोयले और कच्चे तेल के दाम के ऊपर ही बिजली पैदा करने के ख़र्च की कमी या बेशी निर्भर होती है। आठ आना टन की कमी-बेशी से बिजली पैदा करने के ख़र्च ·०१ आना का अन्तर पड़ता है।

अगर कलकत्ते में ·१६२ आना प्रति यूनिट बिजली पैदा करने में ख़र्च पड़ता है, तो लाहौर में, जहाँ कोयले का दाम ५) टन अधिक पड़ता है, ·२८२ आना पड़ेगा, (१० × ·०१ × ·१६२) इसलिए कलकत्ते और लाहौर के बीच की जगहों में इसी हिसाब से कम ख़र्च पड़ेगा। ·२६२ आना का अर्थ है साढ़े तीन पाई प्रति यूनिट (१२ पाई का आना होता है)।

कलकत्ते और उससे लगी हुई जगहों में पौन आना से एक आना यूनिट तक सड़क पर रोशनी करने के लिए बिजली दी जाती है और बड़े-बड़े कारख़ाने वालों को ·२६३ अर्थात् साढ़े तीन पाई यूनिट दी जाती है, फिर भी ७० लाख रुपयों का नफ़ा होता है। ज़मीन के नीचे के तारों, ऊपर के तारों और मैशीन आदि की घिसाई और खपत का ख़र्च काट कर इस दर पर बिजली बेच कर इतना भारी नफ़ा कलकत्ते में हो सकता है, तो दूसरी जगह क्यों नहीं हो सकता?

संयुक्तप्रान्त में और आगे उत्तर की ओर ।=) यूनिट दाम लिया जाता है अर्थात् ग्यारह गुणा से भी अधिक नफ़ा किया जाता है; दो पैसे की चीज़ का ।=) लेना नफ़ा नहीं है, डकैती है, लूट है, ठगी है, जिसे गवर्नमेण्ट भी रोकना नहीं चाहती। या तो गवर्नमेण्ट में सब नालायक़ लोग हैं, हिसाब-किताब नहीं समझते, इसलिए जनता के हिताहित का इस सम्बन्ध में ध्यान नहीं कर सकते या उनका निज का स्वार्थ है। दोनों दशाएँ बुरी हैं। नालायक़ और स्वार्थी व्यक्ति पब्लिक सरविस से जितनी जल्दी निकाला जाय, उतना ही अच्छा है।

मद्रास में पङ्खे और रोशनी के साधारण कामों के लिए बिजली कम्पनी चार आने यूनिट लेती है, किन्तु इसमें भी कम लूट नहीं है।

मद्रास के सम्बन्ध में यू० पी० कौन्सिल के प्रश्नों से ही प्रकट है कि :—

१—बाज़ार की लेम्पों के, जो ४० 'वॉट्स' की होती है, पाँच घण्टा रोज़ जलाने के लिए १॥) महीना लगता है।

२—सौदागरों की दुकानों, मकानों और क्लब वग़ैरह से =)॥ यूनिट लिया जाता है।

३—दूसरे अनेक कामों के लिए (मकान गर्म करने, खाना बनाने वग़ैरह) एक आना यूनिट और पाँच रुपया महीना अलग लगता है।

४—मैशीन चलाने के लिए -)। यूनिट लिया जाता है।

ज़मानत जमा करने में भी लूट देखी जाती है। यू० पी० की बिजली कम्पनी का पेट प्रसिद्ध लम्बोदर के पेट से भी बड़ा जान पड़ता है। बिजली ख़र्च करने वालों से यह दिन-दिन ज़मानत जमा करने की रक़म भी बढ़ाती रहती है। इण्डियन इलेक्ट्रो-सिटी ऐक्ट ज़मानत के सम्बन्ध में धारा ६ की उपधारा १ की वाक्यावलि 'अ' बतलाती है कि 'पर्याप्त' ज़मानत जमा की जाए (न कि अनाप-शनाप) और उसका उचित प्रतिफल लाइसेन्सी को दिया जाए।' ज़्यादा ज़मानत जमा कराना कम्पनी की धृष्टता है।

हम ऊपर कह चुके हैं कि बिजली पैदा करने में लगभग आध आना यूनिट या ३=) प्रति १०० यूनिट ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च पड़ता है। अभी तक किसी बिजली कम्पनी ने इसका प्रतिवाद नहीं किया। अगर कोई बिजली कम्पनी इसका प्रतिवाद करेगी और हमको मालूम होगा, तो हम सहर्ष उसके प्रश्नों का ब्योरेवार उत्तर देने को तैयार हैं।

हम चाहते हैं, देशवासी इस नादिरशाही लूट के विरुद्ध अधिक से अधिक आन्दोलन उठावें और तब तक शान्त न हों, जब तक उनके साथ न्याय न किया जाय। आवश्यकता पड़ने पर हम बिजली का तब तक बहिष्कार भी करने के पक्ष में हैं, जब तक बिजली कम्पनी की बुद्धि ठिकाने पर न आ जाय। हमारा विश्वास है कि विशेष-कर कानपूर तथा इलाहाबाद की जनता इस मामले में अग्रगण्य होकर अन्य प्रान्तों के लिए एक सबल उदाहरण उपस्थित करेगी।

हम स्थानीय म्यूनिसिपल बोर्ड का ध्यान भी विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं।

❀ ❀ ❀

निराशा की काली रेखा

हमको तो अपने जीवन में कभी भी यह विश्वास नहीं हुआ कि ग्रेट-ब्रिटेन भारत के साथ न्याय करेगा और सहर्ष हमें हमारे देश का शासन सौंप देगा, ख़ास कर उस रूप में, जिस रूप में महात्मा जी ने कॉन्फ़्रेन्स के सामने रक्खा है।

इस समय यह परिस्थिति है कि महात्मा जी चाहते हैं कि ख़ज़ाने और सेना पर भी हमारा पूरा अधिकार हो और हम इस बात के लिए भी स्वतन्त्र रहें कि जब चाहें अपना नाता ग्रेट-ब्रिटेन से तोड़ लें। ब्रिटिश जाति के शासन की बागडोर जिनके हाथ में है, वे लोग यह चाहते हैं कि तलवार और दौलत हमारे हाथ में हो, और सब कुछ भारतवासी ले लें। यह एक प्रकार का वैसा ही बटवारा है, जैसे ईरान का एक प्रहसन प्रसिद्ध है। प्रहसन इस प्रकार है :—

दो भाइयों में झगड़ा हो जाने के कारण उन्हें आपस में अपनी सम्पत्ति बाँटने की ज़रूरत पड़ी। छोटे भाई ने कहा कि इस प्रकार की घरू लड़ाई में सम्पत्ति बाँटने के लिए बाहिरी आदमियों को बुलाना अच्छा नहीं जान पड़ता। मैं यथोचित बटवारा स्वयम् किए देता हूँ, यह बात मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आप बड़े भाई हैं, आपका हक़ है कि आप हिस्से में मुझसे कुछ ज़्यादा पाएँ। इसी विचार के अनुसार जब बटवारा शुरू हुआ तो पहले उसने घर का हिस्सा इस प्रकार किया :—

अज़ सोरा ता लबे खाना अज़ाने मन।
अज़ लबे बाम ता सुरैया अज़ाने तो।

अर्थात्—धरती से लेकर मकान के ऊपर तक तो मेरी सम्पत्ति होगी और मकान के ऊपर से लेकर सातवें आसमान तक तेरी जायदाद रहेगी।

ठीक इसी प्रकार ग्रेट-ब्रिटेन भी अपनी पूर्ण उदारता से हमें सारे मुक़दमों का भार देने को तैयार है, हमारी किसी माँग को वह ठुकराना नहीं चाहता, लेकिन आख़िर कुछ थोड़ा सा उसे भी चाहिए और वह थोड़ा अधिकार है ख़ज़ाना और सेना!!

अब तो डॉक्टर सर तेजबहादुर सप्रू सदृश गौराङ्ग-चरणानुरक्तों के भी होश ठिकाने आ गए हैं। सभी प्रतिनिधि, जो गोलमेज़ में भारत से गए हैं, यह कहते सुनाई देते हैं कि सैनिक प्रश्न पर जब ब्रिटिश सरकार का रुख़ इतना कड़ा है कि जिससे भारत से प्रत्यक्ष विरोध और अविश्वास की झलक आ रही हो, जब ब्रिटिश सरकार अपनी अर्थ-नीति पर इतनी अटल है कि हमारी कुछ सुनना और मानना ही नहीं चाहती, तो हमारे देश के ८९ प्रति सौ ग़रीबों के परित्राण का कोई उपाय ही शेष नहीं रहता। इस दशा में गोलमेज़ का परिणाम कुछ अच्छा होता नज़र नहीं आता।

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के इस कहने पर कि 'करेन्सी कमीशन' ने निर्णय कर दिया था कि रुपए को स्टर्लिङ्ग के साथ नत्थी न किया जायगा, क्योंकि कमीशन को सन्देह था कि 'स्टर्लिङ्ग' स्वर्णमान का सम्बन्ध तोड़े तो क्या हो। इसके बाद सर पुरुषोत्तमदास ने पूछा कि सरकार १८ पेन्स का रुपया कैसे स्थिर रखना चाहती है। सरकार का कर्तव्य तो यह है कि रुपया को अपने बल पर छोड़ दे। इससे किसानों को पैदावार के बदले में कुछ ज़्यादा रुपए मिलें और उनको दुख में सहारा देंगे।

सर हेनरी स्ट्रेकोश सर पुरुषोत्तमदास की बात का उत्तर घूँट जाना चाहते थे, लेकिन जब उन्हें दूसरे सदस्यों ने गला दबा कर उत्तर देने के लिए बाध्य किया तो उन्होंने कहा कि सरकार ने सोच-समझ कर स्टर्लिङ्ग

के बिक्री का भाव नियत किया है। सरकार स्टर्लिङ्ग को १६-२० पेन्स तक जाने देने को तैयार है।

अन्त में महात्मा जी ने साफ़ कह दिया कि मैं वर्तमान सम्मिलन से यह बात ख़ूब समझ कर जाता हूँ कि सरकार की सिक्के की नीति साधारण जनता के हिताहित के विचार के ऊपर आधार नहीं रखती और ऐसा ही मेरा विश्वास उस समय तक रहेगा, जिस समय तक सर वेसल ब्लेकर और सर हेनरी स्ट्रेकोश जनता के हित की दृष्टि से अपना पक्ष सत्य न सिद्ध कर देंगे।

❀ ❀ ❀

संयुक्त-प्रान्त और अवध में लगातार किसानों पर कर के लिए अमानुषिक व्यवहारों के करने की ख़बरें आ रही हैं। सरकार अपनी घोषणा में उनका खण्डन करती है। लेकिन जिन बातों को कॉङ्ग्रेस के विश्वस्त कार्यकर्ता अपनी आँखों से देख कर आते हैं, जिन बातों को ग्रामों के निवासी अपनी राम-कहानी में हमें सुनाते हैं, जिन कृत्यों को हम मनुष्यों के शरीर पर देखते हैं, उन्हें कैसे झूठ मान लिया जाय? मनुष्य का स्वभाव है कि वह आँखों का विश्वास कानों की अपेक्षा अधिक करता है।

❀ ❀ ❀

महात्मा गाँधी का बोझ

सर सपरू के सुख-स्वप्न

गत २१वीं अक्टूबर को सङ्घ-योजना कमिटी में भाषण देते हुए भारत सरकार के भूतपूर्व लॉ-मेम्बर सर तेजबहादुर सप्रू ने भारतीय हाईकोर्टों की प्रशंसा करने में चारणों तथा भाटों तक को मात कर दिया। भारत में एक सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) के स्थापना की आवश्यकता बतलाते हुए आपने यहाँ तक कह डाला—

"....if there was one institution established in British India by British Rule of which people could be proud, it was High Courts. They were institutions to which people looked for protection of their lives, safety, honour and freedom....."

सारांश यह कि "यदि भारत में अङ्गरेज़ी शासन द्वारा कोई प्रत्यक्ष लाभ हुआ है, तो वह हाईकोर्टों का संस्थापन है। एक यही संस्था ऐसा है, जिस पर भारत की जनता अभिमान कर सकती है और यही ऐसी संस्था है, जिससे भारतवासी सहायता, रक्षा, न्याय तथा स्वतन्त्रता की आशा करते हैं।"

सर सपरू अपनी ओर से हाईकोर्टों के संस्थापन की चाहे जितनी प्रशंसा करते, हमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं हो सकती, क्योंकि उसी की बदौलत उनका विकास हुआ है, उनकी उन्नति हुई है और उन्होंने उसीके द्वारा प्रचुर ऐश्वर्य संग्रह किया है; किन्तु भारतवासियों की ओर से उनका यह कहना कि प्रत्येक भारतवासी हाईकोर्टों के न्याय और धर्म पर गर्व करता है और उस पर लट्टू है; अपने आपको धोखा देना है। यदि सर सपरू को कभी स्वयं न्याय के लिए हाईकोर्टों का दर्वाज़ा खटखटाना पड़ता, तो हमारा विश्वास है, वे कदापि इस प्रकार का अनर्गल प्रलाप नहीं कर सकते थे। अभागे भारतवासियों के पास 'कमज़ोर तिल्ली वालों की' एक लम्बी सूची है, जो अङ्गरेज़ों के आघात से स्वर्ग सिधार चुके हैं, पर अङ्गरेज़ों को इस 'सुकृति' के लिए बेदाग़ छोड़ दिया गया। पर यह रोना तो निर्धन असहाय भारतवासियों का है। सर सपरू को इन अभागों से क्या सरोकार हो सकता है? आपकी एकमात्र साधना तो यह है कि देहली में एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना हो और आप उसके प्रधान जज नियुक्त किए जायँ, और वर्तमान परिस्थिति को दृष्टि में रखते हुए ऐसा हो जाना हमें कठिन भी प्रतीत नहीं होता।

❀ ❀ ❀

ब्रिटेन की समुद्री-सेना में अशान्ति

अङ्गरेज़ों के एटलाण्टिक महासागर के बेड़े के लोगों की अशान्ति पर जर्मनी की जनता और जर्मनी के प्रेसों ने बड़ी दिलचस्पी दिखाई है। जर्मनी में यह घटना साधारण मज़दूरी का नगण्य झगड़ा समझ कर नहीं छोड़ दी गई, बल्कि उसे बहुत महत्त्वपूर्ण समझा गया है। सब प्रधान सम्वाद-पत्रों ने इस घटना को बड़े मोटे-मोटे अक्षरों में शीर्षक देकर मुखपृष्ठ पर छापा है। इस घटना के वर्णन करने में जिसे हमने अशान्ति (हलचल) कहा है, जर्मनी के सारे सम्वाद-पत्रों ने बग़ावत का नाम दिया है। सम्वाद-पत्रों की शैली में उद्दण्डता नहीं है, आलोचना भी सूक्ष्म है, प्रत्यक्ष कुछ नहीं कहा गया, आभास मात्र दिया गया है। सङ्कीर्ण, उदार और साम्यवादी दल के पत्रों ने एक समान ब्रिटेन के नौसैन्य विभाग और उसके अफ़सरों की परिस्थिति सँभालने की चतुराई की प्रशंसा की है।

बर्लिन का उदारनीतिक पत्र, 'बर्लिनर टेगब्लैट' लिखता है :—

"इनवरगोरडन की घटना ने इङ्गलैण्ड की शान को भारी धक्का दिया है, ख़ास कर ऐसे मौक़े पर जब कि पौण्डका पुराना विश्वास लोगों में कमज़ोर पड़ता जाता है। दूसरा 'पत्र ड० अ० जीटङ्ग' कहता है, 'जिन दो बातों पर ब्रिटेन की शक्ति और अभिमान का आधार था, अर्थात् भारत और नौसैन्य, वह दोनों इस सप्ताह में आगे आ गईं। इस पत्र ने एक साल पहले रणतरी 'रीवेञ्ज' और इस वर्ष के आरम्भ में पनडुब्बी 'लूसिया' के नाविकों के उभाड़ का भी वर्णन किया है। फिर कहता है कि इङ्गलैण्ड के बजट में १० करोड़ पौण्ड का ख़र्च कम होने को है, उसमें से आधी कमी नौसैन्य के हिस्से में आएगी, जिसमें से ५० लाख पौण्ड नाविकों (जहाज़ियों) के वेतन से काटा जायगा। जहाज़ियों की मज़दूरी ४ शिलिङ्ग रोज से ३ शिलिङ्ग रोज़ होगी, जब कि ६ पौण्ड ६ शिलिङ्ग १० पेन्स रोज़ पाने वाले अफ़सर से ८ शिलिङ्ग २पेन्स रोज़ काटा जायगा। समान त्याग का यह सुन्दर नमूना है।

एक दूसरे पत्र ने, जिसका नाम 'रोटेफ़ा इने' है, लिखा था कि "जर्मनी के क्रान्तिकारी मज़दूर आप लोगों को (बेचैनी फैलाने वाले अङ्गरेज़ी जहाज़ियों को) आपकी उस मरदानगी के लिए बधाई देते हैं जो आपने अङ्गरेज़ी सरकार और वामपथगामी अफ़सरों के विरुद्ध दिखलाई है।" इसके बाद उसने जहाज़ियों को उपद्रव जारी रखने के लिए भड़काया है।

इस पत्र का प्रकाशन उक्त बात छापने के अपराध में चार सप्ताह के लिए बन्द कर दिया गया, क्योंकि पुलिस कमिश्नर की राय में इस प्रकार के लेखों से जर्मनी और इङ्गलैण्ड की दोस्ती में कटुता पैदा होने का भय है, साथ ही इससे जर्मनी के भी घरू मामले को नुक़सान पहुँच सकता

बर्लिनर 'टेकब्लैट' कहता है कि खींचतान कर यह तो समझ सकते हैं, कि इससे जर्मनी और इङ्गलैण्ड के प्रेम-भाव में अन्तर पड़ सकता है, लेकिन यह समझ में नहीं आता कि घरेलू मामले में कौन सी ख़राबी पैदा हो जायगी?

❀ ❀ ❀

(८वें पृष्ठ का शेषांश)

ब्रे०—तो क्या आप इन राजाओं को बड़े लाट की अधीनता में छोड़ दे सकते हैं ?

म०—नहीं, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें सारा अधिकार भारतीय सरकार का हो ।

ब्रे०—परन्तु राजे क्या बड़े लाट की अधीनता में रहना ही पसन्द न करेंगे ?

म०—उनमें से किसी से भी पूछिएगा तो वह यही उत्तर देगा। परन्तु वास्तव में क्या वे सोचते हैं, कि बड़े लाट की अधीनता में रह कर सुखी हो सकेंगे। दर-असल हम लोग जैसे भावापन्न हैं, वही आदर्श उनका भी है। आख़िर वे भी तो भारतवासी ही हैं।

ब्रे०—परन्तु यह याद रखने की बात है कि वर्तमान अवस्था में उन्हें जो सुविधाएँ प्राप्त हैं, वे आप उन्हें कदापि नहीं दे सकेंगे । सरकारी कर्मचारियों के प्रति शिष्टाचार दिखाने के लिए देशी रजवाड़े बाध्य हैं। क्योंकि इससे वे अपनी प्रजा के साथ समता का व्यवहार कर सकते हैं। सरकारी कर्मचारियों की कृपा से ही उन्हें यह सुविधा प्राप्त है।

म०—परन्तु उन्हें शिष्टाचार न कह कर कापुरुषोचित आत्म-समर्थन कहना चाहिए। स्वाधीन चिन्ता के अनुसार चलने की क्षमता इन लोगों में नहीं है। हैदराबाद के निज़ाम अगर कोई कार्य आरम्भ करें, तो बड़े लाट की क्रोध भरी चिट्ठी उसे रोक देने के लिए यथेष्ट है। लॉर्ड रीडिङ्ग के ज़माने में जो हुआ था, वह आप से छिपा नहीं है।

ब्रे०—ख़ैर, भारतीय नरेशों पर अधिकार रखने की बात छोड़ दीजिए और इस पर विचार कीजिए कि अगर संयुक्त राष्ट्र की व्यवस्था-परिषद में ४० प्रति शत सदस्य राजाओं द्वारा मनोनीत हों तो बेचारी ग़रीब और आधे-पेट खाकर जीने वाली करोड़ों प्रजा के लिए कौन सी सुविधा हो जायगी ?

म०—आप लोगों के साथ जो कार्य किया है, इनके साथ भी वैसी ही व्यवस्था कर सकूँगा। बल्कि इनके साथ समझौता कर लेना आसान भी होगा।

ब्रे०—परन्तु मेरी तो धारणा है कि हमारे उत्तर की अपेक्षा उनका उत्तर अधिक कठोर होगा। हमने लाठी का प्रयोग किया था। परन्तु वे राइफ़ल और बन्दूक़ का प्रयोग करेंगे।

म०—यह आप लोगों के लिए जातिगत गौरव की बात है। परन्तु आपने बिल्कुल सच्ची बात कही है, इसलिए मैं आपको अधिक पसन्द करता हूँ। राइफ़ल और बन्दूक़ के लिए प्रस्तुत रहना हम लोगों का प्रधान कर्तव्य है। 'प्रेस्टिज' और मर्यादा पर ही भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व निर्भर है। आपकी जाति बड़ी साहसी है और आपकी ख्याति ने ही हमें आतङ्क ग्रस्त कर रक्खा है। मैंने दक्षिण अफ़्रीका में भी ठीक यही बात देखी है। जूलूगण स्वभावतः एक युद्ध-प्रिय जाति है। परन्तु वे भी रिवॉल्वर देख कर काँप उठते हैं। भारतीय-नरेशों के साथ अगर संग्राम करने की ज़रूरत हो तो और कुछ हो या न हो, परन्तु आप लोगों की तरह भयग्रस्त करने की शक्ति वे नहीं प्राप्त कर सकेंगे।

दक्षिण अफ़्रिका के जिसके कारण एक और उदाहरण याद आ गया, भारतीय नरेशों के साथ हम लोगों का जो सम्बन्ध है, उसे हम लोग बदलना चाहते हैं। इससे पूर्व स्वीटज़रलैण्ड पर लन्दन के डाउनिङ्ग स्ट्रीट का प्रभुत्व था, परन्तु यूनियन का सङ्गठन हो जाने के कारण वह प्रभुत्व हस्तान्तरित हो चुका है। ठीक उसी तरह हम भी कह सकते हैं कि भारतीय नरेशों को भारत सरकार के अधीन कर देना ही उचित है।

❀ ❀ ❀

"भारत निश्चय ही स्वतन्त्र होगा"

महात्मा गाँधी की आत्मशक्ति का अद्भुत चमत्कार !

न्यूयार्क (अमेरिका) का 'नेशन' पत्र कहता है—"सेण्टजेम्स पैलेस में महात्मा गाँधी की मौजूदगी से समता करने योग्य दृश्य संसार ने पहिले कब देखा था ? देखिए न, एक नग्न दुबला-पतला छोटा सा आदमी, जिसका भौतिक शरीर देख कर हँसी आती है, ब्रिटिश साम्राज्य के साथ सन्धि की बातचीत कर रहा है। गोलमेज़ में एक ओर गाँधी है और दूसरी ओर सारा साम्राज्य ! एक में विजयों के इतिहास की गरिमा है, जातिगौरव है, अत्याचार है, अर्थ-लोलुपता है और भय है, कि कहीं जो हेर-फेर सर पर है उसके विनाश का द्योतक तो नहीं ? साथ ही बहुत से अङ्गरेज़ों का यह भी ख़्याल है कि जो परिवर्त्तन होगा, उससे विपत्ति, अराजकता और विशृङ्खलता ही भारत में बढ़ेगी ! दूसरी ओर महात्मा गाँधी एक हाथ में अपनी बकरी के दूध की बोतल और दूसरे हाथ में छुहारे और सूखे अन्न की टोकरी लिए खड़े हैं और अपने अगण्य शरीर, धीमी, शान्ति अङ्गरेज़ी भाषा से परिकल्पना के गौरव का उदाहरण दे रहे हैं। यह क्षमाशील प्रतिरोध का सिद्धान्त है जो उन्हें इतना बल प्रदान करता है, जो उनके मुख में बैठ कर बोलता है और जो अगर अन्त तक एक रस निबाहा गया, तो निश्चय ही विजय प्राप्त करके रहेगा।

"भारतीय और अङ्गरेज़—सब की आशा के विपरीत महात्मा जी ने अपनी पहली वक्तृता में राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स में सरल, शान्त और मधुर भाषा में जो कहा, उससे सब की मानसिक चञ्चलता जाती रही और वह उस बात को कहने से भी नहीं चूके, जो वह अनेक बार कह चुके थे कि 'भारत निश्चय ही स्वतन्त्र होगा।'

आपने कहा—"यदि हम पूर्ण स्वाधीनता का निश्चय किए बैठे हैं तो उसका कारण दम्भ का भाव नहीं है, न हम यह संसार को बतलाना चाहते हैं कि देखो हमने ब्रिटिश जाति से सम्बन्ध तोड़ लिया। इसके विपरीत आप इस अनुज्ञा में देखेंगे कि कॉङ्ग्रेस का विचार साझेदारी का है ! कॉङ्ग्रेस ब्रिटिश जाति के साथ वह सम्बन्ध चाहती है जो सम्बन्ध दो बिलकुल स्वाधीन जातियों में होता है—मैं इसी दावे को जहाँ तक सम्भव है, अत्यन्त सरल, किन्तु जहाँ तक सम्भव है अत्यन्त दृढ़ता के साथ अपनी पूरी शक्ति और क्षमता के साथ पेश करने लिए यहाँ आया हूँ।"

'नेशन' महात्मा जी के उक्त शब्दों को उद्धृत करने के बाद फिर कहता है—"यद्यपि यह शब्द सरलता से कहे गए हों, किन्तु कड़े शब्द हैं और गाँधी को निश्चय ही अपनी शक्ति का पता होगा। बातचीत करने के अधिकारी की हैसियत से महात्मा जी पर यह कह कर आलोचना हुई है कि वह असङ्गत ब्योरों पर बड़ा ज़ोर देते हैं और मुस्लिम अथवा अपने परिकर की कोई स्पष्ट नीति नहीं बतलाते, जिसके अनुसार काम आगे बढ़ सके। लेकिन अब उन्होंने पूरा निश्चय कर लिया है कि साधारण सिद्धान्त पहले तय कर लिया जाय और ब्योरा या तफ़सील को बाद के लिए छोड़ दिया जाय। प्रतिनिधियों के चुनाव सम्बन्ध में जो बहस हो रही थी उसमें महात्मा जी ने कहा :—

"एक समय था कि मैं अभिमान के साथ अपने को ब्रिटिश प्रजा कहता था। अब मैं प्रजा की अपेक्षा विद्रोही कहलाना बहुत ज्यादः पसन्द करता हूँ। लेकिन फिर भी मेरी अभिलाषा थी और अब भी है कि मैं साम्राज्य का तो नहीं, पर स्वतन्त्र राष्ट्र का नागरिक बनूँ। यह साझीदारी, यदि ईश्वर को मञ्जूर है ऐसी हो जो टूट न सके, लेकिन ऐसी साझीदारी नहीं, जो एक राष्ट्र ने दूसरे राष्ट्र के गले बाँधी हो।"

फिर 'नेशन' के शब्दों में "गाँधी जी हर बार इसी एक प्रश्न पर आ जाते हैं कि भारत एक राष्ट्र हो, और राष्ट्रों की मण्डली में इङ्गलैण्ड के समान वह भी एक हो। वह यह सब कोमलता से, धीरे से और नम्रता से कहते हैं, लेकिन उनके पीछे कोटि-कोटि उनके देशवासी ऐसे हैं जिनके लिए यह एक ही स्वर और एक ही शब्द हैं। इन सब के पीछे वही भाव है, वही परिकल्पना है, वही उद्देश्य है।'

"पिछली गोलमेज़ में स्वर्गीय मुहम्मदअली ने भी यही कहा था कि "कोई भी लड़ाई में नहीं जीतता। उसमें तो बध करने को ही लालसा होती है, लेकिन हमारी ३२ करोड़ जनता भारत के उद्धार और स्वतन्त्र राष्ट्र के बनाने के लिए मरने की इच्छा रखती है।

"जब प्रजा अपने शासक से इस तरह कहती है तब मनुष्य को ऐसे शासक की शोचनीय दशा पर दया आती है; क्योंकि विश्लेषण करने पर अन्त में शासक को शासक बने रहने के लिए कोई कारण बतलाने को नहीं रह जाता है। ऐसी बात करने वाली प्रजा, प्रजा ही नहीं रहती !"

गोलमेज़ को सफल कराने का आन्दोलन

लन्दन के बड़े-बड़े अङ्गरेज़ और पादरी मन्त्रि-मण्डल के पास मेमोरियल भेजेंगे

समझदार और दबङ्ग ब्रिटिश जनता का मत इस बात पर ज़ोर से बढ़ता जाता है कि जहाँ तक हो, गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स विफल न होने पाए। यह लोग महात्मा गाँधी की इस बात को अच्छी तरह समझ गए हैं कि अगर वह ख़ाली हाथ लौटे, तो इङ्गलैण्ड को बड़े विकट बहिष्कार और ब्रिटिश व्यापार को पूरी हानि की आशा कर लेनी चाहिए। लोग समझते हैं कि गोलमेज़ का असफल होना भारत और ब्रिटेन में भारी दुर्भाव पैदा कर देगा और सविनय क़ानून भङ्ग की पराकाष्ठा होगी। इस लड़ाई के एक बार आरम्भ होने पर फिर कोई उसे रोक न सकेगा।

कहा जाता है कि इस बात का आन्दोलन ब्रिटिश समझदार समुदाय ने आरम्भ कर दिया है कि गवर्नमेण्ट को ज़ोर देकर समझाया जाय कि वह गाँधी जी के साथ सम्मानपूर्वक शर्तों पर समझौता कर ले और ऐसे सुअवसर को न चूके।

यह निश्चय हो गया है कि इस आशय का एक मेमोरियल गवर्नमेण्ट को भेजा जाय। ख़बर हो तो बड़े-बड़े पादरी, आर्क बिशप, कलर्जीमैन वग़ैरह—उस पर हस्ताक्षर करेंगे। लङ्काशायर वाले भी इस काम में रोड़ा न अटकाएँगे।

❀

माँ और मातृभूमि

[डॉक्टर धनीराम प्रेम]

[गताङ्क से आगे]

६

उस दिन की सफलता केवल विमल की ही सफलता नहीं थी, केवल उस तहसील की ही सफलता नहीं थी, केवल उस ज़िले की ही सफलता नहीं थी; वह थी एक सिद्धान्त की सफलता और उस आन्दोलन की सफलता, जो उस सिद्धान्त के आधार पर चल रहा था। जो तहसील कभी पीछे थी, वही अब अग्रगण्य गिनी जाने लगी। जिधर देखो उधर ही असहयोग, महात्मा गाँधी, कॉङ्ग्रेस, चर्ख़ा, तिलक-स्वराज्य फ़एड, खद्दर आदि की चर्चा थी।

इस सफलता के कारण ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी ने विमल को एक तहसील को ही अपने व्यक्तित्व और अपने कार्य द्वारा लाभ देने को ठीक नहीं समझा और उससे प्रार्थना की कि वह ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी का मन्त्री बन जाय। यद्यपि उस तहसील से विमल को बहुत-कुछ मोह हो गया था और वहाँ के निवासी भी उसे छोड़ना नहीं चाहते थे, फिर भी ज़िले की जनता के आह्वान से विमल पराङ्मुख न हो सका। वह उस निमन्त्रण की उपेक्षा न कर सका और उसने अन्त में ज़िले का भार उठा लिया। उसका कार्य गुरुतम महत्व तथा उत्तरदायित्व का था, क्योंकि उन दिनों असहयोग का वेग बड़े ज़ोरों पर था और प्रत्येक विभाग का काम द्रुतगति से हो रहा था। विदेशी कपड़े के व्यापारियों की दूकानों पर धरना दिया जा रहा था, शराब और ताड़ी की दूकानों पर धरना दिया जा रहा था, दफ़ा १४४ तोड़ी जा रही थी, लड़के स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार कर रहे थे, विदेशी वस्त्रों की होलियाँ जलाई जा रही थीं। और इन सब कामों का अधिनायकत्व कर रहा था विमल।

ज़िले का कलक्टर बदल गया था। दूसरा जो आया था, उसके शासन में दमन का चक्र भी पूरे ज़ोर से चलने लगा। चारों ओर गिरफ़्तारियाँ होने लगीं। लोग जेल भेजे जाने लगे, जुर्माने होने लगे, इस प्रकार नौकरशाही के अत्याचार नग्न नृत्य करने लगे और उन अत्याचारों से विमल भी बचा हुआ न रह सका।

पहले तो विमल के पीछे सी० आई० डी० के आदमी लगाए गए। जिधर वह जाता, उधर ही वे भूत की भाँति पीछे पड़ जाते। बाहर जाय, तो वे साथ थे और कहीं नगर में ही जाय, तो वे साथ थे। पहले तो विमल ने उन्हें तङ्ग करना शुरू किया। कभी-कभी वह किसी ग्राम को जाता तो पहले तो कुछ दूर पैदल चलता, ताकि सी० आई० डी० वाला भी उसके पीछे पैदल चले। परन्तु कुछ दूर पहुँच कर वह एक घोड़े पर चढ़ कर भागता और सी० आई० डी० पीछे-पीछे अपने पैरों की दौड़ लगाता। यदि कभी वर्षा हो रही होती तो विमल किसी मित्र के घर में घुस जाता और सी० आई० डी० को घण्टों बाहर उसकी प्रतीक्षा में वर्षा में भीगना पड़ता। इसी प्रकार वह अपने इन यमदूतों को नित्य छकाया करता था। अन्त में उन्होंने विमल से दया की प्रार्थना की, यह कह कर कि वे विमल के विरुद्ध नहीं थे, परन्तु पेट की ख़ातिर वे सब कुछ कर रहे थे। उनकी इन बातों को सुन कर विमल ने अपना व्यवहार बदल दिया।

परन्तु इतने ही से अधिकारी सन्तुष्ट थोड़े ही हो सकते थे। वे विमल की अग्नि-वर्षा का सामना नहीं कर सकते थे। एक बार तो वह अग्नि-वर्षा बहुत ही भीषण हो गई। जलियानवाला बाग़-दिवस मनाया जा रहा था। लोग लगभग २० सहस्र की संख्या में कम्पनी-पार्क में एकत्रित हुए थे। कुछ तो जलियानवाले की पुण्य-स्मृति इतने लोगों को खींच कर लाई थी और कुछ विमल के व्याख्यान की सूचना।

विमल का व्याख्यान हुआ। विमल के जोशीले व्याख्यान में एक वाक्य यह भी था, 'इन सब बातों के होते हुए क्या हम जलियानवाला का बदला न लेंगे?' इस पर सारी जनता एक स्वर से चिल्ला कर बोल उठी—'हम तैयार हैं, बदला लेने को।'

मीटिङ्ग के रिपोर्टर महाशय हिन्दी का अधिक ज्ञान नहीं रखते थे, परन्तु फिर भी वह रिपोर्टर थे। आपने अपनी रिपोर्ट में इस वाक्य के लिए लिख दिया—व्याख्यानदाता ने लोगों से क्रोधित वाणी में पूछा, 'क्या आप लोग इसका बदला न लेंगे?' भीड़ में सबने अपनी-अपनी लाठी सँभाली और लाठी को ऊँचा करके वे चिल्ला कर बोले—'हाँ, हम तैयार हैं।'

इस वाक्य के पीछे विमल ने कहा था—'स्वतन्त्रता की देवी रक्त की प्यासी है। जब तक उनका खप्पर रक्त से नहीं भर जाता, तब तक वह प्रसन्न नहीं होतीं। यह तो अवश्य होना है कि इस संग्राम में गली-गली में ख़ून की नदियाँ बह जायँगी। परन्तु याद रखिए, वह ख़ून किसी अङ्गरेज़ अफ़सर का न होगा, बल्कि हमारे ही देशवासियों का होगा।' रिपोर्टर साहब ने इस पूरे अवतरण को अपनी रिपोर्ट में देने की आवश्यकता नहीं समझी थी, अतः आपने उसे काट-छाँट कर मुक़दमा चलाने लायक़ बना लिया। उनकी रिपोर्ट थी—'विमल ने लोगों से कहा कि उन्हें गली-गली में शत्रु का ख़ून बहाना होगा, तब उन्हें स्वतन्त्रता मिलेगी।'

ऐसी ही साधार रिपोर्टें (रिपोर्ट का आधार स्वयं रिपोर्टर साहब का दिमाग़ था) विमल के विरुद्ध कलक्टर के यहाँ पहुँची थीं। और फल यह हुआ कि एक दिन प्रातःकाल विमल अपने स्थापित किए हुए स्वराज्य-आश्रम में गिरफ़्तार कर लिया गया।

७

विमल का गिरफ़्तार होना था कि सारे नगर में सनसनी फैल गई। जिसने सुना, वही कचहरी की ओर चल दिया। स्वयंसेवक डुग्गियाँ पीटते हुए नगर भर में चिल्लाते फिरे—'विमल गिरफ़्तार हो गए। सबको कचहरी की ओर जाना चाहिए।' बात की बात में सहस्रों की भीड़ कचहरी के आगे एकत्रित हो गई। पुलीस का बड़ा कड़ा पहरा था। अदालत के कमरों में जाने की आज्ञा केवल कुछ व्यक्तियों को ही मिली थी। उनमें ही एक ओर थीं विमल की माँ और शारदा।

विमल ने एक बार माँ की ओर देखा। माँ ने एक बार विमल की ओर देखा। विमल की आँखों ने माँ को बता दिया कि वह वीरतापूर्वक दण्ड की आज्ञा सुनेगा। माँ की आँखों ने विमल को दृढ़ रहने का उपदेश और अपना आशीर्वाद दिया। मुक़दमा क्या था, न्याय का नाटक था—गम्भीर नाटक नहीं, प्रत्युत एक 'फ़ार्स'। विमल ने पैरवी नहीं की थी, क्योंकि असहयोगियों का सिद्धान्त था अदालतों में विश्वास न करना। यह तो पहले से ही तय हो चुका था कि विमल को क्या दण्ड मिलेगा, अब उसको क़ानून का रूप दिया जा रहा था। सी० आई० डी० और सरकारी गवाहों के बयानों के बाद विमल ने अपना वक्तव्य सुनाया, जिसमें निर्भीकतापूर्वक उसने ब्रिटिश राज्य की निन्दा की थी। पीछे से उसने कहा—'मैं यह कहे देता हूँ कि जब तक भारत का एक बच्चा भी जिएगा, तब तक ब्रिटिश राज्य के प्रति जो असहयोग का झण्डा फहराया गया है, वह नीचा न होगा। या तो भारत भारतवासियों का होगा, या भारत का नाम ही संसार के पर्दे से मिट जायगा।'

उसके इतना कहते ही कचहरी 'वन्देमातरम्' और 'महात्मा गाँधी की जय' के नाद से गूँज उठी। मैजिस्ट्रेट ने विमल को एक वर्ष के सपरिश्रम कारावास का दण्ड दिया था।

माँ और बेटा तथा बहिन और भाई का मिलन था; माँ का बेटा और बहिन का भाई एक वर्ष के लिए उनसे छीना जा रहा था।

'विमल!'

'माँ!'

'तुम जानते हो, मेरे लिए यह अवसर कितनी प्रसन्नता का है?'

'हाँ, माँ।'

'तुम्हारे पिता के बाद तुम्हारा भी कुछ बलिदान मातृभूमि की वेदी पर चढ़ जाय, यही मेरी इच्छा थी।'

'मैं अपना कर्तव्य तुम्हारे आशीर्वाद से पूरा कर रहा हूँ, माँ!'

'तुम्हारे पीछे शारदा तुम्हारे काम को पूरा करेगी।'

शारदा के मुख पर अभिमान और वीरता की एक रेखा दौड़ गई।

'क्यों, शारदा?'—विमल ने पूछा।

'हाँ, भैया।'

'एक बात और है, शारदा।'

'क्या, भैया?'

'मातृभूमि के साथ ही माँ की सेवा। इसे न भूलना, बहिन! हम लोगों के लिए माँ क्या हैं, यह तुम जानती हो।'

'माँ की तुम चिन्ता न करना, बेटा!' माँ ने कहा।

'यह कैसे हो सकेगा, माँ? यदि जेल में मुझे कोई बात बाहर की याद आएगी, तो वह होगी मेरी माँ। तुम्हारे लिए मैं अभी तक कुछ नहीं कर सका हूँ।'

'बहुत-कुछ कर सकोगे, विमल! परन्तु अभी, इस समय, मुझे अपने मानसिक जगत से निकाल दो!'

'अच्छा, माँ।'

विमल ने माता के पैर छुए और बहिन को हृदय से लगा लिया। माता और बहिन ने उसे हार पहनाए और उसका तिलक किया। पुलीस वाले विमल को जेल की ओर ले चले। 'विमल की जय' के नारे जनता ने लगाए। जब विमल आँखों से ओझल हो गया, तो माँ और शारदा की आँखों में दो-दो आँसू थे।

८

जेल की खिड़की खुली और विमल ने भीतर प्रवेश किया। उस छोटी सी खिड़की के बन्द होते ही विमल को ऐसा प्रतीत होने लगा मानो किसी ने उसे संसार से बाहर निकाल कर पीछे से उसका द्वार बन्द कर लिया हो। सन्ध्या का समय था, अतः उसकी भेंट जेलर या सुपरिण्टेण्डेण्ट से नहीं हुई। एक वार्डर ने उसको अपने चार्ज में ले लिया।

उन दिनों से कुछ पहले राजनैतिक क़ैदियों को 'प्रथम' और 'द्वितीय' श्रेणी में विभक्त कर दिया जाता था। 'प्रथम' श्रेणी वाले पहले आगरा जेल में रक्खे गए थे, पीछे उन्हें लखनऊ जेल भेज दिया गया था। उन्हें खाने-पीने के लिए १।) रोज़ मिलता था, तथा अन्य सभी सुविधाएँ दी जाती थीं। द्वितीय श्रेणी वालों को फ़ैज़ाबाद जेल में रक्खा गया था। इन्हें इतनी सुविधाएँ प्राप्त नहीं थीं, जितनी प्रथम श्रेणी वालों को थीं। इन्हें भोजन जेल से ही मिलता था, अपने पास से वे नहीं मँगा सकते थे। पत्र भेजने और अपने मित्रों से मुलाक़ात करने की इन्हें उतनी सुविधा नहीं थी, जितनी प्रथम श्रेणी वालों को।

यह प्रबन्ध कुछ महीनों तक ही रहा था, क्योंकि सरकार ने देखा कि इस प्रकार तो राजनैतिक क़ैदियों की संख्या सीमा से बाहर हो जायगी। अतः कुछ समय के अनन्तर ही राजनैतिक अपराधियों को साधारण क़ैदियों की भाँति ही रक्खा जाने लगा। उन्हें साधारण क़ैदियों के साथ ही बैरकों में बन्द किया जाता था। उन्हीं का सा भोजन दिया जाता था। उन्हीं की भाँति उनको काम दिया जाता था—चक्की, रामबाँस की कुटाई, मूँज की रस्सी बँटना, ईंटों को तोड़ना आदि। इन्हें छः महीने में एक बार अपने मित्रों से मिलने की आज्ञा होती थी और छः महीने में ही एक बार पत्र-व्यवहार की आज्ञा थी। इस प्रकार उनको राजनैतिक क़ैदी न मान कर साधारण अपराधी ही माना जाता था।

विमल भी एक साधारण क़ैदी बनाया गया था, अतः उसको कोई भी विशेष सुविधा मिलने की मनाही थी। परन्तु चूँकि जेलर उस समय वहाँ नहीं था, वार्डर ने बिना जाने विमल की माता के भेजे हुए फल और बिस्तर उसे दे दिए। अभी तक विमल ने जेल के विषय में सुना ही था, उसे देखा नहीं था! और सुने भी थे प्रथम और द्वितीय श्रेणी के क़ैदियों के विवरण। अतः उसकी यह धारणा थी कि जेलख़ाना एक ऐसा स्थान है, जहाँ एक व्यक्ति की स्वाधीनता अपहरण कर ली जाती है, परन्तु वह रक्खा जाता है एक मनुष्य की भाँति। उसके मस्तिष्क में द्वितीय श्रेणी और प्रथम श्रेणी के क़ैदियों का जेल घूम रहा था। उसे यह पता न था कि साधारण क़ैदियों का जेल उससे बिलकुल ही भिन्न था, उन दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर था। अतः जब विमल को अपनी चप्पलें बाहर ही छोड़ देने को कहा गया, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

'यह किस लिए?'—उसने वार्डर से पूछा।

'यहाँ का नियम है।'

'यह अच्छा नियम है। क्या बिना चप्पल के ही क़ैदियों को रहना पड़ता है?'

'यह जेलख़ाना है, दफ़्तर नहीं है।'

'परन्तु मैं इसका विरोध करूँगा।'

'विरोध कल करना, जब जेलर के सामने पहुँचो।'

चप्पलें विमल से ले ली गईं। सन्ध्या का समय था, क़ैदी अपनी अपनी बैरकों में जा चुके थे, अतः जमादार को विमल के लिए एक बैरक का द्वार खोलना पड़ा। वह बैरक बड़ी लम्बी थी, लगभग ८० क़ैदी उसमें सोए हुए थे। वह एक घुड़साल मालूम देती थी। थोड़ी-थोड़ी दूर पर मिट्टी के ओटे बने हुए थे, जो चारपाई के बराबर ऊँचे थे, परन्तु उसके बराबर चौड़े नहीं थे। एक व्यक्ति उस पर भली-भाँति करवट भी नहीं बदल सकता था। उन्हीं ओटों पर वे अभागे क़ैदी पड़े हुए थे। एक-दूसरे से बातें कर रहे थे, परन्तु धीरे-धीरे और अपने-अपने ओटे से ही। जमादार का डण्डा उनके सामने था। विमल को खादी के कुर्ता-टोपी पहने देख कर सारे क़ैदी समझ गए कि वह गाँधी का चेला था। भय होते हुए भी क़ैदी अपनी लालसा को न रोक सके और जिस ओटे पर विमल को स्थान मिला था, उसके चारों ओर वे इकट्ठे हो गए। विमल को वे अपने संसार के व्यक्ति मालूम नहीं पड़े। उसने अपने संसार में भी क़ानून के अपराधियों को देखा होगा, परन्तु वहाँ उसको उनमें कोई विशेषता नहीं दिखाई दी थी, क्योंकि वहाँ उनकी संख्या पूरी जनता में बहुत छोटी थी। यहाँ वह बात न थी। यहाँ वे ही वे थे। अतः विमल को वे एक विचित्र प्रकार के प्राणी प्रतीत हुए।

'गाँधी बाबा के चेला हैं आप?'—उनमें से एक ने प्रश्न किया।

'हाँ।'

वे सब प्रसन्न हुए।

'गाँधी बाबा अच्छी तरह हैं?'

'ख़ूब अच्छी तरह!'

'अब स्वराज्य कब लाएँगे वह?'

'लाएँगे कहाँ से?'

'अङ्गरेज़ों से छीनेंगे नहीं?'

'छीनने में अभी कुछ दिन हैं।'

'जल्दी हो जाय तो अच्छा है।'

'तुम लोगों को क्यों जल्दी है?'

'हमारा भी तो उद्धार हो जायगा। जब गाँधी बाबा का राज होगा, तो हम सब लोग जेलख़ाने से छोड़ दिए जाएँगे।'

'परन्तु जिन्होंने चोरी और हत्या की है, वे तो स्वराज्य में भी जेल में रक्खे जायँगे।'

'यह क्यों?'

'तो क्या तुम लोग समझते हो कि स्वराज्य में चोरों और हत्यारों को दण्ड ही न दिया जायगा? स्वराज्य में तो सबको यही शिक्षा दी जायगी कि कोई ऐसे अपराध न करे।'

'परन्तु हम समझते थे कि स्वराज्य में सबको खुला छोड़ दिया जायगा, जिसकी जो इच्छा हो, सो करे।'

इतने ही में क़ैदी-जमादार ने जमादार के आने की सूचना दी और सब क़ैदी चुपचाप अपने-अपने ओटों पर चले गए। विमल अपने ओटे पर पड़ा इन क़ैदियों के विचारों के विषय में सोचता रहा। उनके स्वराज्य का अर्थ क्या था, यह विचार कर उसे बड़ी हँसी आई। इसी प्रकार वह कुछ देर तक इन बातों पर और कुछ देर अपने मुक़दमे पर, अपने बाह्य संसार के दृश्यों पर विचार करता रहा। पहली रात थी, जोश के बाद की रात्रि थी, बाहरी संसार की विजय की रात्रि थी, अतः जेल के वातावरण का विमल के हृदय पर विशेष प्रभाव न पड़ा। परन्तु कुछ देर बाद ही उसे प्रतीत होने लगा कि वह जेल में था। क़ैदी-जमादार ने एक ओर से क़ैदियों को गिनना शुरू किया और जब वह उन्हें गिन चुका तो बड़े ज़ोर से चिल्ला कर वह बोला—

'अस्सी क़ैदी, ताला, जँगला, बेल, लालटेन सब ठीक है साहेब!'

ऐसी ही आवाज़ें विमल को प्रत्येक कोने से सुनाई पड़ीं। प्रत्येक बैरक में यही हो रहा था। 'यह क्या बला है?'—विमल ने अपने पास वाले एक क़ैदी से पूछा।

'सङ्गीत!'—उसने हँस कर उत्तर दिया।

'क्या?'

'सङ्गीत, जेल का सङ्गीत! क्या अच्छा नहीं लगता?'

'अच्छा? कानों के पर्दे फटे जाते हैं!'

'अभी से?'

'क्यों, क्या नित्य ऐसा ही होता है?'

'नित्य।'

'कै बार?'

'घण्टे में बारह बार।'

'बारह बार? हर पाँच मिनट बाद?'

'हाँ!'

'हे भगवान! नींद कैसे आती होगी?'

'क़ैदी की नींद की परवाह उतनी नहीं है, जितनी उसके खो जाने की। देखो न, सरकार की हम कितनी मूल्यवान सम्पत्ति हैं। हर पाँच मिनट बाद ही हमारी गिनती होती है। रुपयों का हिसाब भी मिनटों में न रहता होगा।'

विमल चुप हो गया। कहता ही क्या? करवटें बदलता रहा और भावी जीवन की कल्पना करता रहा। बड़े उद्योग से कई घण्टे बाद उसकी आँख लगी। वह स्वप्न देखने लगा, घर के पलँग के। वह घर अपने पलँग पर सो रहा था। उसने करवट लिया, यह समझ कर कि वह घर पलँग पर ही लेटा हुआ था। धम से नीचे जा गिरा। उसे अब विदित हो गया कि ओटे पर करवट लेने के लिए भी जागने की आवश्यकता थी। नींद उचट गई। फिर उसका आना कठिन हो गया। इतने में जेल के फाटक के घण्टे पर बारह बजे। सारे जेल में खलबली मच गई। विमल की बैरक के क़ैदियों को क़ैदी-जमादार जगाने लगा।

'यह किस लिए?'—विमल ने पूछा।

'गिनती होगी।'

'तो उठने की क्या आवश्यकता है?'

'ज़मीन पर बैठ कर गिनती होगी।'

'अब यह क्या हो गया? अभी तक तो पड़े-पड़े गिनती हो रही थी।'

'पहरा बदला है। दूसरा जमादार पहले से तालियाँ लेगा।'

इस अदला-बदली ने नाक में दम कर दिया। क्या ये ही जेल की रातें थीं? न सोते चैन, न जागते। चारों ओर, हर समय शोर। क्या क़ैदियों को गिनने का अर्थ यह था कि उन्हें तमाम दिन के कठिन परिश्रम के बाद, जमादारों और जेलरों के लात-डण्डे खाने के बाद कुछ घण्टे चैन की नींद भी न सोने दिया जाय? कितनी अमानुषिकता का था वह व्यवहार! उस समय विमल के हृदय में दो विचार काम कर रहे थे। एक तो क़ैदियों के प्रति दया का था और दूसरा जेल-जीवन की कल्पना का। पहले से वह दुखी होता, दूसरे से काँप जाता। इसी प्रकार उसकी रात व्यतीत हुई।

प्रातःकाल हुआ। घण्टी बजते ही सारे क़ैदी जाग पड़े। उनकी फिर गिनती हुई, क्योंकि अब दिन वाले जमादार ने पहरा अपने हाथ में लिया था। मूँछों पर ताव दिए, जमादार वहाँ आकर अपना शासन दिखाने लगा, मानो जेल उसके बाबा का घर था और वह उसका एकमात्र वारिस था।

'जल्दी करो, तुम्हारी......।' उसने हुक्म दे

दिया। क़ैदी अपना तसला पानी से भर कर शौच करने गए। ओफ़, कितना दारुण दृश्य था, विमल देख कर सिहुर गया। शौच के स्थान पर कोई अपना परदा नहीं रख सकता था। सारा स्थान सामने से खुला हुआ था। यही नहीं, उस स्थान के बाहर, खुले हुए मैदान में, क़ैदी लाइन लगाए बैठे थे, उसी प्रकार जिस प्रकार ब्राह्मण लोग किसी के मृतक संस्कार के समय सामने पत्तलें डाल कर एक लाइन में बैठ जाते हैं। पुराने क़ैदी तो इन बातों के अभ्यस्त हो जाते थे, परन्तु कठिनता प्रतीत होती थी उनको, जो नए ही आते थे। सब के सामने इस प्रकार बैठना ही पड़ता, तब भी ग़नीमत थी; परन्तु वहाँ तो इससे भी अधिक यन्त्रणा भुगतनी पड़ती थी—घण्टी या सीटी बजने पर ही शौच से फ़ौरन उठना पड़ता था, चाहे शौच से निवृत्ति हुई हो या नहीं।

कुछ ही देर में हाथ-मुँह धोकर सारे क़ैदी लाइन लगा कर बैठ गए। लोहे की कटोरियों में पानी भरा था और लोहे के तसले ख़ाली सामने रक्खे थे। एक जमादार के साथ एक क़ैदी एक लोहे की बाल्टी उठा कर लाया। बाल्टी के भीतर काला-काला दलिया भरा था और उसी में लोहे का एक काला करछुल पड़ा था। उसी करछुल से दलिया सब क़ैदियों को मिला। विमल को उस लाइन में बैठना न पड़ा। उसका दलिया उसे बैरक में ही मिल गया, परन्तु उस दलिया को वह खा न सका। कोई भी मनुष्य, जब तक कि वह अत्यन्त क्षुधा-पीड़ित न हो, उसे खाना क्या, उसे सूँघ भी न सकता था। वह काला ही न था, उसमें बदबू भी आती थी। और पानी इतना था कि ग़ोते लगाने पर भी दलिया का एक दाना पाना अत्यन्त दुष्कर था।

विमल ने अब तक जो कुछ भी देखा था, वह बहुत ही थोड़ा था। वह तो जेल-जीवन का केवल एक नमूना मात्र था। परन्तु इतने ही से विमल को अपने भावी जेल-जीवन का आभास हो गया। यह सब हो जाने पर वह दफ़्तर के पास लाया गया और कई घण्टे की प्रतीक्षा के बाद उसने जेलर, सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा डॉक्टर के दर्शन किए। वह तौला गया, उसके शरीर की परीक्षा हुई। उसका इतिहास लिखा गया, उसको शिक्षा दी गई, उसके सामने जेल के कठिन जीवन की व्याख्या की गई और माफ़ी माँग लेने के लाभों पर उसके सामने एक भाषण दिया गया।

इन सब के अनन्तर जब वह एक पूरा और वास्तविक क़ैदी हुआ तो उसके शरीर पर जेल के वस्त्र—एक कुर्ता, एक जाँघिया, एक टोपी—थे, उसके बग़ल में एक कम्बल, एक मूज का फट्टा थे तथा उसके हाथ में एक तसला और एक कटोरी थे। उसकी सारी वस्तुएँ उससे छीन ली गई थीं।

(क्रमशः)

* * *

'ब्लॉक' हमसे ख़रीदिए !

'चाँद' तथा 'भविष्य' में छपे हुए इकरङ्गे ब्लॉक यदि कोई सज्जन ख़रीदना चाहें तो उन्हें वे आधे मूल्य अर्थात् ३ आने प्रति वर्ग इञ्च के हिसाब से दे दिए जावेंगे; किसी भी छोटे ब्लॉक का मूल्य २) से कम न होगा। डाक-ख़र्च ख़रीदार को देना होगा।

'भविष्य' चन्द्रलोक—इलाहाबाद

विश्व-दर्शन

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर]

स्वीट्ज़रलैण्ड का शासन-विधान

Among the modern democracies which are true democracies, Switzerland has the highest claim to be studied. . . . It contains a greater variety of institutions based on democratic principles than any other country.

—*Lord Bryce.*

स्वीट्ज़रलैण्ड यूरोप का एक छोटा सा राष्ट्र है। वहाँ की जनता किसी एक जाति की नहीं है। उनकी कोई राष्ट्र-भाषा भी नहीं है। वहाँ अधिकतर जर्मन-भाषा बोली जाती है। इसके सिवा कुछ भागों में फ़्रान्स और इटली की भाषाएँ भी बोली जाती हैं। यही नहीं, स्वीटज़रलैण्ड की जनता किसी एक धर्म को भी नहीं मानती। स्वीटज़रलैण्ड में कुल २२ प्रान्त हैं। इनमें बारह प्रान्तों की अधिकांश जनता प्रोटेस्टैण्ट धर्म को मानती है, शेष १० प्रान्तों की अधिकतर जनता कैथोलिक धर्म की अनुयायिनी है। फलतः स्वीटज़रलैण्ड में उन बहुत सी बातों का अभाव है, जो राष्ट्र-निर्माण के लिए अत्यावश्यक समझी जाती हैं। फिर भी स्वीटज़रलैण्ड एक राष्ट्र है और वहाँ की जनता अपने को एक समझती है। यहाँ तक कि यूरोप के किसी भी राष्ट्र की जनता इतनी देशाभिमानिनी नहीं है, जितनी स्वीटज़रलैण्ड की।

आज से ६०० वर्ष पहिले आल्पस् पहाड़ की घाटियों में बसे हुए तीन प्रान्तों ने शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिए आपस में मिल कर अपना एक गुट्ट बनाया था। क्रमशः अन्य प्रान्त भी इस गुट्ट में शामिल होने लगे। यहाँ तक कि कुछ दिनों के बाद इस गुट्ट में १३ प्रान्त शामिल हो गए। तत्पश्चात् उपर्युक्त गुट्ट को 'स्विस कॉनफ़ेडरेसी' (Swiss Confederacy) के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। उसके पड़ोसी राष्ट्रों ने स्वीटज़रलैण्ड पर बार-बार धावे किए, पर उन्हें सर्वदा अपने मुँह की खानी पड़ी। अन्त में सन् १६४८ में वेस्टफ़ेलिया की सन्धि द्वारा यूरोप के राष्ट्रों ने उपर्युक्त कॉनफ़ेडरेसी को स्वतन्त्रता तथा स्वाधीन राष्ट्र मान लिया। उपर्युक्त कॉनफ़ेडरेशन की कोई स्थायी केन्द्रीय सरकार न थी। प्रत्येक प्रान्त पूर्णतया स्वतन्त्र था और उसके कार्यों में कभी हस्तक्षेप नहीं किया जाता था। सब प्रान्तों से सम्बन्ध रखने वाले किसी प्रश्न के उपस्थित होने पर सब प्रान्तों के प्रतिनिधियों की एक सभा (Congress) बुलाई जाती थी और यही सर्व-सम्मति से कोई निर्णय करती थी, बहुमत का कार्य अल्पमत पर लागू नहीं होता था।

सन् १७८९ में फ़्रान्स की क्रान्ति के प्रारम्भ होते ही स्वीटज़रलैण्ड पर आफ़त आ पड़ी। सन् १७९८ में फ़्रान्स की सेनाओं ने स्वीटज़रलैण्ड को धर दबाया और स्वीटज़रलैण्ड को फ़्रान्स का ग़ुलाम बनना पड़ा। परन्तु स्वीटज़रलैण्ड की जनता इस ग़ुलामी को पसन्द नहीं करती थी। उसने विदेशी शासन के विरुद्ध विद्रोह आरम्भ कर दिया। अन्त में नेपोलियन ने शासनारूढ़ होने पर स्वीटज़रलैण्ड के प्राचीन कॉनफ़ेडरेशन को पुनर्जीवित किया और साथ ही एक फ़ेडरेल कॉङ्ग्रेस की भी स्थापना की, जिसमें तमाम प्रान्तों के प्रतिनिधि शामिल थे।

सन् १८१५ में वीयना की कॉङ्ग्रेस ने तीन अन्य प्रान्तों को भी 'कॉनफ़ेडरेसी' में शामिल होने की आज्ञा दे दी। इस तरह सभी प्रान्त कॉनफ़ेडरेसी में हो गए।

सन् १८४७ में स्वीटज़रलैण्ड में एक गृह-युद्ध हुआ। कैथोलिक प्रान्तों ने प्रोटेस्टैण्ट प्रान्तों से अपनी रक्षा करने के लिए गुट्ट बनाया और अपनी सहायता के लिए फ़्रान्स तथा ऑस्ट्रिया को बुलाने को तैयार हो गए। यही उस गृह-युद्ध का कारण था। इस युद्ध में प्रोटेस्टैण्ट प्रान्त विजयी हुए और कैथोलिक प्रान्तों का गुट्ट छिन्न-भिन्न कर दिया गया। परन्तु इस गृह-युद्ध का एक शुभ परिणाम यह हुआ कि जनता समझ गई कि उसका कॉनफ़ेडेरेशन अत्यन्त कमज़ोर है और उसे मज़बूत बनाने की आवश्यकता है। साथ ही उसने एक ऐसे नवीन विधान की आवश्यकता का अनुभव किया, जिसके द्वारा अल्पमत के अधिकारों की रक्षा हो सके। विधान तैयार करने के लिए एक कमिटी नियुक्त की गई। उसने एक विधान बनाया, जो सन् १८४८ में सब प्रान्तों द्वारा मान लिया गया। इस विधान ने एक फ़ेडरेशन की भी स्थापना की। परन्तु फ़ेडरेल सरकार के अधिकार पर्याप्त न थे, इसलिए सन् १८७४ में विधान में संशोधन किया गया। यह संशोधित विधान ही स्वीटज़रलैण्ड का वर्तमान विधान है।

जनता के बहुमत की सम्मति के बिना इस विधान में कोई परिवर्तन या संशोधन नहीं किया जा सकता। ऐसे किसी भी प्रश्न को जनता के सम्मुख लाने के लिए दो उपाय हैं, या तो फ़ेडरेल कॉङ्ग्रेस ऐसा कर सकती है या पचास सहस्र वोटर प्रार्थना-पत्र (Initiative petition) द्वारा ऐसा करा सकते हैं। विधान में संशोधन करने का ढंग भी सरल नहीं है, परन्तु अमेरिका की अपेक्षा स्वीटज़रलैण्ड में संशोधन सरलता से किए जा सकते हैं।

स्वीटज़रलैण्ड एक फ़ेडरेल प्रजातन्त्र है। उसके सभी प्रान्त स्वाधीन हैं, जहाँ तक उनकी स्वाधीनता में फ़ेडरेल-विधान द्वारा कोई कमी नहीं की गई है। फ़ेडरेल सरकार को वही अधिकार प्राप्त हैं, जो उसे प्रान्तों द्वारा दिए गए हैं। शेष सारे अधिकार प्रान्तों के हैं। प्रान्तों के अपने अलग-अलग विधान हैं। प्रत्येक प्रान्त अपना विधान जैसा चाहे, रख सकता है। केवल उसे तीन बातों को अवश्यमेव मानना पड़ता है। यानी प्रत्येक प्रान्त की एक प्रजातन्त्रीय सरकार होनी चाहिए, जनता के बहुमत द्वारा विधान में परिवर्तन या संशोधन होना चाहिए और प्रान्त के विधान में फ़ेडरल-विधान के विरुद्ध कुछ न होना चाहिए।

फ़ेडरेल सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों के बीच अमेरिका के ढङ्ग पर अधिकार बाँटे गए हैं। वैदेशिक सम्बन्ध पर फ़ेडरेल सरकार का अधिकार रहता है। पर विधान में कहा गया है कि फ़ेडरेल सरकार की सम्मति के बाद प्रान्त भी कुछ बातों के सम्बन्ध में अन्य देशों से समझौता कर सकते हैं। फ़ेडरेल सरकार ही युद्ध तथा शान्ति की घोषणा करती है तथा सन्धियाँ करती है। सैनिक योजना (Military System) पर फ़ेडरेल सरकार का ही अधिकार रहता है। डाक-विभाग, रेल-विभाग तार तथा टेलीफ़ोन-विभाग, करेन्सी तथा बैङ्क—ये सभी फ़ेडरेल सरकार के आधिपत्य में ही काम करते हैं। फ़ेडरेल सरकार ही काग़ज़ का सिक्का भी चला सकती है। इसके सिवा कुछ ऐसे विषय भी हैं जिनका सञ्चालन दोनों सरकारें करती हैं।

फ़ेडरेल धारा-सभा की दो शाखाएँ होती हैं, एक बड़ी और दूसरी छोटी। बड़ी सभा को 'कौन्सिल ऑफ़ स्टेट' (Council of State) और छोटी को राष्ट्रीय कौन्सिल (National Council) कहते हैं। कौन्सिल ऑफ़ स्टेट में प्रत्येक प्रान्त के दो सदस्य होते हैं। इनका चुनाव प्रान्तों की इच्छानुसार होता है। कुछ प्रान्तों में इनको जनता चुनती है और शेष प्रान्तों में इनका चुनाव प्रान्तीय धारा-सभा द्वारा होता है। सदस्यों की अवधि एक वर्ष से चार वर्ष तक रहती है। कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के कोई विशेष अधिकार नहीं होते। इसके छोटी सभा के बराबर ही क़ानूनी अधिकार हैं। पर वास्तव में क़ानूनों के निर्माण में इसका हाथ बहुत कम रहता है।

छोटी सभा या राष्ट्रीय कौन्सिल में २०० सदस्य होते हैं। ये सदस्य सभी प्रान्तों में आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Proportional Representation) के सिद्धान्त पर चुने जाते हैं। प्रत्येक तृतीय वर्ष चुनाव होता है। स्वीट्ज़रलैण्ड के प्रत्येक पुरुष नागरिक को, जिसकी उम्र बीस वर्ष की पूरी हो चुकी है, मताधिकार दिया गया है। प्रत्येक मताधिकारी यदि पादरी नहीं है तो, चुनाव में उम्मेदवार हो सकता है। राष्ट्रीय कौन्सिल की वर्ष में दो बैठकें होती हैं। आवश्यकता पड़ने पर तीसरी बैठक भी हो सकती है। एक बैठक अधिकतर चार सप्ताह के अन्दर समाप्त हो जाती है। कौन्सिल अपना सभापति स्वयम् चुनती है। इसके अधिकार वही हैं जो ऐसी सभाओं के आमतौर से होते हैं। सदस्य जर्मन, फ़्रान्स तथा इटली की भाषाओं में बोलते हैं। किसी भी एक बैठक में उपर्युक्त सभी भाषाएँ बोली जाती हैं। इसमें कोई विशेष कठिनाई उपस्थित नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक शिक्षित नागरिक ये सभी भाषाएँ जानता है। तीनों भाषाएँ सरकारी भाषाएँ मानी जाती हैं। फलतः अधिकतर सरकारी काग़ज़ तीनों भाषाओं में छपते हैं। स्वीट्ज़रलैण्ड की पार्लामेण्ट के बर्ताव की अनेक विद्वानों ने प्रशंसा की है।

प्रत्येक 'बिल' दोनों सभाओं में एक साथ ही पेश किया जाता है। फलतः प्रत्येक 'बिल' पर दोनों सभाएँ स्वतन्त्रता से विचार करती हैं। दोनों सभाओं का कोई भी सदस्य 'बिल' पेश कर सकता है। पर अधिकतर आवश्यकीय 'बिल' मन्त्रि-मण्डल या फ़ेडरेल कौन्सिल द्वारा पेश किए जाते हैं। कोई भी सभा एक प्रस्ताव द्वारा किसी विशेष विषय पर एक 'बिल' बनाने की मन्त्रि-मण्डल से प्रार्थना कर सकती है॥

कमिटी का कार्य आवश्यक नहीं समझा जाता। केवल आवश्यकीय बातें किसी सभा की आज्ञा पर कमिटी के पास भेजी जाती हैं। अन्यथा कमिटियों से काम नहीं लिया जाता। जब तक दोनों सभाएँ किसी बिल को पास न कर दें, तब तक वह क़ानून नहीं बन सकता। यदि कोई एक सभा किसी बिल को रद्द कर देती है या उसमें संशोधन करती है तो दोनों सभाओं के प्रतिनिधियों की एक कॉन्फ्रेन्स होती है और दोनों सभाओं की एक राय की जाती है। आमतौर पर बड़ी सभा छोटी सभा का विरोध नहीं करती।

दोनों सभाओं की बैठकें अपने-अपने सभा-भवन में पृथक-पृथक होती हैं। कुछ अवसरों पर तथा कुछ मामलों के लिए उनकी संयुक्त बैठकें भी होती हैं। संयुक्त सभा में ही उच्च पदाधिकारी चुने जाते हैं—जैसे मन्त्रि-मण्डल के सदस्य, चान्सलर, फ़ेडरेल अदालत के न्यायाधीश, तथा फ़ेडरेल सेना के प्रधान सेनापति। फ़ेडरेल अधिकारियों के अधिकारों में सङ्घर्ष होने पर संयुक्त सभा ही निर्णय करती है। संयुक्त सभा ही क्षमादान (Pardons) देती है और इसके लिए संयुक्त सभा की वर्ष में दो बैठकें होती हैं!

स्वीट्ज़रलैण्ड का शासन फ़ेडरेल कौन्सिल द्वारा होता है जिसे मन्त्रि-मण्डल भी कहते हैं। इस कौन्सिल में सात सदस्य होते हैं। ये सदस्य दोनों सभाओं की संयुक्त सभा द्वारा चुने जाते हैं। प्रत्येक चुनाव के बाद कौन्सिल का निर्माण होता है। सदस्यों का कार्य-काल तीन वर्ष का होता है, बशर्ते कि छोटी सभा इसी बीच में तोड़ न दी जावे। आमतौर से ये सदस्य दोनों सभाओं के सदस्यों में से चुने जाते हैं, परन्तु बहुधा बाहर के लोग भी चुने जा सकते हैं। चुन लिए जाने पर वे सदस्य सभा की सदस्यता से त्याग-पत्र दे देते हैं और रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए पुनः चुनाव होता है। कौन्सिल के पुराने सदस्य को कौन्सिल के लिए फिर चुनने का रिवाज़ हो गया है। फलतः कौन्सिल का एक सदस्य जब तक वह चाहे कौन्सिल का सदस्य बना रहता है।

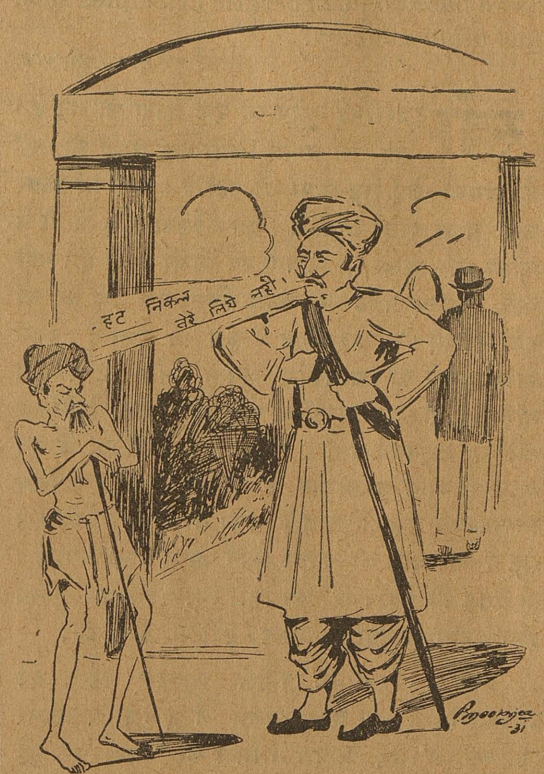

यह ग़ार्डन पार्टी तेरी तरह मरभुक्खों के लिए नहीं, साहब लोगों के लिए है!

प्रत्येक वर्ष कौन्सिल का एक सदस्य कौन्सिल का सभापति चुना जाता है। वही देश भर का प्रेज़ीडेण्ट होता है। पर कौन्सिल की बैठकों का सभापति होने के अलावा विधान ने उसे और कोई आवश्यकीय अधिकार नहीं दिए हैं। पर अब वह प्रचलित प्रथा के अनुसार तमाम शासकीय विभागों का निरीक्षक हो गया है। तथा फ़ेडरेल कौन्सिल अपने नाम पर काम करने का उसे अधिकार दे सकती है। बहुधा विशेष अवसरों पर कौन्सिल ऐसा करती भी है। पर इस हैसियत से प्रेज़ीडेण्ट जो कार्य करता है वह उस समय तक लागू नहीं होता, जब तक कि उन पर कौन्सिल की सही न हो जावे।

फ़ेडरेल कौन्सिल के एक सदस्य को संयुक्त सभा वाइस-प्रेज़ीडेण्ट भी चुनती है। प्रेज़ीडेण्ट की अनुपस्थिति में वाइस-प्रेज़ीडेण्ट कौन्सिल का सभापति होता है। दूसरे वर्ष वाइस-प्रेज़ीडेण्ट ही प्रेज़ीडेण्ट बना दिया जाता है। चान्सलर फ़ेडरेल कौन्सिल का सदस्य नहीं होता। पर वह भी संयुक्त सभा द्वारा ही चुना जाता है। स्वीट्ज़रलैण्ड के चान्सलर को फ़ेडरेल सरकार का जनरल सेक्रेटरी समझना चाहिए। सरकारी काग़ज़ों को वही रखता है। क़ानूनों, प्रस्तावों तथा सरकारी काग़ज़ों पर वह सही करता है। चुनाव उसी की निगरानी में होते हैं। चान्सलर के पद का कोई राजनीतिक महत्त्व नहीं होता। वह केवल एक क्लर्क के समान होता है।

फ़ेडरेल कौन्सिल ही प्रजातन्त्र की प्रधान शासन संस्था है। इसे प्रजातन्त्र का मन्त्रि-मण्डल समझना चाहिए। इस पर पार्लामेण्ट का पूरा अधिकार रहता है तथा दोनों सभाओं द्वारा स्वीकृत सभी प्रस्तावों को फ़ेडरेल कौन्सिल को अवश्यमेव मानना पड़ता है। फ़ेडरेल कौन्सिल ही वैदेशिक नीति का भी सञ्चालन करती है। इसके सिवा वह क़ानूनों को कार्यान्वित करती है और फ़ेडरेल सेना पर भी अधिकार रखती है। शेष उन तमाम पदाधिकारियों को नियुक्त करती है जो संयुक्त सभा द्वारा नियुक्त नहीं किए जाते। वार्षिक बजट भी इसी कौन्सिल द्वारा तैयार किया जाता है। वह अपने कार्यों की वार्षिक रिपोर्ट पार्लामेण्ट के सन्मुख रखती है। किसी भी समय तथा किसी भी प्रश्न पर कौन्सिल के सदस्यों से पार्लामेण्ट में प्रश्न किए जा सकते हैं। पार्लामेण्ट के विचारार्थ कौन्सिल ही 'बिल' तैयार करती है। व्यक्तिगत सदस्यों द्वारा पार्लामेण्ट में जो 'बिल' उपस्थित किए जाते हैं उस पर भी सदा कौन्सिल की राय ले ली जाती है। बहुधा पार्लामेण्ट प्रस्ताव द्वारा भिन्न-भिन्न कार्यों पर आज्ञाएँ तथा डिग्रियाँ जारी करने का अधिकार कौन्सिल को दे देती है। विधायक क़ानूनों के मतभेदों को कौन्सिल ही निपटाया करती थी। पर अब उसका यह अधिकार उससे लेकर फ़ेडरेल अदालतों को दे दिया गया है। फ़ेडरेल कौन्सिल ही प्रजातन्त्र की उच्चतम शासकीय अदालत है। कौन्सिल की प्रति सप्ताह दो बैठकें होती हैं। आवश्यकता पड़ने पर तीसरी बैठक भी हो सकती है। इसकी बैठकें गुप्त होती हैं तथा निर्णय बहुमत से ही होता है। बहुधा महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर कौन्सिल के सदस्यों का भिन्न-भिन्न मत होता है। यही नहीं, कौन्सिल के सदस्य पार्लामेण्ट में किसी प्रश्न के पक्ष-विपक्ष में बोल कर अपने मतभेद को जनता में प्रगट कर देते हैं। मतभेद के कारण कौन्सिल के किसी सदस्य को स्तीफ़ा नहीं देना पड़ता। अगर कौन्सिल के 'बिल' को पार्लामेण्ट रद्द भी कर देती है तो सदस्यों को त्यागपत्र नहीं देना पड़ता। वे पार्लामेण्ट की राय को मान लेते हैं और उसके आदेश को कार्यान्वित करते हैं। उपर्युक्त कारणों से कौन्सिल और भी अधिक स्थायी होती है, स्वीट्ज़रलैण्ड की फ़ेडरेल कौन्सिल में उत्तरदायित्व तथा स्थिरता दोनों गुण पाए जाते हैं। यही स्वीट्ज़रलैण्ड के विधान की विशेषता है। लॉर्ड ब्राइस ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक (Modern Democracies) में उपर्युक्त गुण की बड़ी प्रशंसा की है। कौन्सिल का प्रत्येक सदस्य, जिनकी कुल संख्या सात होती है, एक शासकीय विभाग का प्रधान होता है। प्रेज़ीडेण्ट तथा वाइस-प्रेज़ीडेण्ट के अधीन भी एक-एक विभाग होता है।

(आगामी अङ्क में समाप्त)

❀ ❀ ❀

मनुष्य और मैशीन

[मूल-ले॰ सर जॉन रसल ; अनु॰ डॉक्टर मथुरालाल जी शर्मा, एम॰ ए॰, डी॰ लिट्॰]

सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में जब विज्ञान का विकास होने लगा तो इसका उद्देश्य था, प्रकृति पर विजय प्राप्त करना। इसके कारण संसार का ज्ञान प्राप्त करने की और प्रकृति के खेलों को समझने की मनुष्य-जाति में एक अपूर्व अभिरुचि उत्पन्न हुई। सन् १६१० में बेकन ने पदार्थों के गुप्त रहस्य को जानने के लिए, मनुष्य के ज्ञान को विस्तृत करने के लिए और प्रकृति के अन्तःकरण में प्रवेश करने के लिए एक कॉलेज स्थापित किया। सन् १६६२ में रॉयल सोसाइटी स्थापित की गई, जिसका उद्देश्य भी अन्वेषण के लिए ज्ञान की खोज करना था। इसके पश्चात् ज्ञान के अन्वेषकों में एक भारी मतभेद उत्पन्न हुआ और वह इस विषय पर कि ज्ञान का अन्वेषण केवल ज्ञान-प्राप्ति के लिए किया जावे, या मनुष्य-जाति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए। थोड़े ही समय में विद्वान दो दलों में विभक्त हो गए। एक दल का उद्देश्य था, ज्ञान को ज्ञान के लिए खोजना और दूसरे दल ने अपना उद्देश्य निश्चित किया, मनुष्य-जाति के आराम के लिए उसका उपयोग करना। इस विभाग के फल-स्वरूप रसायनशास्त्र के वेत्ताओं ने पता लगाया कि पौधे किन पदार्थों से बने हुए हैं, उनकी वृद्धि किस प्रकार होती है, और उनमें परस्पर क्या सम्बन्ध है। परन्तु इस ज्ञान का उपयोग १८३९ के लगभग किया गया। उस वर्ष विलायत के रोथम स्टेड में एक प्रयोगशाला स्थापित की गई, जहाँ पर श्री॰ लोयेज़ ने घोषणा की कि विज्ञान के बल से पौधे अधिक उपयोगी बनाए जा सकते हैं। तत्पश्चात् श्री॰ गिलबर्ट ने बतलाया कि भूमि में कुछ ऐसे पदार्थों का खाद देने से, जो सुगमता से प्राप्त हो सकते हैं, पौधों की वृद्धि में उन्नति की जा सकती है. उनकी काश्त अधिक निश्चित हो सकती है, और उनके गुणों में भी तरक़्क़ी की जा सकती है। विज्ञान-वेत्ताओं ने ऐसे खाद बनाए और पिछले कितने ही वर्षों से कृषकगण इन खादों का प्रचुर परिमाण में उपयोग कर रहे हैं। सन् १९१९ और १९३० के बीच में ही लगभग ३,५०,००,००० टन ऐसे खाद उपयोग में लाए जा चुके हैं। इनमें से कितने ही खाद वायु से बनाए जाते हैं और ये इतने गुणकारी हैं कि उपज को कई गुणा कर देते हैं। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि एक आदमी के रहने योग्य कमरे में जितना वायु होता है, उससे इतना खाद उत्पन्न किया जा सकता है, जो मनुष्य की उम्र भर खाने योग्य अन्न पैदा कर दे। कविवर शेक्सपीयर ने अपने नाटक के पात्र हेमलेट से कहलाया है—"मैं वायु भक्षण करता हूँ और प्रतिज्ञाओं से ठसाठस भरा हुआ हूँ।" लिखते समय कवि को शायद यह कल्पना भी नहीं हुई होगी कि एक समय ऐसा आवेगा कि जब मनुष्य वास्तव में वायु भक्षण करेगा।

विज्ञान के बल से पौधों के भी अनेक रोगों का पता लग गया है और इस क्षेत्र में विज्ञान ने आश्चर्यकारिणी उन्नति की है। आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व आयर्लैण्ड में आलू के पौधों पर एक ऐसे भयङ्कर और व्यापक रोग का आक्रमण हुआ, जिसके कारण सारी खेती नष्ट हो गई और इस सुन्दर टापू के सुन्दर निवासी भूखों मरने लगे, सहस्रों नर-नारी बच्चे और युवा भूख से पीड़ित होकर मृत्यु की भेंट हो गए। परन्तु संसार के लोग सहानुभूति के अतिरिक्त उनको और कोई सहायता नहीं पहुँचा सके। सन्तप्त किसानों की आँखों के सामने कठिनता से पाले हुए उनके पौधे मुरझा-मुरझा कर लटक रहे थे; सूखते जाते थे और ख़ाक बन कर उड़ रहे थे, और किसान जी मसोस कर इस करुण दृश्य और प्राण-शोषक विनाश को देख रहे थे। यह सन् १८८० की घटना है। उसके पश्चात् पौधों के रोग का विज्ञान ने निदान कर लिया और थोड़े ही अर्से में उसकी चिकित्सा का भी आविष्कार हो गया। इस समय बनस्पति रोग के विशेषज्ञ पौधों की नस-नस को पहिचानने लग गए हैं। उनको पौधों के माँ-बाप का पता है और उनके लक्षण तथा गति का पूरा ज्ञान है। उनको यह भी मालूम है कि विशेष पौधे के बीज से विशेष क्रियाओं के द्वारा कैसा पौधा उत्पन्न होगा और अङ्कुर जमने के पश्चात् वैज्ञानिक पालन, पोषण और शिक्षण के द्वारा उसको कैसा बनाया जा सकता है।

कुछ वर्ष पूर्व तक केनेडा के प्रेरीज़ (ऊसर मैदान) में गेहूँ नहीं पनपता था। उगने के बाद या तो पौधा बढ़ता न था या बढ़ता था तो शीघ्र पकता नहीं था। लेकिन विज्ञान के बल से गेहूँ के एक ऐसे पौधे का पता लग गया, जो उस भूमि में फल-फूल सकता था। इससे पूर्व मनुष्य-जाति को गेहूँ के केवल ऐसे पौधों का ज्ञान था, जिनको पकने में १३० दिन से कम नहीं लगते थे। केनेडा के प्रेरी मैदानों में इतने समय तक गर्मी नहीं रहती, इसलिए वहाँ गेहूँ पैदा नहीं किया जा सकता था। लेकिन विज्ञानवेत्ता गेहूँ के खेतों को शनैः-शनैः केनेडा के दक्षिण की ओर से उत्तर की ओर बढ़ाने लगे। इस क्रिया से पौधों को धीरे-धीरे उत्तरी मौसम को सहन करने की और उसके अनुकूल बनने की आदत पड़ गई। इस विधि के प्रभाव से अब ऐसे पौधे तैयार किए जा चुके हैं, जिनके बीजों को उत्तरी केनेडा में बोया जा सकता है। इन पौधों को पकने में १३० दिन नहीं, किन्तु केवल १०० दिन ही लगते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में गेहूँ की खेती के पौधों के विषय में इससे मिलती-जुलती समस्या विज्ञान ने हल की है। वहाँ पर शीत का भय नहीं था। बल्कि वर्षा की कमी का प्रश्न था। ऑस्ट्रेलिया में समुद्र-तट पर तो पर्याप्त वर्षा होती है। परन्तु अन्दर की ओर कम होती जाती है। किनारों पर लगभग १८ इञ्च पानी बरसता है और अन्दर की तरफ़ कम होते-होते ५-६ इञ्च ही रह जाता है। जिस विधि का केनेडा ने अनुसरण किया था, उसीके द्वारा ऑस्ट्रेलिया में अब ऐसे स्थानों पर भी सफलतापूर्वक गेहूँ की खेती होने लगी है, जहाँ केवल १२ इञ्च ही वृष्टि होती है। यह विज्ञान ही की महिमा है कि अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और अफ़्रीका के जो प्रदेश अत्यन्त ऊसर और अनुर्वर समझे जाते थे, वे अब अत्यन्त उर्वर भूमि बन गए हैं। वहाँ अब लाखों मन अन्न उत्पन्न होता है और करोड़ों मनुष्यों का उससे पोषण होता है। पिछले ३० वर्षों में इस विषय में बहुत उन्नति हुई है। सन् १८९८ में सर विलियम क्रूक्स ने कहा था कि तत्कालीन कृषि-विधि और कृषि-ज्ञान के द्वारा इतना अन्न उत्पन्न नहीं किया जा सकता, जिसके द्वारा संसार की धड़ाधड़ बढ़ती हुई जन-संख्या अपनी जठराग्नि को शान्त कर सके। सर क्रूक्स का कहना था कि यदि वैज्ञानिक साधनों से अन्न की उत्पत्ति को कई गुणा न कर दिया गया, तो सन् १९३१ के लगभग संसार के सामने एक भयङ्कर अन्नाभाव उपस्थित हो जायगा। पिछले वर्षों ने सिद्ध कर दिया है कि सर क्रूक्स का कहना बिल्कुल यथार्थ था। यदि कृषि-विज्ञान इस समय उसी अवस्था में होता, जिसमें वह सन् १८९८ में था, तो इस समय सम्पूर्ण संसार में हमको एक भयङ्कर जठर-ज्वाला धधकती हुई दिखाई देती। लेकिन विज्ञान के माहात्म्य से आज जगत के पास इतना अन्न है कि उसकी खपत एक समस्या बन कर खड़ी हो गई है।

गेहूँ के अतिरिक्त अन्य खाद्य पदार्थों की उत्पत्ति भी आश्चर्यकारिणी गति के साथ बढ़ गई है और बढ़ती जाती है।

अन्न को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने के साधन विज्ञान के बल से बहुत उन्नत हो गए हैं। स्वल्प परिश्रम से अब बहुत काम हो जाता है। आज से साठ वर्ष पूर्व जितने परिश्रम की आवश्यकता होती थी, अब गेहूँ की खेती में उसके तृतीयांश से ही काम चल जाता है।

कला-कौशल में भी विज्ञान के बल से भारी हेर-फेर हो गए हैं। जिस छोटे से काम के लिए एक शिल्पकार को पहिले कई दिन लग जाते थे, वह काम अब बात की बात में तैयार हो जाता है। दस वर्ष पूर्व अमेरिका में जिस काम को करने के लिए सौ मनुष्यों की आवश्यकता होती थी, वही काम अब केवल ४५ मनुष्यों के द्वारा किया जा सकता है! मैशीनों की सहायता से मानव-परिश्रम की मात्रा दिन-दिन घटाई जा रही है। पाँच वर्ष पूर्व एक मज़दूर दस मोटर-टायर एक दिन में बना सकता था, लेकिन अब वह एक दिन में सौ टायर बना सकता है। इस समय अमेरिका में एक दिन में एक आदमी इतना सामान तैयार कर देता है कि उसको बेचने के लिए पूरे दो दिन लग जाते हैं। मनुष्य-जाति के पास विज्ञान की सहायता से अब ऐसी मैशीनें तैयार हो गई हैं, जिनका हमारे पूर्वजों को स्वप्न भी नहीं था। इस अत्यधिक उत्पत्ति और मानव-परिश्रम की घटती हुई आवश्यकता के कारण इस समय कई समस्याएँ उपस्थित हो गई हैं। संसार की जन-संख्या बढ़ती जाती है और परिश्रम की आवश्यकता कम होती जाती है। विज्ञान ने जीवनोपयोगी पदार्थों को सुलभ बना दिया है, रोगों को कम कर दिया है। आयु बढ़ा दी है और चिकित्सा के नए-नए ढङ्ग आविष्कृत हो गए हैं। इससे निकम्मे और निर्बल आदमियों की संख्या बढ़ गई है। जहाँ हज़ारों आदमियों की ज़रूरत होती थी, वहाँ अब मैशीनों से सौ-पचास आदमियों से ही काम चल जाता है।

इस मैशीन-युग के कुप्रभाव को संसार अब अनुभव करने लग गया है, कम से कम दो बातें सभी जानते हैं। प्रथम यह कि यह मनुष्य के मस्तिष्क को सङ्कुचित कर रहा है। मैशीनों के सञ्चालन के लिए असंख्य विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। मैशीन-परिचय इन लोगों का जीवन-ध्येय बन जाता है। इस विषय में निपुणता प्राप्त करने के लिए बचपन से ही

अन्य विषयों का अध्ययन छोड़ कर ये लोग मैशीनों की उपासना करने लगते हैं। जीवन को सुन्दर, सुखी और विकसित बनाने वाले विषयों के अध्ययन से वञ्चित रहने के कारण इन लोगों का जीवन नीरस, शुष्क और जड़ बन जाता है। स्कूल, कॉलेज और युनिवर्सिटियों में, इन लोगों को सदैव मैशीनों के संसर्ग में रहना पड़ता है। कला, साहित्य और दर्शन को ये लोग निरर्थक विषय समझने लगते हैं। इस प्रकार विशेषज्ञ लोग जीवन की सुन्दरताओं का, साहित्य की मधुरता का और प्रभु की अलौकिक शक्ति का आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते। उनके मस्तिष्क जड़ोपासना के कारण जड़ बन जाते हैं। उनमें संस्कृति और सुन्दरता नहीं होती। सौभाग्य से किसी को स्वतः ही अन्य विषयों की ओर रुचि हो, तो दूसरी बात है, वरना उनका संसार मैशीनमय है, उनका मस्तिष्क मैशीनमय है और उनकी प्रवृत्तियाँ मैशीनमय हैं। मैशीन सत्य है, और सब असत्य; मैशीन जाग्रति है और सब सुषुप्ति। इस मैशीन-युग में इन विशेषज्ञों की एक बहुत बड़ी संख्या तैयार हो रही है, जिनका जीवन सङ्कुचित और जिनका विचार-क्षितिज अत्यन्त परिमित है। ये लोग भौतिक विज्ञान के सूक्ष्म विषयों पर बड़ी विद्वत्तापूर्ण बातें कर सकते हैं, परन्तु ऊषाकाल की बड़ी सुन्दर अरुणिमा और सायङ्काल की मनमोहिनी लालिमा का इन पर प्रभाव नहीं पड़ता! प्राकृतिक सौन्दर्य इन लोगों के लिए एक अनावश्यक पदार्थ है।

जन-साधारण पर जो मैशीन का प्रभाव पड़ रहा है, वह अभी लोगों को स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ता। परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो मालूम पड़ेगा कि सर्वत्र कला की कमी हो रही है। पारस्परिक वार्तालाप में सुन्दरता नहीं है, पत्र-व्यवहार में भद्दापन है। गायन की ओर लोगों की उपेक्षा है। दार्शनिक और आत्म-विकासक विषयों को अनावश्यक समझा जाता है। पहिले घरों में जो गायन होता था, उसका स्थान अब सिनेमा, ग्रामोफ़ोन और रेडियो ने ले लिया है। अमेरिका में पुस्तकों के बजाय अब लोग मासिक पत्र पढ़ते हैं। और लेख का शीर्षक मात्र पढ़ कर ही सन्तोष कर लेते हैं। मैशीनों ने जीवन को त्वरामय और शान्तिहीन बना दिया है। अन्तःकरण को शुद्ध करने वाले, आत्मिक सौन्दर्य का विकास करने वाले, और चित्त को शाश्वत सुख देने वाले विषयों की न बातचीत होती है और न उन पर सुन्दर ग्रन्थ ही लिखे जाते हैं। सम्भव है कि यह स्थिति शीघ्र ही सुधर जाय। अनुमान होता है कि कला और साहित्य के प्रति मनुष्य के हृदय में रुचि का पुनः उदय होगा। इसका आरम्भ एक प्रकार से हो चुका है। रेडियो के द्वारा अब लाखों घरों में सुन्दर गायन, सुन्दर वार्तालाप और सुन्दर व्याख्यान पहुँचते हैं। यदि मनुष्य की कला के प्रति अभिरुचि है तो घर बैठा हुआ ही वह अच्छे से अच्छे गायक का गाना सुन सकता है, और भाषा-सौन्दर्य का आनन्द लूट सकता है। सिनेमा के कारण छोटे से छोटे और ग़रीब से ग़रीब गाँव में भी अच्छे से अच्छे अभिनेता और अभिनेत्रियों की कला तथा निपुण नर्तकियों का नाच देखा जा सकता है। मैशीन के बल से मनोविनोद के साधन बहुत बढ़ गए हैं और सुप्राप्य हो गए हैं। इस समय एक मज़दूर भी चार्ली चैप्लिन का अभिनय दो आने ख़र्च करके देख सकता है। रेलगाड़ी और मोटर के कारण थोड़े ख़र्च से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं, और रमणीय वन, हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियाँ तथा अन्य रमणीय दृश्यों को देख सकते हैं। मनोविनोद के साधनों की प्रचुरता के कारण मद्यपान की मात्रा घट गई है।

मनुष्य-जाति पर मैशीनों का कुप्रभाव भी गहरा पड़ा है। १९वीं शताब्दी में विलियम मॉरिस आदि विद्वानों ने मत प्रकट किया था कि मैशीन के कारण जब मानव-परिश्रम की आवश्यकता कम हो जायगी, तो श्रमजीवियों को निरन्तर परिश्रम न करना पड़ेगा और प्रतिदिन केवल चन्द घण्टे ही काम करके वे अपनी रोज़ी कमा सकेंगे। इससे उनको अपने परिवार की देख-रेख करने का, बच्चों को शिक्षा देने का, मन-बहलाव का तथा आत्म-चिन्तन करने का समय मिल सकेगा। और अधिकांश लोगों का जीवन सुखमय बन जावेगा। वास्तव में मैशीन के आरम्भ-युग में ऐसा सोचना निराधार कल्पना नहीं थी। यदि शासन-प्रणाली भी मैशीनों की उन्नति के साथ ही साथ उन्नत होती जाती तो श्री० विलियम मॉरिस का यह सुख-स्वप्न सच्चा हो जाता। लेकिन व्यापारिक प्रतियोगिता और मानवी स्वार्थ-बुद्धि ने पूँजीवाद का जन्म देकर श्रमजीवियों के जीवन को अधिक सुखमय बनाने के बजाय उसको और भी अधिक दुखी और असह्य बना दिया। निरन्तर परिश्रम, बेकारी, बीमारी, बुरे मकान, बच्चों की उपेक्षा, किशोर-वयस्क बच्चों से अत्यधिक परिश्रम आदि अनेक जटिल समस्याएँ मैशीन-वृक्ष के कटु-फल हैं। जो मज़दूर कारख़ानों में नौकर हैं, उनको रात-दिन अथक परिश्रम करने के पश्चात् भी भरपेट भोजन और पर्याप्त वस्त्र प्राप्त नहीं होता। जहाँ पहिले सौ श्रमजीवियों की आवश्यकता होती थी, वहाँ अब पाँच से काम चल जाता है और शेष ९५ व्यवसाय के अभाव के कारण बेकार हैं। वर्तमान उन्नत राष्ट्रों के सामने बेकारी का प्रश्न एक महान प्रश्न है। जिसके हल करने में बड़े-बड़े राजनीतिक दिग्गजों की बुद्धियाँ भी चक्कर खाने लगती हैं। इस समय संसार में करोड़ों मनुष्य बेकार हैं। न वे मनुष्य-जाति के उपकार के लिए कोई पदार्थ उत्पन्न कर सकते हैं और न उनमें किसी पदार्थ के ख़रीदने की शक्ति है। वर्तमान समाज में मानव-परिश्रम की आवश्यकता एक भारी समस्या है, जिसकी भयङ्करता मैशीनों की उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ अधिकाधिक भयङ्कर होती जाती है। एक तरफ़ हम लोग वर्तमान व्यापार-शैथिल्य के निवारण की आशा कर रहे हैं और दूसरी ओर विज्ञानवेत्ता ऐसी मैशीनों के आविष्कार की चिन्ता कर रहे हैं, जो मानव-परिश्रम को और भी अधिक अनावश्यक बना दे।

इस प्रकार मैशीनों ने दो ऐसे नाज़ुक प्रश्न खड़े किए हैं, जिनकी गत शताब्दी में आशा नहीं थी। प्रथम नैतिक और बौद्धिक ऊसरता और द्वितीय बेकारी। द्वितीय प्रश्न की भयङ्करता प्रत्येक व्यवसायी और उन्नत राष्ट्र में अनुभव की जाने लगी है। वर्तमान राष्ट्रों में सरकार का यह सर्व-प्रथम कर्तव्य माना जाता है कि बेकारी को हटावे। इसके लिए प्रायः तीन उपायों का अवलम्बन किया गया है। बेकार लोगों को सरकारी कोष से निर्वाह के निमित्त सहायता देना, उनके वास्ते काम तलाश करना या अपने देश के अतिरिक्त अन्य देशों में उनको बसाना। इन तीनों साधनों में सरकारी कोष से बेकारों को सहायता देना सब से बुरा है। इससे लोगों का नैतिक पतन होता है और स्वावलम्बन का भाव नष्ट हो जाता है। पब्लिक धन से सहायता मिलते रहने के कारण बेकार मज़दूर आर्थिक सङ्घर्ष में नहीं पड़ते और शनैः-शनैः बेकार बैठे हुए खाने की उनकी आदत पड़ जाती है। प्रजासत्तात्मक शासन में प्रायः यह प्रवृत्ति देखी जाती है कि लोग अपने कर्तव्य को दूसरों पर टाला करते हैं और व्यक्तिगत सफलता या असफलता की ज़िम्मेवारी भी लोग सरकार पर आरोपित करते हैं। यदि किसी को काम नहीं मिलता तो सरकार ज़िम्मेवार है। यदि नगरों में बीमारी है तो सरकार ज़िम्मेवार है और कोई अन्य प्रकार का व्यापक कष्ट है तो भी सरकार ज़िम्मेवार है। कहने का यह अभिप्राय नहीं है कि इन विषयों में सरकार को ज़िम्मेवार न ठहराया जाय, लेकिन इस प्रकार की प्रवृत्ति से बेकार लोग और भी बेकार हो जाते हैं। दूसरा साधन अर्थात् बेकारों के लिए काम निकालना और भी अधिक दोषयुक्त है। इसके दो स्वरूप हैं। या तो सरकार अनावश्यक काम खोजती है या अन्य देशों में अपने पक्के माल को खपा कर अपने व्यवसाय को प्रोत्साहन देती है। नए काम खोलने से पब्लिक कोष पर भारी भार पड़ता है और एक समस्या को हल करने में दूसरी समस्या उठ खड़ी होती है। इङ्गलैण्ड में इस प्रकार के कामों में प्रत्येक आदमी पर पाँच सौ पौण्ड सालाना ख़र्च हो जाता है और काम भी सन्तोषजनक नहीं होता। वास्तव में अनावश्यक काम में न सरकार की रुचि होती है और न मज़दूरों का दिल होता है। सरकार उस ख़र्च को फ़ालतू समझती है और मज़दूर लोग उसको केवल समय काटने का साधन मानते हैं। अन्य देशों में अपना पक्का माल खपाने से उपज की आवश्यकता बढ़ जाती है और बेकारी हटने लगती है, परन्तु इससे अधिक समय तक काम नहीं चलता। बात यह है कि खपत चाहे जितनी अधिक हो, वह मैशीनों के द्वारा पूरी हो जाती है। जब अधिक उपज की आवश्यकता होती है तो कुछ दिन के लिए तो बेकारों को काम मिलने लगता है, परन्तु शीघ्र ही उनके स्थान में मैशीनें आ विराजती हैं और बेकारी का प्रश्न फिर वही रूप धारण कर लेता है। खपत चाहे जितनी हो, वह मैशीनों के द्वारा पूरी हो जाती है, बल्कि इस समय तो मैशीनों से इतना पक्का माल तैयार किया जा रहा है कि संसार में उसकी खपत का कहीं भी मौक़ा नहीं है। अभी थोड़े ही दिन हुए, सर टॉमस हॉलेण्ड ने एक लेख में बतलाया था कि पिछले पच्चीस वर्षों में जितने खनिज पदार्थ, रुई और लकड़ी पक्का माल तैयार करने के उद्योग में लाए गए हैं, उतने कभी पहले काम में नहीं लाए गए थे। इस समय विस्तृत जङ्गल सुन्दर वृक्षों को काट-काट कर सूने किए जा रहे हैं। इस लकड़ी से तैयार किया हुआ माल कहीं खपता नहीं है और जितने वृक्ष काटे जा रहे हैं, उतने उनके स्थान में पैदा नहीं हो रहे हैं।

बेकारी को हटाने का तीसरा साधन है लोगों को अन्य देशों में बसाना। यह विधि अत्यन्त पुरातन है

'टपकती है जमुना से शाने कन्हैया'

[जनाब "शातिर" इलाहाबादी]

कोई क्या कहे दास्ताने[1] कन्हैया,
बयाँ से है बाहर बयाने कन्हैया।
न मथुरा में अब वह, न गोकुल में अब वह,
कहाँ कोई ढूँढ़े निशाने कन्हैया।
कहीं चीर-लीला, कहीं रास-मण्डल,
हमें याद है दास्ताने कन्हैया।
दिया साथ अर्जुन का रथवान बन कर,
चली तेग़[2] बन कर ज़बाने कन्हैया।
रहे ख़ूब आनन्द में नन्द जी भी,
यशोदा को प्यारी थी जाने कन्हैया।
धरी रह गई कंस की सारी ताक़त,
बहुत कुछ लिया इम्तहाने कन्हैया।
वही रङ्ग उनका, वही रङ्ग इसका,
टपकती है जमुना से शाने कन्हैया।
कहाँ तक लिखेगा कोई इसको "शातिर",
बहुत तूल[3] है दास्ताने कन्हैया।

१—क़िस्सा, २—तलवार, ३—बड़ी।

और भूतकाल में इसके कारण बहुत उन्नति हुई है। महासमर के अन्त में इस विषय में कई बार विचार किया गया था और कई तजवीज़ें भी तैयार हुई थीं। लेकिन उनमें से कोई सफल नहीं हुई। सन् १९१३ में ेट-ब्रिटेन से लगभग चार लाख लोग अन्य देशों में जाकर बसे थे लेकिन सन् १९२७ में केवल एक लाख अस्सी हज़ार लोग ही बाहर गए। ध्यान देने की बात यह है कि ग्रेट-ब्रिटेन की जन-संख्या सन् १९१२ में चार करोड़ पचास लाख थी और सन् १९२७ में चार करोड़ अस्सी लाख हो गई थी। उन्नीसवीं शताब्दी में कई उद्देश्यों से हज़ारों अङ्गरेज़ ग्रेट-ब्रिटेन छोड़ कर अन्यान्य देशों में जा बसे थे और इससे वहाँ की आबादी की भीड़ भी कुछ छँट गई थी, लेकिन अब बीसवीं शताब्दी में इसकी भी गुञ्जायश नहीं रही।

मैशीन ने मानव-शक्ति को विस्तृत करके प्रकृति को उसकी दासी बना दिया परन्तु साथ ही मैशीन प्राधान्य के कारण संसार के सामने एक ऐसा महाप्रश्न भी उपस्थित हो गया, जिसकी भयङ्करता प्रति दिन बढ़ती जाती है और जिसको हल करने के लिए संसार के बड़े-बड़े महारथी अपने दिमाग़ लगाते हैं, परन्तु वह हल नहीं होता। हमारी गति, हमारी दशा उस पुरुष के समान है, जिसको अकस्मात् विपुल सम्पत्ति मिल गई हो और जिसने एक अत्यन्त सुन्दर मोटरकार ख़रीद ली हो तथा एक अत्यन्त निपुण ड्राइवर को अपने यहाँ नियत कर लिया हो, परन्तु जिसको यह पता न हो कि उस शीघ्रगामी वाहन में बैठ कर उसको कहाँ और किधर से जाना है। पाठक! हम कहाँ जाना चाहते हैं, हमारा उद्देश्य क्या है, क्या कोई बतला सकता है? भगवान करे हमको हमारे उद्देश्य का पता लग जाय! प्रभु करे कोई महान नेता उत्पन्न होकर हमारे सामने कोई व्यावहारिक आयोजन उपस्थित करे! फिर उस नवीन उद्देश्य की प्राप्ति के निमित्त हम इन बीसवीं शताब्दी के साधनों से काम लेंगे। बात की बात में हम उस नवीन आयोजन को पूरा कर देंगे। परन्तु उस आयोजन का पता लगे तब न! यदि हम 'अन्धेन नीयमाना यथान्धाः' की भाँति इधर-उधर भटकते रहे तो ये मैशीनें ही हमको चूर-चूर कर देंगी। यदि हम इसी प्रकार चलते रहे तो पता नहीं कौन से अन्धगर्त में पहुँचेंगे। इस समय हम एक ऐसी अदृश्य और अन्ध-शक्ति के हाथ में पड़े हुए हैं, जो हमको न मालूम कहाँ ले जाना चाहती है। शायद स्वयम् उसको भी पता नहीं कि वह हमको कहाँ ले जावेगी। आचार्य मार्क्स ने इस शक्ति को आर्थिक सङ्घर्ष का नाम दिया था, प्रोफे.-सर हण्टिङ्गडन इसको भौगोलिक परिस्थिति के नाम से पुकारते हैं और स्पेङ्गलर इसको उत्थान और पतन का कोई अदृष्ट कारण बतलाता है।

आख़िर इस महाप्रश्न का उत्तर क्या है? विज्ञान की सहायता से हमको इसका उत्तर नहीं मिल सकता, विज्ञान के पास इसका उत्तर है भी नहीं। यह हमको और भी अधिक प्रबल मैशीन दे सकता है, जो हमारे प्रश्न को और भी जटिल बना देगी। राजनीति भी इस महाप्रश्न का उत्तर नहीं दे सकती। इस प्रश्न को हल करने के लिए एक गहरी मौलिकता की आवश्यकता है। इसके लिए अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि की ज़रूरत है। हमको जानना है कि वास्तव में एक मनुष्य-समुदाय का दूसरे समुदाय के साथ क्या सम्बन्ध है और इस विराट ब्रह्माण्ड में मनुष्य का क्या स्थान है और क्या कर्त्तव्य है। इस प्रश्न का उत्तर अपूर्व होगा। यह प्रश्न सृष्टा और सृष्टि के सम्बन्ध में नहीं है। हमको व्यक्तिगत कर्त्तव्यों की खोज नहीं करना है और न चरित्र की व्याख्या ढूँढ़ना है। हमको ऐसे तात्त्विकों और उपदेशकों की खोज है, जिनकी दृष्टि इस क्षणिक और आकस्मिक जञ्जाल से परे पहुँच चुकी हो, जो हमको इस भूल-भुलैया में से निकाल कर सीधा मार्ग बतलावे।

* * *

प्रयाग का कृषि-विद्यालय

[श्रीमती एम० एस० हेच]

गत शताब्दी के—रेल, तार टेलीफ़ोन, रेडियो और वायुयान के आविष्कारों की ओर देखने पर हमें बड़ा आश्चर्य मालूम पड़ता है। इन अनुसन्धानों ने मानव-जाति के दैनन्दिन जीवन में कितना महान परिवर्तन उपस्थित कर दिया है! एक प्रकार से दुनिया की काया-पलट ही कर दी है।

इधर खेती के सम्बन्ध में भी कुछ ऐसे ही आविष्कार हुए हैं, जिनसे अनाजों की क़िस्म की और पैदावार की तरक़्क़ी होने में बहुत मदद मिली है। इन अनुसन्धानों में जो सबसे बड़ी तारीफ़ की बात है, वह यह कि इनमें से बहुतों का प्रयोग देश के ग़रीब किसान भी कर सकते हैं और इनसे वे उतना ही लाभ उठा सकते हैं, जितना कोई धनी ज़मींदार।

प्रायः पचीस वर्ष पहले की बात है, डॉक्टर साम हिगिनबॉटम उन दिनों प्रयाग के ईविङ्ग क्रिश्चियन कॉलेज में अर्थशास्त्र के अध्यापक थे। उनका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने सोचा, कोई ऐसा काम करना चाहिए, जिससे हिन्दुस्तान के लाखों ग़रीबों को भरपेट भोजन मिल सके और जीवन की दूसरी ज़रूरतों के अभाव में भी उन्हें दुःख न भोगना पड़े। वे जानते थे कि देश की अधिकांश जनता खेती-बारी से अपना निर्वाह करती है और भविष्य में आने वाले बहुत वर्षों तक वह यही व्यवसाय करने के लिए विवश है। उन्हें यह भी मालूम था कि आजकल किसानों की दशा सुधारने के लिए कौन-कौन से आविष्कार हुए हैं तथा उन आविष्कारों ने दूसरे देशों में और स्वयं भारतवर्ष के कई स्थानों में भी किसानों की दशा किस प्रकार सुधार दी है। उन्होंने अपने मन में सोचा—"क्यों न हम लोग कोई ऐसी संस्था क़ायम करें, जो आस-पास के किसानों की सहायता कर सके, जो खेती की शिक्षा देकर ऐसे मनुष्यों को तैयार कर सके, जो गाँवों में जायँ और वहाँ के किसानों को वैज्ञानिक ढङ्ग से खेती करना सिखावें तथा स्वयं भी उसी ढङ्ग से अपनी ज़मीन में खेती करके लोगों के सामने एक नमूना पेश करें।" उन्होंने इस विषय में अमेरिकन प्रिस्बिटेरियन मिशन के अपने साथियों से भी परामर्श किया।

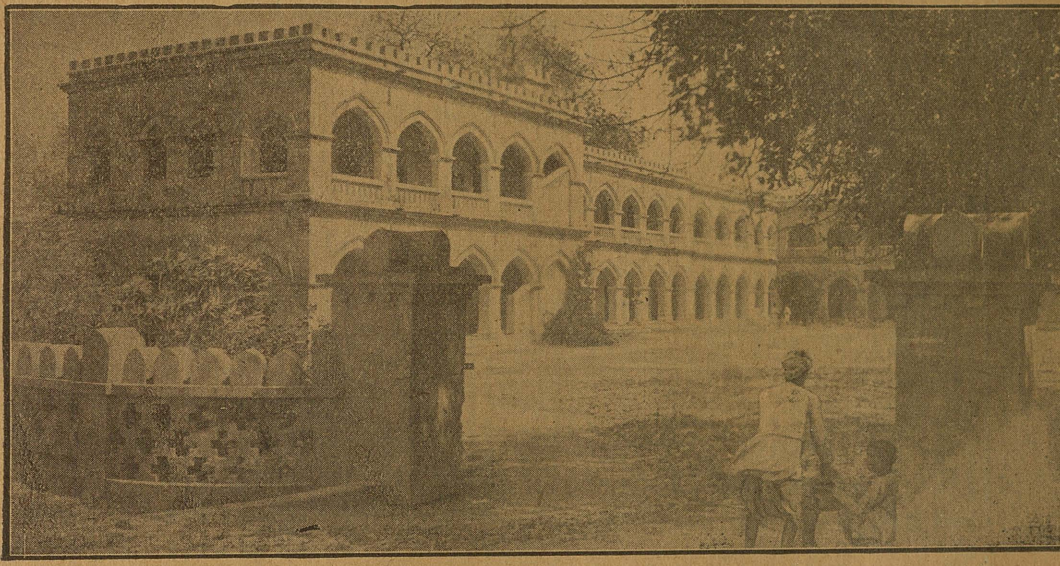

विद्यालय का छात्रावास, जिसमें १२४ विद्यार्थियों के रहने की जगह है।

हिगिनबॉटम सपना देखने वाले आदमी हैं; किन्तु साथ ही साथ वे कर्मशील भी हैं। उन्होंने विशेष रूप से कृषि सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने तथा इस प्रकार की एक संस्था के निर्माण के लिए धन एकत्रित करने की इच्छा से अमेरिका की यात्रा की। उनकी इस यात्रा तथा उनके सपनों और प्रार्थनाओं का परिणाम यह हुआ कि आज से १९ वर्ष पहले, ख़ास प्रयाग नगर के सामने, यमुना के उस पार कृषि-विद्यालय की स्थापना हुई। इस विद्यालय में ६०० एकड़ भूमि है, जिसका कुछ हिस्सा वहाँ के किसान जोतते हैं। इस विद्यालय में शिक्षा पाने के लिए भारतवर्ष के सभी प्रान्तों के विद्यार्थी तो आते ही हैं, इसके अतिरिक्त फ़ारस, ईराक और फ़ीजी के विद्यार्थी भी आते हैं।

विद्यालय के लिए जो ज़मीन चुनी गई थी, वह यमुना के किनारे होने के कारण, नालों और गड्ढों से भरी हुई थी। उसके ऊपर की उपजाऊ मिट्टी को बरसात का पानी हर साल नदी में बहा ले जाता था। इसलिए वह ज़मीन खेती के काम लायक़ बिलकुल न रह गई थी। उसमें 'ख़स' और 'कुश' नाम की दो घासें, जिसकी जड़ मिट्टी में दूर तक धँसी होती है, बहुतायत से जमी हुई

थीं। वहाँ की मिट्टी इतनी सख़्त और बञ्जर थी कि वहाँ के बाशिन्दे कहा करते थे कि किसी भी आदमी ने उसमें कभी हल चलते देखा ही नहीं। वहाँ के किसानों का ख़्याल था कि उस ज़मीन के ज़्यादा हिस्से में विद्यालय कोई फ़सल नहीं उगा सकेगा। और यही पहली बात थी जिसमें विद्यालय को नए आविष्कारों के लाभ दिखाने का मौक़ा मिला। इस विषय में विद्यालय ने पहला काम यह किया कि उसने उन सभी रास्तों को, जिनसे बरसात का पानी उस ज़मीन के ऊपर की उपजाऊ मिट्टी को बहा ले जाता था, रोक कर बाँध बाँध दिए। बरसात में उन बाँधों के पीछे पानी इकट्ठा होकर झील सा बन जाता था और पानी के स्थिर होने पर उसमें घुली हुई उपजाऊ मिट्टी की एक तह ज़मीन पर बैठ जाती थी। इस प्रकार, आजकल वहाँ बारह फ़ीट से भी ज़्यादा गहरी मिट्टी बैठ गई है। बरसात निकल जाने पर पानी बहा दिया जाता और उस ज़मीन में अच्छे क़िस्म के गेहूँ का बीज बोया जाता था। इससे कुछ को छोड़ कर, प्रायः प्रति वर्ष ही अच्छी फ़सल हुई। जो ज़मीन कुछ ही समय पहले बिलकुल निकम्मी और खेती के लिए बेकार थी, इन प्रयोगों से वही ज़मीन सबसे ज़्यादा उपजाऊ हो गई है। चित्र में बाँध के पीछे जो ज़मीन दिखलाई पड़ती है, पहले वह बिलकुल ऊसर थी, लेकिन अब उसी में २२ मन से भी कुछ अधिक प्रति एकड़ के हिसाब से गेहूँ पैदा होता है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि आस-पास के गाँवों में फ़ी एकड़ ८ मन की उपज भी अच्छी उपज समझी जाती है। क्या यह जादू की सी सफलता नहीं है? इन बाँधों के विषय में जो सबसे अच्छी बात है, वह यह है कि किसान भी बिना किसी तरद्दुद या ख़र्च के इन्हें बाँध सकते और अपने खेतों को उपजाऊ बना सकते हैं।

बीजों की सुधरी हुई, सबसे अच्छी क़िस्म ही शायद कृषि-सम्बन्धी पहली चीज़ है, जिसका उपयोग पुराने ख़्याल के किसान भी कर सकते हैं। प्रति वर्ष अड़ोस-पड़ोस के किसानों में बहुतेरे इस प्रकार के सुधरे हुए बीज बोते हैं। वे लोग अब नवीन ढङ्ग के हलों का भी उपयोग करने लगे हैं। ये हल पुराने हलों की तरह केवल मिट्टी को खुरच कर ही नहीं रह जाते, किन्तु उसे ख़ूब गहराई से उखाड़ कर अच्छी तरह उलट-पलट देते हैं, जिससे खेत की उपज कहीं ज़्यादा बढ़ जाती है।

किसानों के लिए उस प्रकार के गड्ढे तैयार कर लेना भी मुश्किल नहीं है, जैसा कृषि-विद्यालय में बना हुआ है। ये गड्ढे बहुत उपयोगी साबित हुए हैं। इनमें जानवरों के खाने योग्य घास और चारा तो इकट्ठा किया ही जाता है, इसके अतिरिक्त बरसात में पैदा होने वाली उन निकम्मी घासों को भी इसमें रख छोड़ते हैं, जिन्हें साधारणतः गाय-बैल नहीं खाते। यह घास बरसात से लेकर गर्मी तक बराबर उसी गड्ढे में पड़ी हुई अचार के समान बन जाती है। उस समय इसका स्वाद कहीं ज़्यादा बढ़ जाता है और यह पुष्टिकारक भी हो जाती है। गाय-बैल उस समय इसे बड़े चाव से खाते हैं। इन गड्ढों तथा इनके समान अन्य बहुत सी वस्तुओं को किसान तथा कृषि-सम्बन्धी बातों में दिलचस्पी रखने वाले महानुभाव और विद्यार्थी इस विद्यालय में आकर देख-सुन सकते और उनके सम्बन्ध में जानकारी हासिल कर सकते हैं।

जैसे यह आवश्यक है कि इन प्रयोगों को करके जनता को दिखलाया जाय वैसे ही विद्यालय इस बात की भी आवश्यकता अनुभव करता है कि ऐसे मनुष्य तैयार किए जायँ जो बड़े-बड़े खेतों का प्रबन्ध कर सकें, जो स्वयं अपनी ज़मीन में नए ढङ्ग से खेती कर सकें और दूसरों को भी ऐसा करना सिखला सकें, जो गाय-बैलों का पालन करें और बड़ी-बड़ी गोशालाएँ चला सकें; विद्यालय ऐसे आदमियों को तैयार करना भी आवश्यक समझता है जो सरकारी नौकरियों तथा व्यापारिक संस्थाओं में प्रवेश करके उन पदों पर काम कर सकें जिनमें कृषि और पशु-पालन के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसी से विद्यालय की शिक्षा के दो विभाग कर दिए गए हैं—एक साधारण कृषि-सम्बन्धी और दूसरा डेरी-फ़ार्मिङ्ग या गोपालन सम्बन्धी। ये दोनों ही पाठक्रम गवर्नमेण्ट से स्वीकृत हैं।

विद्यार्थी खेतों में जाकर स्वयं अपने हाथ से काम करते हैं और उन्हें विद्यालय की कक्षाओं तथा प्रयोगशाला में सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाती है, जिनके अनुसार वे खेती या गोपालन का काम करना सीखते हैं।

गोपालन का पाठक्रम—जिसे इम्पीरियल डेरी डिप्लोमा कोर्स कहते हैं—दो वर्षों का है। भारतवर्ष के शहरों में बच्चों की बढ़ती हुई मृत्यु-संख्या का एक बड़ा कारण यह भी है कि एक तो इन नगरों में शुद्ध और ताज़ा दूध मिलता ही नहीं, यदि मिलता भी है तो इतने मँहगे दाम पर कि ग़रीब आदमी उसे ख़रीद नहीं सकते और देश में ग़रीबों की ही सबसे बड़ी संख्या है। अतः यह विद्यालय इस बात का प्रयत्न कर रहा है कि गायों की ऐसी नस्लें पैदा की जायँ, जिनमें थोड़े ही ख़र्च से शुद्ध और पुष्टिकारक दूध काफ़ी परिणाम में मिल सके। इस व्यवसाय को सिखाने वाली भारतवर्ष में केवल दो ही संस्थाएँ हैं, जिनमें यह विद्यालय एक है।

अमेरिका के मित्रों ने विद्यालय को अच्छे वंश वाले कई सुन्दर साँड़ दिए हैं,। ऐसी आशा की जाती है कि इन साँडों के द्वारा, भारतीय गौओं से उत्पन्न होने वाली बछियाँ, इस देश की गायों के मुक़ाबले दुगुने से पाँचगुना तक दूध दे सकेंगी। अभी इस प्रयोग का आरम्भ ही हुआ है। इसलिए अभी तक इसमें अधिक सफलता नहीं मिली है। परन्तु जितनी सफलता मिली है, वह निराशाजनक नहीं है। हमारी नई नस्ल की सबसे अच्छी गाय ने प्रथम दुहान में अर्थात् बछड़ा पैदा होने के समय से दूध बन्द हो जाने के समय तक ८,००० पाउण्ड दूध दिया है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि पहले दुहान का समय पिछले दुहानों के समय से बराबर छोटा हुआ करता है। गवर्नमेण्ट की फ़ौजी डेरियों में नई नस्ल की कई गायों ने एक दुहान में १५,००० से लेकर २०,००० पाउण्ड तक दूध दिया है। इस प्रकार की गायों की एक अच्छी नस्ल पैदा कर लेना कोई आसान या जल्दी हो जाने वाला काम नहीं है, परन्तु इस प्रयोग को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने से निस्सन्देह मनुष्य जाति का बहुत कल्याण हो सकता है।

इन दो पाठ-क्रमों के अतिरिक्त—जो कॉलेज में प्रवेश करने की योग्यता रखने वाले विद्यार्थियों के लिए है—एक तीसरा पाठ-क्रम भी है, जिसे फ़ार्म मैकेनिक्स ऐपरेण्टिस कहते हैं। इसमें ऐसी कारीगरी के काम सिखाए जाते हैं, जिनका सम्बन्ध खेती से होता है, जैसे बढ़ई, लोहार, फ़िटर (जो मैशीनों की मरम्मत करता है) इत्यादि का काम। यह कोर्स तीन वर्ष का है। इतने दिनों में खेती के काम में आने वाले मैशीनों को बनाने, उनकी मरम्मत करने तथा उन्हें चलाने का ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद ये बालक खाने-पहनने लायक़ अच्छी आमदनी करने की योग्यता प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार की शिक्षा पाए हुए बच्चे देहातों में बड़ा काम कर सकते हैं। विद्यालय में इन बच्चों को बढ़ईगिरी, लोहारी और साधारण बिजली के कामों के अतिरिक्त, सन्ध्या को होने वाले क्लासों में भी, इस सम्बन्ध की ज़रूरी बातें बतलाई जाती हैं। इस पढ़ाई को समाप्त करके दो-तीन साल के भीतर ही अनेक लड़के ४०-५० और इससे भी अधिक रुपए प्रति मास की आमदनी कर चुके हैं। यहाँ शिक्षा प्राप्त करने वाले आत्मनिर्भर और योग्य लड़कों के लिए अपने जीवन को उन्नत बनाने को अनेक सुविधाएँ तथा सुनहले मौक़े हैं।

विज्ञानशाला और छात्रावास के अतिरिक्त विद्यालय में कृषि-सम्बन्धी मैशीनें, प्रयोगशाला, गोशाला, खलियान और कार्यकर्ताओं के रहने के मकानात भी हैं। इन मकानों में से प्रायः सभी अमेरिका के उन प्रेमी और उदार मित्रों के द्वारा दी गई रक़म से बनाए गए हैं, जो भारत की दारिद्र्य-समस्या के विरुद्ध युद्ध करने में सहायता देने के लिए सदा ही उत्सुक रहते हैं।

विद्यालय का मासिक ख़र्च जितना है, विद्यार्थियों की फ़ीस से उसका एक बहुत ही मामूली हिस्सा उसे मिलता है। किन्तु आशा की जाती है कि इस देश में ज्यों-ज्यों कृषि-विज्ञान की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होता जायगा, त्यों ही त्यों वे अधिक से अधिक संख्या में आर्थिक सहायता के द्वारा विद्यालय को प्रश्रय देने के लिए अग्रसर होंगे और साथ ही वे इस संस्था के कामों में भी दिलचस्पी दिखाएँगे तथा ईश्वर से इस बात की प्रार्थना करेंगे कि वह इस संस्था को भारतवर्ष की सेवा करने के लिए दिनोंदिन अधिकाधिक उपयोगी बनावे। कुछ ही समय पहले महात्मा गाँधी यहाँ आए थे और यहाँ की मुख्य-मुख्य चीज़ों का उन्होंने निरीक्षण किया था। खेती कराने की नवीन पद्धति और उन्नत साधनों को देख कर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई।

यह विद्यालय, जहाँ कृषि-विज्ञान की उन्नति के लिए उत्सुक है, जहाँ यह इस बात का प्रयत्न कर रहा है कि पहले जिस खेत में एक मन अन्न उपजता था, उसी में अब दो मन उपजाया जा सके, वहाँ इसे इस बात का भी गर्व है कि इसका ध्यान अपने छात्रों के चारित्रिक विकास की ओर भी कम नहीं है। यहाँ व्याख्यानों और कथाओं, नैतिक और अध्यात्मिक विषयों पर भी वाद-विवाद हुआ करता है। अनेक छात्र—पहले जिनके विचार अत्यन्त सङ्कुचित और स्वार्थपूर्ण थे—यहाँ आकर उदार और परोपकारी बन गए हैं। इस प्रकार खेती से सम्बन्ध रखने वाले आश्चर्यजनक उन्नतियों के साथ ही साथ मानव-स्वभाव को भी उन्नति करने की चेष्टा यहाँ की जा रही है। यहाँ के विद्यार्थियों ने 'समाज-सेवा-सङ्घ' (Social Service League) नामक एक संस्था कायम की है। इसके सदस्य मज़दूरी करके पैसे इकट्ठा करते हैं और उनसे ग़रीब बालकों का बीमारी में दवा उन्हें ख़रीद कर देते हैं। वे आसपास के गाँवों में भी जाते हैं और ग्रामीण लोगों की शिक्षा के विकास, स्वास्थ्य की उन्नति और मनोरञ्जन का प्रबन्ध करने में उनकी सहायता करते हैं। वे प्रति रविवार को अपनी समिति का एक अधिवेशन करते हैं, जिसमें ईश्वर, बन्धुत्व, प्रेम, त्याग, उदारता तथा इसी प्रकार के अन्यान्य विषयों पर विवाद हुआ करता है। ऐसा मालूम पड़ता है कि डॉ० साम हिगिनबॉटम और उनके भारतीय तथा अमेरिकन सहयोगियों के त्याग और सेवा का भाव विद्यार्थियों के हृदय में प्रवेश कर जाता है और वे भी ईश्वर तथा मानव-जाति की सेवा करने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं।

* * *

दाम ५) **बाल जड़ से काला** नमूना २)

यह तेल बालों का पकना रोक कर पका बाल जड़ से काला पैदा न करे और बूढ़ा होने तक काला न रहे तो दाम वापस। अधिक पके बालों के लिए खाने की दवा भी ज़रूरी है। दोनों दवा का दाम ७) रुपया।

पता—बाल काला मेडिकल स्टोर,

कवड़ी सिमरी, दरभङ्गा

भविष्य

डॉक्टर साम हिगिनबॉटम

आप प्रयाग कृषि-विद्यालय के प्रिन्सिपल हैं। आपका हृदय दीन और दुखियों के प्रति अगाध करुणा से ओत-प्रोत है। प्रयाग का कुष्ठ-चिकित्सालय भी आप ही की तपस्या का फल है।

THE FINE ART PRINTING COTTAGE. CHANDRALOK. ALLAHABAD.

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

प्रयाग कृषि-विद्यालय सम्बन्धी कुछ दुर्लभ चित्र

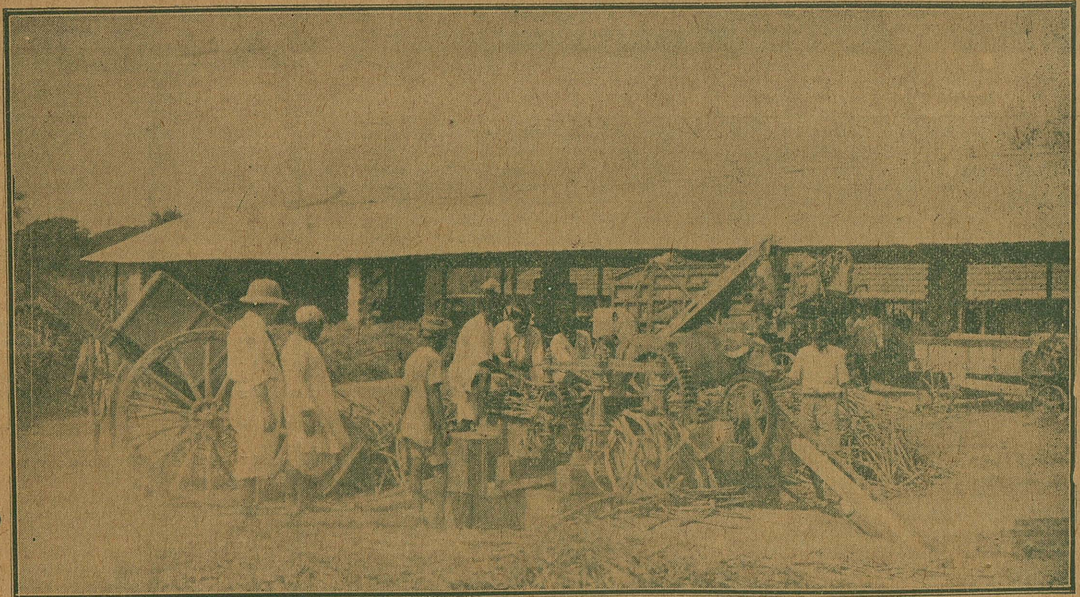

विद्यार्थी मैशीन से गन्ना पेर रहे हैं।

इस ज़मीन में एक साल में चार पैदावारें होती हैं—दो घास की, उसके बाद एक आलू की, फिर एक मकई की। इसी ज़मीन में, जब तक विद्यालय ने इसे समतल करवा कर सिंचाई का प्रबन्ध नहीं किया था, मकई की तो कौन कहे, आलू और घास की भी अच्छी उपज नहीं होती थी।

विद्यार्थी नवीन ढङ्ग के हलों से खेत जोतना सीख रहे हैं। देखिए, एक ही चास में यह हल ज़मीन को कितनी गहराई तक खोद देता है।

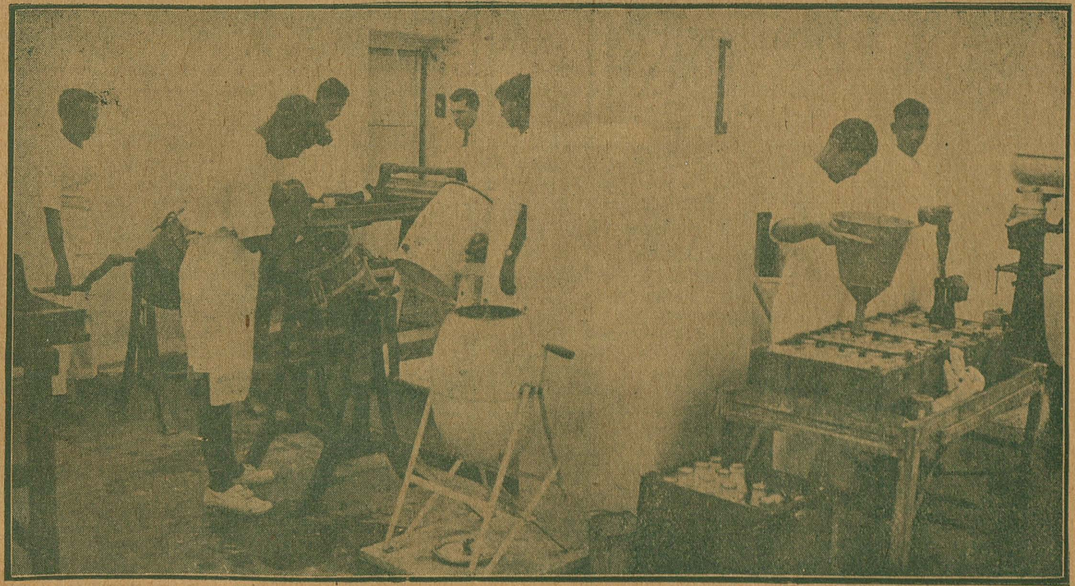

डेरी क्लास में विद्यार्थी मक्खन बनाना तथा मैशीन की सहायता से बोतलों में दूध भरना सीख रहे हैं।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

प्रयाग कृषि-विद्यालय सम्बन्धी कुछ दुर्लभ चित्र

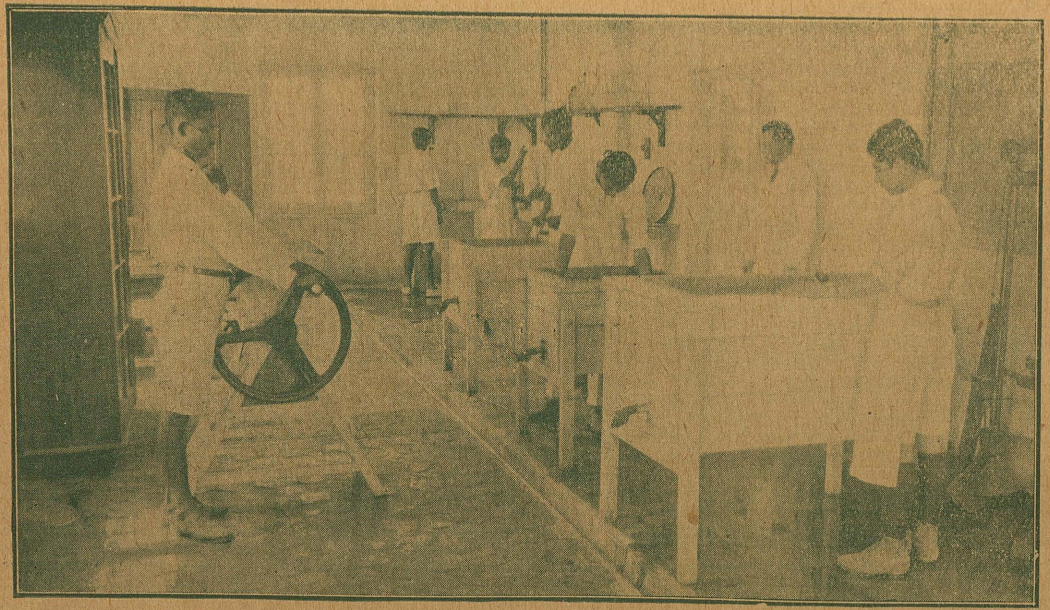

विद्यार्थी पनीर बनाना सीख रहे हैं।

अमेरिका से लाए हुए साँड़।

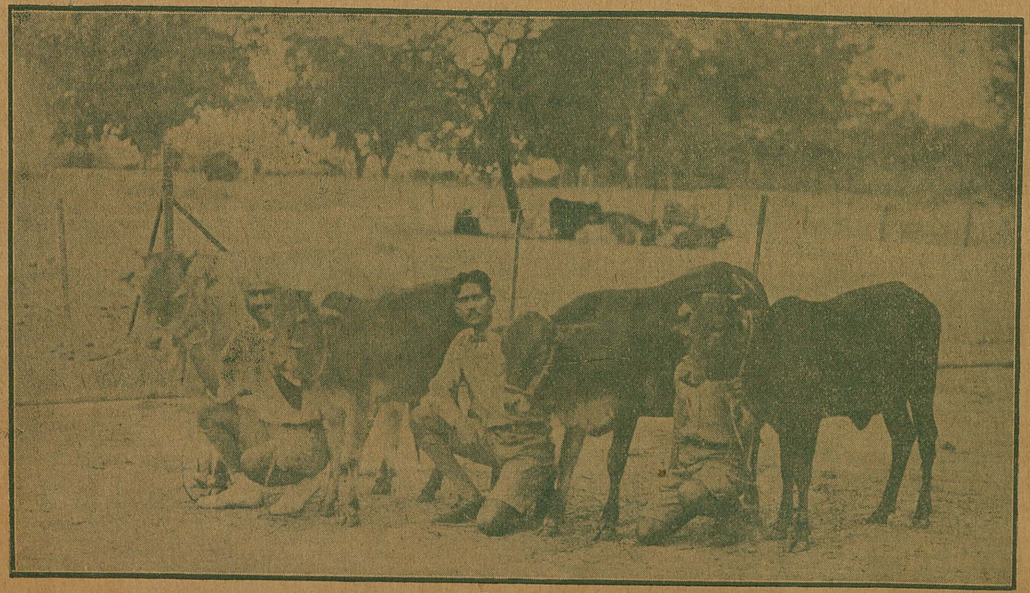

अमेरिकन साँड़ों द्वारा भारतीय गौओं से उत्पन्न हुई बछियाँ।

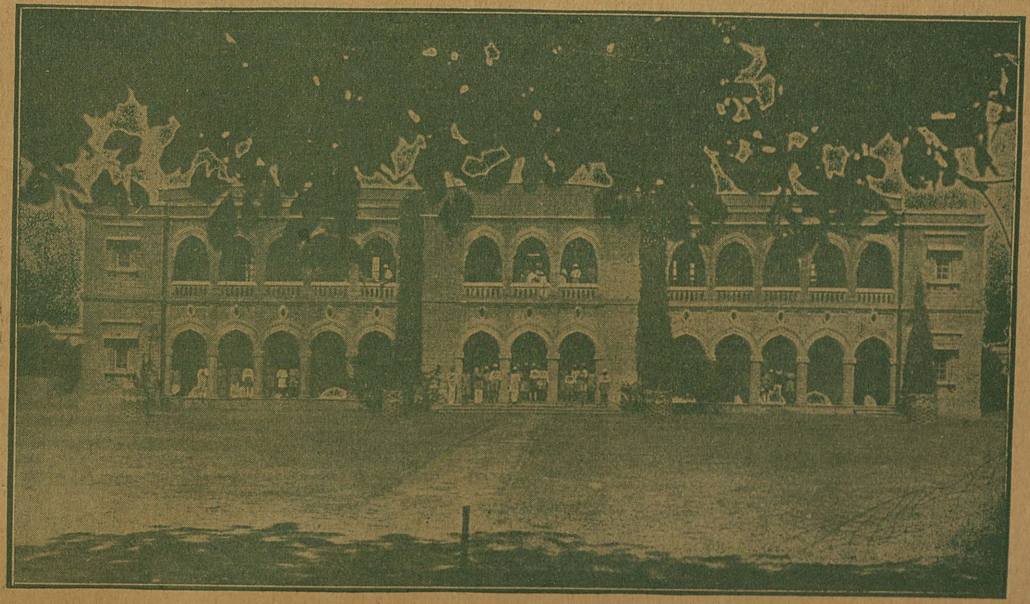

विज्ञानशाला का एक भाग।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

प्रयाग कृषि-विद्यालय सम्बन्धी कुछ दुर्लभ चित्र

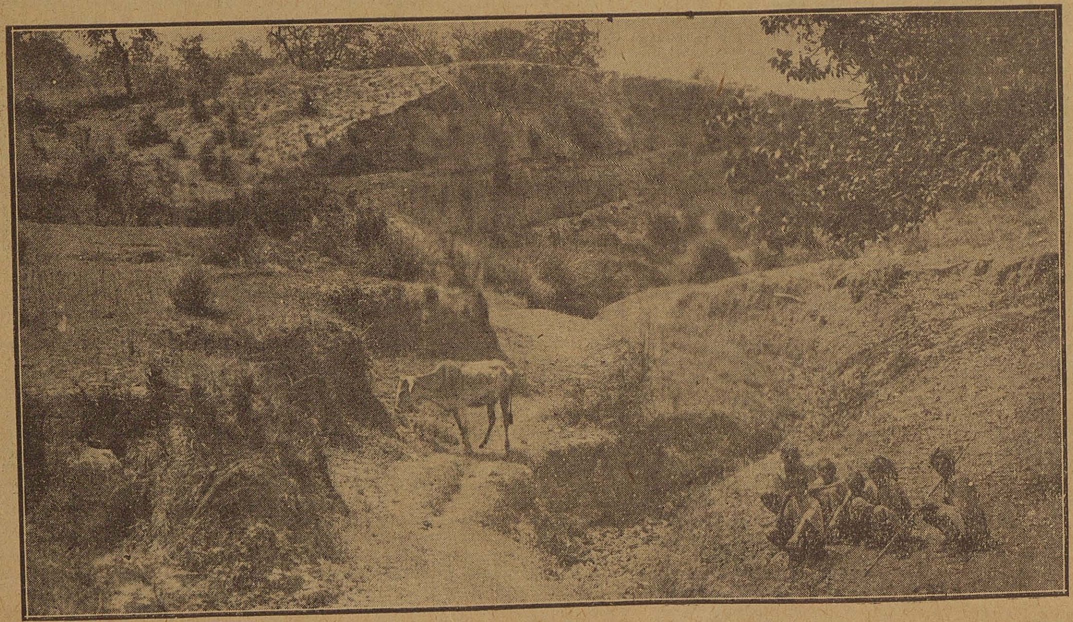

यही वह ज़मीन है, जिस पर विद्यालय ने पहले-पहल कार्य आरम्भ किया था। यह गड्ढों और नालियों से इस बुरी तरह भरी हुई थी कि इस पर मनुष्य या जानवर किसी के भी काम लायक़ कोई चीज़ पैदा न होती थी।

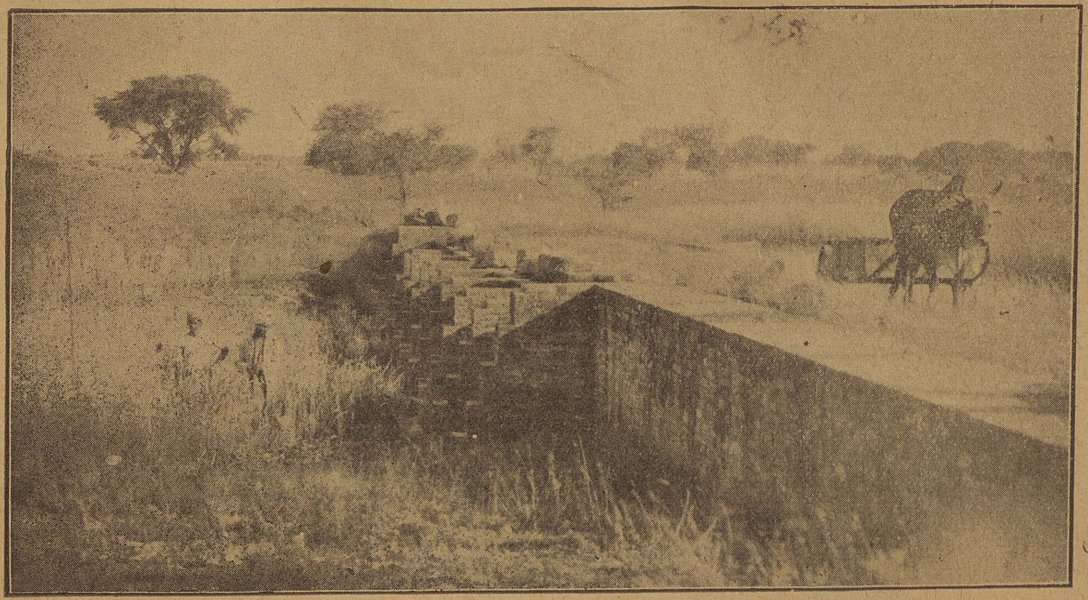

खेत को उपजाऊ बनाने वाला बाँध। विद्यालय ने ऐसे बाँध बाँध कर अपनी ऊसर और बञ्जर ज़मीन को भी अत्यन्त उपजाऊ बना लिया है।

विद्यालय के समीपवर्ती किसान अपने खेत में जौ और चने की फ़सल काट रहे हैं। इस ज़मीन में सिंचाई न होने के कारण गेहूँ नहीं पैदा होता। लेकिन ठीक इसी तरह की ज़मीन में कृषि-विद्यालय गेहूँ भी पैदा कर लेता है।

विद्यार्थी घास जमा करने के गड्ढे में घास भर रहे हैं। ये गड्ढे एक प्रकार के घास के बैङ्क हैं, जिनमें से ज़रूरत के समय घास निकाल कर काम चलाया जा सकता है।

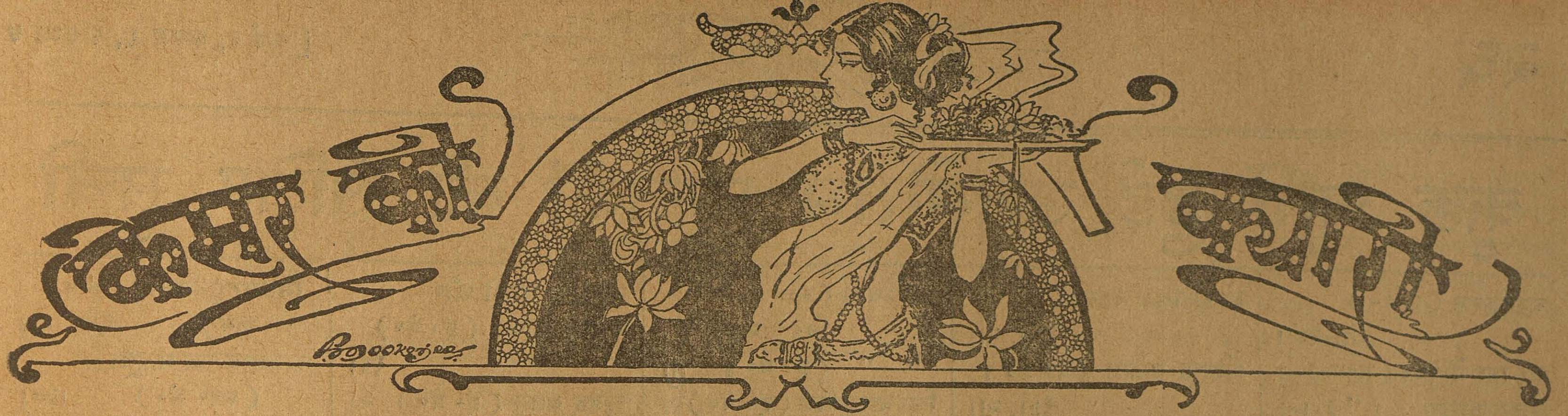

सितम है नुकीली छुरी उस निगह की, कलेजे में रखने के क़ाबिल यही है।
जलाए सताए कोई मेरे दिल को, सताने जलाने के क़ाबिल यही है॥

मेरे दिल को ठुकरा के, मुझसे वह बोले,
बड़ी धूम जिसकी थी वह दिल यही है!
न घबरा तहे ख़ञ्जरे[१] इश्क़ दम ले,
मज़ा का तो वक्त इसमें ऐ दिल यही है!
कली फूल की मल के चुटकी से उसने,
कहा मुझसे क्यों आपका दिल यही है!
जिसे शीशा समझा है ऐ मुहतसिब[२] तू,
न तोड़ इसको ज़ालिम मेरा दिल यही है!
मेरे नातवाँ दिल को देखा तो बोले,
हिला देगा जो अर्श[३], वह दिल यही है!

—"अमीर" लखनवी

ख़ुदा के लिए मेरे घर भूले-बिसरे,
चले आइए हसरते दिल यही है!

—"ग़ाफ़िल" इलाहाबादी

न है कोई ख़्वाहिश, न है कोई अरमाँ,
मिलो हमसे तुम हसरते दिल यही है!
तमाशा दिखाए जो दोनों जहाँ का,
ज़रा आप देखें तो वह दिल यही है!
वह मुट्ठी में क्या शै[४] छुपाए हुए हैं,
दिखाएँ, दिखाएँ, मेरा दिल यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

तेरा दोस्त मेरा उदू[५] दिल यही है,
तेरा बिस्मिलो मेरा क़ातिल यही है!
न छोड़ूँगा मैं तेरे नावक को ज़ालिम,
कि हसरत भरे दिल का क़ातिल यही है!
तड़प कर हमें दिल ने मारा तो समझे,
कि बिस्मिल के परदे में क़ातिल यही है!
मेरा दिल ही दुश्मन है, दिलबर[६] करे क्या,
वह है मुफ़्त बदनाम क़ातिल यही है!

—"अमीर" लखनवी

छुपेगी न महशर[७] में ख़ूँरेज़[८] चितवन,
जो देखेगा कह देगा क़ातिल यही है!

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

कहीं वह क़यामत में घबरा न जाएँ,
ख़ुदाई कहेगी कि क़ातिल यही है!

—"ग़ाफ़िल" इलाहाबादी

जफ़ा[९] तुम किए जाओ आने दो महशर,
हज़ारों में कह देंगे क़ातिल यही है!
यह किसने पुकारा कि ऐ मरने वालो,
इधर आओ तुम कूए क़ातिल[१०] यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

सितम है नुकीली छुरी उस निगह की,
कलेजे में रखने क क़ाबिल यही है!

१—ख़ञ्जर के नीचे, २—हिसाब करने वाला, ३—आकाश, ४—चीज़, ५—दुश्मन, ६—प्रेमिका, ७—प्रलय, ८—ख़ून बरसाने वाली, ९—ज़ुल्म, १०—क़ातिल की गली।

तमाशा मेरे दिल के दाग़ों का देखो,
चमन सैर करने के क़ाबिल यही है!
"अमीर" इस करम[११] पर मैं सदक़े कि उसने,
कहा मेरी रहमत[१२] के क़ाबिल यही है!

—"अमीर" लखनवी

मेरा बावफ़ा दिल, मेरा चुलबुला दिल,
कलेजे में रखने के क़ाबिल यही है!
कहें हम वह तस्वीर अपनी जो देखें,
गले से लगाने के क़ाबिल यही है!

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

वह क्यों मेरे दिल से न रक्खें कुदूरत[१३],
कि मिट्टी में मिलने के क़ाबिल यही है!
जलाए, सताए, कोई मेरे दिल को,
जलाने, सताने के क़ाबिल यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

रहे इश्क़[१४] में जिस जगह गिर पड़ा मैं,
कहा ज़ोफ़[१५] ने तेरी मञ्ज़िल यही है!
ख़ुदा वादिए[१६] इम्तिहाँ में सँभाले,
कड़ी राहे उलफ़त में मञ्ज़िल यही है!
अदम[१७] में फ़िराक़े अहिब्बा[१८] का ग़म क्या,
यहीं आएँगे सबको मञ्ज़िल यही है!
दिले दुश्मन उस हूर का घर बना है,
जहन्नुम में फ़िरदौस[१९] मञ्ज़िल यही है!

—"अमीर" लखनवी

मुहब्बत ही है दोनों दुनिया का मरकज़,
मजाज़ो[२०] हक़ीक़त[२१] की मञ्ज़िल यही है!

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

ठहरिए ठहरिए, मेरा दिल यही है,
यही है, यही ऐश[२२] मञ्ज़िल यही है!
ज़माने पे रौशन है हालाते दुनिया,
न ठहरें जहाँ हम वह मञ्ज़िल यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

नहीं उसको दुश्वार कुछ ज़िब्ह करना,
मैं हूँ सख़्त जाँ सख़्त मुश्किल यही है!
उदू को मैं उस बज़्म[२३] से तो उठाऊँ,
जगह उसकी दिल में है मुश्किल यही है!

—"अमीर" लखनवी

मुहब्बत की बातों पे रूठे हुए हैं,
मनाएँ उन्हें कैसे मुश्किल यही है!

—"ग़ाफ़िल" इलाहाबादी

कहाँ दिल है तुम हाथ रखते कहाँ हो,
निहायत ही भूले हो मुश्किल यही है।

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

११—कृपा, १२—दया, १३—मैल, १४—इश्क़ का मार्ग, १५—कमज़ोरी, १६—घाटी, १७—परलोक, १८—दोस्तों का बिरह, १९—बैकुण्ठ, २०—नक़ली इश्क़, २१—असली इश्क़, २२—आनन्द-भवन, २३—समा।

बुतों का न चाहें, बुतों को न पूछें,
हमारे लिए सख़्त मुश्किल यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

मेरी लाश पामाल[२४] करता है ज़ालिम,
अरे जान देने का हासिल यही है!

—"अमीर" लखनवी

रहो दिल में तुम हसरते दिल यही है,
यही है मुहब्बत का हासिल यही है!
लिपट जाओ सोने से क्यों मुनफ़इल[२५] हो,
हिकायत[२६] शिकायत का हासिल यही है!

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

तुम्हारी अदाओं पे क़ुर्बान जाऊँ,
यही है मुहब्बत का हासिल यही है!

—"ग़ाफ़िल" इलाहाबादी

कभी इस पे मरना, कभी उस पे मरना,
अगर है तो जीने का हासिल यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

खिला तख़्ता लाले[२७] का तो मैं यह समझा,
कि उसके शहीदों की महफ़िल यही है!

—"अमीर" लखनवी

तरसते हैं हम आज एक जुरआ[२८] मै[२९] को,
तेरा नज़्म[३०] साक़िए महफ़िल यही है!

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

भरोसा नहीं इम्बिसाते[३१] जहाँ का,
जो उड़ जाए वह रङ्ग महफ़िल यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

जो तुम हो मेरे दिल में तो दिल यही है,
यही घर है लैला का महमिल[३२] यही है!

—"अमीर" लखनवी

बगूला जब उठता है तो दिल में मजनूँ,
समझता है लैला का महमिल यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

"अमीर" उससे तेवर मेरे कह रहे हैं,
तेरी बाँकी चितवन का बिस्मिल[३३] यही है!

—"अमीर" लखनवी

उछलता तड़पता जो है दिल यही है,
तुम्हारी अदाओं का बिस्मिल यही है!

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

जो क़ातिल पे सदक़े हो वह दिल यही है,
जो दिन-रात तड़पे वह बिस्मिल यही है!
इसे देख ले, और पहिचान भी ले,
जो बिस्मिल है तेरा वह "बिस्मिल" यही है!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२४—कुचलना, २५—लज्जित, २६—कहना-सुनना, २७—एक फूल का नाम है, जिसके सीने में दाग़ होता है, २८—घूँट, २९—शराब, ३० इन्तज़ाम, ३१—आनन्द, ३२—एक तरह का पर्दा होता है, जो अरब में ज़नानी सवारी के लिए होता है, ३३—विह्वल।

कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकों की संक्षिप्त सूची

घटनाचक्र (व०प्रे०) २।), २॥।)

घर का भेदिया (व०प्रे०) ।)

चतुर जासूस (") ।-)

चन्द्रकान्ता (ला० बु० डि०) १॥)

चन्द्रकान्ता-सन्तति (२४ भाग)(ला० बु० डि०) ७॥)

चन्द्रभागा (") १॥)

चालाक चोर (व० प्रे०) १॥), २)

चीना सुन्दरी (") १॥), २)

जवाहरात का गोला (व० प्रे०) ॥)

ज़हर का प्याला (ब० ब० ऑ०) १)

जर्मन जासूस (व० प्रे०) १॥), २)

जर्मनी षड्यन्त्र (व० प्रे०) १॥), २)

जादू का महल (नि० चं०) १॥)

जादूगरनी (") १)

जाली ज़मींदार (") ।)

जासूस की झोली (नि० चं०) १), १॥)

जासूस की डाली (गं० पु० मा०) १॥), २)

जासूस के घर ख़ून (व० प्रे०) १॥), २)

जासूसी चक्कर (व० प्रे०) २॥), ३)

जासूसी पिटारा (व० प्रे०) ॥।)

टर्की का क़ैदी (व० प्रे०) १॥।), २।)

टापू की रानी (व० प्रे०) १॥।), २।)

डबल जासूस (व० प्रे०) १॥), २)

डॉक्टर साहब (व० प्रे०) १॥), २)

दिल्ली का व्यभिचार (हिं० पु०) १॥)

धनकुबेर (व० प्रे०) १॥।), २।)

नराधम (व० प्रे०) १=), १॥=)

पुतली-महल (चार भाग) (व० प्रे०) ३॥)

बोलशेविक रहस्य (") १॥।), २।)

भीषण डकैती (व० प्रे०) १॥), २।)

भूतनाथ (६ भाग) (ला० बु० डि०) १२)

मयङ्क मोहिनी (व० प्रे०) १)

महेन्द्र कुमार (५ भाग) (व० प्रे०) ५)

माया-महल (") १)

मोती-महल (६ भाग) (नि० चं०) ३॥)

लण्डन-रहस्य (४५ भाग) (व० प्रे०) २२॥)

विचित्र बूढ़ा (हिं० पु० ए०) १॥)

वेश्या-पुत्र (पु० भं०) २॥)

शैतानी करामात (नि० चं०) १॥), २।)

शैतान की शैतानी (हिं० पु० ए०) ३)

सुन्दरी अमेलिया (व० प्रे०) १॥।), २।)

सुन्दरी डाकू (व० प्रे०) १॥।), २।)

हवाई डाकू (ब० प्रे०) १॥)

गद्य-काव्य

अन्तस्तल (हिं० ग्रं० र०) ॥=)

अन्तर्नाद (सा० म० लि०) ॥।)

तरङ्गित हृदय (स० सा० प्र० मं०) ।≡)

मिस्टर व्यास की कथा (गं० पु० मा०) २॥), ३)

मेघनाद-बध (प्रका० पु० मा०) ॥।)

विचित्र प्रबन्ध (इं० प्रे०) २)

सौ अजान और एक सुजान (गं० पु० मा०) २)

सौन्दर्योपासक (ब० वि० प्रे०) ॥।)

संस्कृत-काव्य गद्य हिन्दी में

कविता-कौमुदी (वृ० भा०) ३)

कादम्बरी (सा० म० लि०) २॥।), ३।)

" " (इं० प्रे०) ॥)

किरातार्जुनीय (इं० प्रे०) २)

कुमारसम्भव (") १)

महाभारत (भाषा टीका) (आर्ष० ग्रं०) १२)

महाभारत (वार्तिक, दो भाग) १०)

" (इं० प्रे०) ८)

" (सचित्र) (बर्मन) ३), ३।)

महाभारत-मीमांसा (इं० प्रे०) ४)

मेघदूत (द्विवेदी जी) ।-)

" (राजा लक्ष्मणसिंह) ॥=)

रघुवंश (इं० प्रे०) ३)

वाल्मीकि रामायण (भाषा)(इं० प्रे०) १०)

वाल्मीकि रामायण (भाषा) १५)

वाल्मीकि रामायण (भाषा टीका) (आर्ष० ग्रं०) [illegible]

सुखसागर बड़ा (न० कि० प्रे०) १०)

" मझोला (") ५)

" गुटका (") २॥)

संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ (हिं० पु० ए०) ।=)

हितोपदेश (भाषा टीका) १=), १॥)

उर्दू, फ़ारसी और अरबी काव्य-ग्रन्थ

उर्दू कविता-कौमुदी (हिं० मं०) ३)

उर्दू कविता-कलाप (हिं० पु० ए०) ॥=)

कविरत्न मीर (हिं० पु० भं०) १॥।)

दाग़े-ज़िगर (हिं० पु० ए०) १।)

महाकवि अकबर (इं० प्रे०) १)

" ग़ालिब ॥)

" ज़ौक़ ॥।)

" दाग़ १)

" नज़ीर १)

मौलाना रूम और उनका काव्य (हिं० पु० ए०) १।)

मौलाना हाली और उनका काव्य (इं० प्रे०) १॥)

सुबह वतन (इं० प्रे०) २)

समालोचना

कालिदास और भवभूति (हिं० ग्रं० र०) १॥)

कालिदास और शेक्सपियर २)

कालिदास की निरङ्कुशता (इं० प्रे०) ।=)

देव और बिहारी (गं० पु० मा०) १॥।), २।)

प्राचीन पण्डित और कवि (गं० पु० मा०) ॥=), १।=)

भवभूति (") ॥=), १=)

मिश्रबन्धु विनोद (चार भाग) १०)

मतिराम-ग्रन्थावली (गं० पु० मा०) २॥), ३)

रवीन्द्र-कविता-कानन (निहाल०) २)

रामचरितमानस की भूमिका (हिं० पु० ए०) ३)

बिहारो सतसई (पद्मसिंह) (एक भाग) २)

विश्व-साहित्य (गं० पु० मा०) १॥), २)

साहित्य-मीमांसा (हिं० ग्रं० र०) १।=)

हिन्दी नवरत्न (गं० पु० मा०) ४॥), ५)

लेख-संग्रह और कथा-ग्रन्थ

अद्भुत अलाप (गं० पु० मा०) १), १।)

गद्य कुसुमावली (इं० प्रे०) २)

निबन्ध-निचय (गं० पु० मा०) १।), १॥।)

प्रेम-सागर (हिं० पु० ए०) २)

बिहार का साहित्य (हिं० पु० भं०) १॥)

बङ्किम-निबन्धावली (हिं० गं० र०) १)

मिश्रबन्धु-विनोद (तीन भाग) ६॥।), ८।)

साहित्य रत्न-मञ्जूषा (सर० भं०) ॥≡)

साहित्य विहार (सा० म० लि०) १)

साहित्य सुमन (गं० पु० मा०) ॥=), १=)

अर्थशास्त्र और व्यापार

अर्थशास्त्र-प्रवेशिका (इं० प्रे०) ।=)

ऋद्धि (इं० प्रे०) १॥।)

औद्योगिकी (रा० हिं० मं०) ॥।), १)

करेन्सी (वि० ब० ब० ज्ञा० मं०) १॥)

कौटिल्य अर्थशास्त्र-मीमांसा (इं०प्रे०) १॥)

गृह-शिल्प (ज्ञा० मं०) ।।)

दूकानदारी (स० हि०) ॥।)

मितव्यय (इं० प्रे०) ॥)

मितव्ययता (हि० ग्रं० र०) ॥।=)

रोशनाई बनाने की पुस्तक (वि० हु० मा०) ॥)

वाणिज्य (हिं० पु० ए०) ॥।=)

विक्रय-कला (हिं०पु०ए०) ॥)

विज्ञापन-विज्ञान (") १॥)

साबुन बनाने की पुस्तक (वि० हु० मा०) १)

खेती और पशु-पालन

आलू (वि० परि०) ।)

उद्यान (गं० पु० मा०) १=), १॥=)

किसानों की कामधेनु (गं० पु० मा०) ।=)

कृषि-कौमुदी (इं० प्रे०) १।)

कृषि-सिद्धान्त (कृ० भं०) ।-)

खाद (हिं० पु० ए०) १)

खाद और उसका व्यवहार (कृ०भं०) ।)

खाद का उपयोग (ज्ञा० मं०) १)

खेती पौड़ा गन्ना ऊख (कृ० भं०) ॥)

गोपालन (इं० प्रे०) ॥।)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

भारत में राज-विद्रोह क़ानून

[श्री० ब्रजमोहन भटनागर]

सन् १८३७ का ज़माना था। भारत के लिए क़ानून बनाने की बात छिड़ी हुई थी। लॉर्ड मेकॉले, जो भारत के सर्व-प्रथम क़ानून-सचिव थे, यह दावा करते थे कि उनको भारत का पूरा-पूरा ज्ञान है। भारत के अनेक धार्मिक भाव, अनेकानेक सामाजिक रीतियाँ तथा रहन-सहन इत्यादिकों से एक विदेशी का इतने थोड़े समय में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेना एक विचित्र बात है और फिर लॉर्ड मेकॉले तो हाकिम थे। जो हो, इसी घमण्ड में आकर उन्होंने भारत के लिए एक फ़ौजदारी क़ानून का मसौदा तैयार कर डाला और यह पार्लामेण्ट के सामने उपस्थित किया गया। परन्तु पार्लामेण्ट को उस समय इतना अनुराग कहाँ से आया कि करोड़ों विदेशियों से सम्बन्ध रखने वाली बात को यथेष्ट रूप से जाँचती। उसके लिए तो यही काफ़ी था कि एक माननीय सभासद अपनी पूरी जानकारी का दावा कर रहे थे और उस दावे का फल भोगना था, एक दूसरी जाति को। फिर क़सम खाने की गुञ्जाइश यह थी कि लॉर्ड मेकॉले भारत के शासन से सम्बन्ध रख चुके थे। बस, मसौदा विचार के लिए स्वीकार हुआ और प्रचलित प्रथा के अनुसार अङ्गरेज़ों की एक कमिटी के सुपुर्द कर दिया गया।

कहावत है कि जब कोई चीज़ सस्ती हाथ लग जाती है तो उसकी विशेष देख-रेख नहीं होती। अङ्गरेज़ जाति को जिस बात से मतलब था, वह यह थी कि भारत रूपी सोने की चिड़िया हाथ से न निकल जावे। बस, इसके आगे क्या होता है, यह उसके लिए कोई महत्व की बात न तब थी और न अब है। इस समय हमारा प्रसङ्ग केवल क़ानून का ही है इसलिए अन्य बातों से प्रयोजन नहीं। इस सम्बन्ध में यह प्रत्यक्ष है कि इङ्गलैण्ड और भारत के क़ानून और क़ानून बनाने की शैली में बड़ा अन्तर है। उनकी आवश्यकताएँ मनुष्यों की सी हैं परन्तु हमारी--ओह, शासित जाति की सुविधा पर विशेष ध्यान देने का अवकाश मिलना कठिन है। अपने लिए क्या एक व्यक्ति करोड़ों मनुष्यों पर लागू होने वाला क़ानून बना सकता था? माना कि वे बड़े क़ाबिल थे, परन्तु क्या उनकी क़ाबलियत अपनी जाति के लिए न थी; केवल हमारे ही लिए थी।

फिर भारत के ग़ैर-क़ानूनी क़ानून—रेग्यूलेशन व ऑर्डिनेन्स की शैली शासकों की अद्भुत रचना-शक्ति का और भी दुखद दिग्दर्शन करा देती है। हम अपने महान शक्तिशाली और सर्व अधिकार सम्पन्न ताज़ीरात (तथा अन्य फ़ौजदारी क़ानून के विधान) को ईश्वरीय दस आज्ञाओं से तुलना करें तो अनुचित न होगा। परन्तु, यह तो .खुदाई झञ्झट है, जिसको यदि छोड़ भी दें तो भी समझ में नहीं आता कि मेकॉले ने यह धृष्टता क्यों की। किसी किताब से तो पता चलता नहीं और दुर्भाग्यवश अपने लगाए हुए पौदे के फल खाने को वे आज जीवित भी नहीं हैं कि उनसे पूछ कर ही निश्चय कर लेते कि आख़िर उन पर इस ताज़ीरात हिन्द का इलहाम हुआ था या इस मुक़द्दस किताब को उन्होंने केवल कल्पना द्वारा ही डेढ़ दिन के झोंपड़े की तरह रच डाला। यदि माई लॉर्ड जीवित होते तो देखते कि सन् १८३७ में तो क्या आज सन् १९३१ में (९४ वर्ष और देखते रहने के बाद) भी उनको इस अभागे देश का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं। उनका ज्ञान जो कुछ भी उस दिन था (अथवा जो आज होता) वह विशेष रूप से इतना ही था कि वे स्वयं विजेता और सत्ताधारी हैं और हम पराजित और पराधीन। बस, और कुछ नहीं।

हम मानते हैं कि सुलेमान, ड्रेस, लाईसरजस आदि ने भी क़ानून-निर्माण करने का काम किया था, परन्तु इस तरह नहीं जैसे कि मेकॉले ने किया। पूर्वोक्त महाशयों ने स्वयं अग्रसर न होकर जनता के अनुरोध से ही इस काम में हाथ डाला। परन्तु मेकॉले के सम्बन्ध में कहीं कोई ऐसा प्रमाण नहीं मिलता कि भारत निवासियों ने क़ानून बनाने के लिए उनसे अनुरोध किया हो। सुलेमानादि का समय था एक-राज-शासन का और मेकॉले का समय था विधान-युक्त शासन का। जो काम उन लोगों के पुराने समय में भी नहीं हुआ करता था, वह भारत के लिए हुआ १९वीं शताब्दी के मध्य में। हा! स्वार्थ, तुम्हारी सिद्धि के लिए कोई समय नियत नहीं, तुम जब चाहो आ सकते हो और आकर स्वर्ग को भी नरक बना सकते हो। १९वीं शताब्दी में स्वतन्त्र प्रेम की बढ़ती हुई लहर भी तुम्हारे ही कारण दब गई थी। आज़ादी के प्रदीप्त उजाले में केवल तुम्हारी ही एक महिमा ऐसी है जो अन्धकार फैला सकती है। लॉर्ड मेकॉले की निजी योग्यता चाहे कुछ भी रही हो, यहाँ निजी जीवन का प्रश्न भी नहीं है। परन्तु यह कार्य तो उनकी स्वेच्छाचारिता और अनुदारता का पूरा-पूरा परिचय देता है। भला यह कैसे सम्भव है कि इस विधान को हम न्याय की युक्ति मान लें? वैसे तो वह स्वीकार है ही है--अब तक रहा है और आगे भी जब तक रहेगा, रहेगा। एक पराजित जाति पर सब कुछ लादा जा सकता है--'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं!' परन्तु प्रश्न तो यह है कि वह काम जो न्याय के नाम पर किया गया था, क्या सचमुच न्याययुक्त था? क्या यह उचित था कि एक गाँठ के मिल जाने से ही अपने को पंसारी समझ बैठने वाले लॉर्ड मेकॉले ने करोड़ों मनुष्यों के लिए बिना उनसे पूछे ही क़ानून बना डाला? क्या अङ्गरेज़ी सरकार को यह शोभा देता था कि वह इस प्रकार न्याय का विधान रचती? क्या तत्कालीन भारतीय धारा-सभा ने मेकॉले के उस आविष्कार को स्वीकार करके अनर्थ नहीं किया?

भारत के बड़े लाट साहब की कौन्सिल .खूब जानती थी कि उसकी नियुक्ति ब्रिटिश सम्राट द्वारा हुई है और उस नियुक्ति में भारत-निवासियों का कोई हाथ नहीं। इसलिए अङ्गरेज़ी हितों का साधन और रक्षण स्वभावतः उसका प्राथमिक कर्तव्य था। उस पर उत्तरदायित्व था ब्रिटिश सम्राट का, न कि भारतीय जनता का। इसलिए यह असम्भव नहीं कि उसको कल को जगह आज ही पूर्ण-शक्ति सञ्चय कर लेने की उत्सुकता और आवश्यकता हो। ऐसे विधान की जिसके द्वारा "न्याय" के नाम पर अपने स्वार्थ को सिद्ध करने का सुयोग प्राप्त हो जाय। यदि निष्पक्ष भाव से देखा जाए तो साफ़-साफ़ मालूम हो जाएगा कि "राज्य में विरुद्ध अभियोगों" को इतना विस्तार दिए बिना ही जनता के हित में शासन किया जा सकता था। अस्तु।

सम्राट का भारत से सम्बन्ध

ब्रिटिश सम्राट का भारत से सम्बन्ध स्थापित होने की घटना ऐतिहासिक है। सम्राट को भारत निश्चय ही अद्भुत रीति से प्राप्त हुआ। इस क्रय का आरम्भ एक अङ्गरेज़ी व्यापार-मण्डली से होता है, जिसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नाम से भारत में पदार्पण किया था। धीरे-धीरे इस कम्पनी ने इतनी "उन्नति" की कि जिसका शुमार भी कठिन है। प्रो० एडम्स ने कहा है कि "सम्भवतः सृष्टि के आदि से लेकर अब तक किसी धन्धे से इतना लाभ नहीं हुआ होगा, जितना कि भारत की लूट से।" ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टरों ने भी कहा है कि "हमारे विचार में देशीय व्यापार से जो अतुल सम्पत्ति प्राप्त हुई है, वह अनेकानेक अति भयानक अत्याचारों द्वारा ही हासिल की गई है। ऐसा ज़ालिमाना बर्ताव कभी किसी देश में नहीं हुआ।" अस्तु। धीरे-धीरे उसने मुग़ल-वंशीय भारत-साम्राट पर इतना सिक्का जमा लिया कि लगभग सौ वर्ष तक उनके नाम पर .खुद भारत का राज्य करती रही।

इस कम्पनी की स्थिति बड़ी मज़ेदार थी। यथार्थ में उसका सारा अस्तित्व अङ्गरेज़ी पार्लामेण्ट की एक आज्ञा (Magna Charta) पर निर्भर था। इसी आज्ञा के आधार पर आगे चल कर यह व्यापार-मण्डली इङ्गलैण्ड की सरकार का एक विभाग बन गई थी। क्यों न होता, "विभाग" "कमाऊ पूत" था, एक तो अपना और फिर कमाऊ-फिर भी उसको शासन-कार्य में सम्मिलित क्यों न किया जाता? दूसरी बात यह कि, भारतीय सम्राट द्वारा सम्मलित होकर तो यह भारत का शासन करती थी, परन्तु उस पर आतङ्क और उत्तर-दायित्व वर्तमान मुग़ल सम्राट का नहीं, बल्कि भावी अङ्गरेज़ी सम्राट का था। क्या .खूब, खायँ तो हमारा और गुण गाएँ दूसरों का। यह बात उस समय खुली जब कि भारत के शासन की बागडोर मुग़ल सम्राट (जो केवल नाममात्र के ही सम्राट रह गए थे) के हाथों से निकल कर इसी मण्डली द्वारा अङ्गरेज़ी सम्राट को प्राप्त हुई। भारतीय, इस शान्तिमय परिवर्तन के लिए क्या कह सकते थे? मुग़ल सम्राट ने न तो अपनी इच्छा से आत्म-समर्पण ही किया और न पद-परित्याग ही किया।

कम्पनी को मध्यस्थ बनाने की तो केवल एक युक्ति ही थी, जो राज्य-विज्ञान की नीति पर निर्भर थी। इस बात का उदाहरण इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है कि इङ्गलैण्ड और .फ्रान्स में सप्त-वर्षीय युद्ध के अन्त में (सन् १७६३) जो पेरिस की सन्धि हुई थी, उस समय फ़्रान्स ने यह प्रस्ताव किया था कि कम्पनी द्वारा उसके जीते हुए भारतीय प्रदेश उसको लौटा दिए जाएँ। परन्तु इङ्गलैण्ड ने उक्त प्रस्ताव को इस कारण से स्वीकार न किया कि कम्पनी प्रजापात्र है और भारतीय जायदाद उसकी निजी है, जिस पर उसको पूर्ण अधिकार है—राजा अपनी प्रजा की किसी भी निजी जायदाद पर निगाह नहीं डाल सकता।

मामला ख़त्म हुआ और बात आई-गई हो गई। परन्तु केवल १० वर्ष ही पीछे (सन् १७७३ ई० के) ब्रिटिश पार्लामेण्ट ने 'रेग्यूलेटिङ्ग एक्ट' के नाम से एक क़ानून बनाया, जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि अङ्गरेज़ी फ़ौज द्वारा अथवा विदेशी राजाओं से सन्धि

तीनों घड़ियाँ मुफ्त

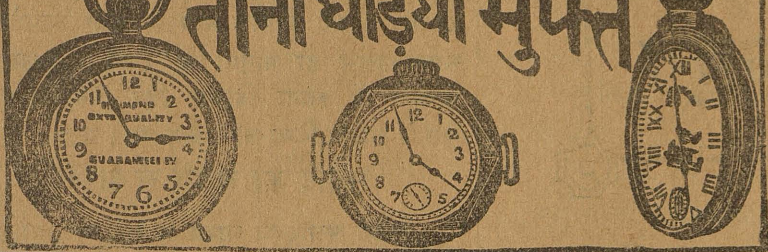

धोखा साबित करनेवालेको ५००) रु० ईनाम ।

नीचे लिखी दवाओंमें एकही या मिलाकर १२ शीशी लेनेसे मजबूत टाईम-पीस, २४ लेनेसे असली रेलवे पाकेट ३६ लेनेसे सुनहरी कलाई घड़ी मुफ्त ईनाम। प्रत्येक घड़ीकी गारन्टी ३ वर्ष। डाक खर्च अलग देना होगा।

[नोट—अर्क कपूर ।) पुदीना ।=) का ।), सुरमा ॥) का, कामिनी तैल ।॥) का ॥), कीमत कम करके भी पूरी ईमानदारीके साथ असली घड़ियां ईनाममें दो जा रही हैं। २७००० से ज्यादा ग्राहक और एजेन्ट हो चुके हैं। व्यापारियों-को खास दर, सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर देखिये, जरूर सन्तुष्ट होंगे।]

अर्क कपूर—हैजेकी शर्तिया दवा	कीमत ।)	**दादका मलहम**—२४ घंटेमें शर्तिया फायदा कीमत	।)
अर्क पुदीना सब्ज—अजीर्ण व पेट दर्द आदिमें	„ ।)	**प्राणदा**—सब तरहके बुखारोंमें अक्सीर	„ ।)
अर्क पीपरमेन्ट (तैल)—खाने व लगानेका	„ ।)	**सप्तगुण तैल**—जला, चोट, वाय-दर्द आदिमें	„ ।)
सुरमा—भीमसेनी कपूरसे बना हुआ	„ ।)	**अग्निमुख चूर्ण**—अत्यन्त्य स्वादिष्ट पाचक	„ ।)
नमक सुलेमानी—पेट रोगोंमें मशहूर	„ ।)	**कामिनी बिलास तैल**—सुगन्ध की खान	„ ॥)

पता—श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, हेड आफिस १०६, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, पोष्टबक्स ६८३५, कलकत्ता।

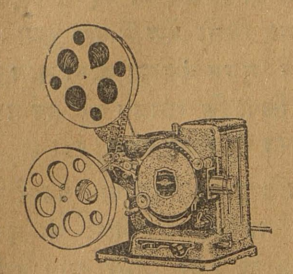

इस प्रतिष्ठित फ़र्म से हम पूर्णतया परिचित हैं और हमारा विश्वास है कि यहाँ से माल मँगाने वालों को कभी शिकायत करने का मौक़ा न मिलेगा।

—स० "भविष्य"

ग्रामोफ़ोन, फ़ोटो का सामान, गृह-सिनेमा, घरेलू जर्मन औषधियाँ, परफ़्यूमरी इत्यादि के थोक तथा खुदरा विक्रेता—

बी० सराफ़ एण्ड कम्पनी

नं० १५ चितरञ्जन एभेन्यु, साउथ कलकत्ता

सूचीपत्र के लिए लिखें

---

५)को पुस्तकें १॥) में

विश्वव्यापार—अर्क कपूर, सोडा-वाटर, रोशनाई, सिगरेट, शर्बत, रबड़ की मुहर बना धन कमाओ। मू० १)

साबुनसाज़ी—हर प्रकार के साबुन बनाना मू० १)

हिन्दी-इङ्गलिश टीचर—बिना मास्टर अङ्गरेज़ी पढ़ना-लिखना, बोलना, तार, अर्ज़ी वग़ैरह सीख लो। मू० १)

हारमोनियम, तबला, सितार गाइड—२-३ माह में गाना-बजाना बिना उस्ताद के तीनों चीज़ों को सीख लो। मू० १)

पूरा सेट १॥) में ख़र्च ।) एक पुस्तक का पूरा दाम।

पता—

सत्यसागर कार्यालय, नं० २५, अलीगढ़ सिटी

डॉ० डब्लू० सी० राय, एल० एम० एस० की

पागलपन की दवा

५० वर्ष से स्थापित

मूर्च्छा, मृगी, अनिद्रा, न्यूरस्थेनिया के लिए भी मुफ़ीद है। इस दवा के विषय में विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ कहते हैं कि—"मैं डॉ० डब्लू० सी० राय की स्पेसिफ़िक फ़ॉर इन्सेनिटी (पागलपन की दवा) से तथा उसके गुणों से बहुत दिनों से परिचित हूँ।" स्वर्गीय जस्टिस सर रमेशचन्द्र मित्र की राय है—"इस दवा से आरोग्य होने वाले दो आदमियों को मैं ख़ुद जानता हूँ।" दवा का दाम ५) प्रति शीशी।

पता—एस० सी० राय एण्ड कं०

१६७/३ कार्नवालिस स्ट्रीट,

या (३६ धर्मतल्ला स्ट्रीट) कलकत्ता

तार का पता—"Dauphin" कलकत्ता

डॉक्टर बनिए

घर बैठे डॉक्टरी पास करना हो तो कॉलेज की नियमावली मुफ़्त मँगाइए! पता—ईस्टर नेशनल कॉलेज (गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

३१ बाँसतल्ला गली, कलकत्ता

दुखदाई बवासीर

ख़ूनी या बादी, नई या पुरानी ख़राब से ख़राब चाहे जैसी बवासीर, भगन्दर हो, सिर्फ़ एक दिन में "हमारी दवा" बिना ऑपरेशन के जादू की तरह असर कर, अद्भुत फ़ायदा करेगी, तीन दिन में जड़ से आराम। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, फ़ायदा न हो तो चौगुना दाम वापस देंगे। क़ीमत २)

नेत्र सुधा-सागर सुर्मा

असली मोती तथा ममीरा आदि जङ्गली जड़ी-बूटियाँ मिला कर यह बना है, जिससे फूला, माड़ा, परवाल, रतौंधी, दिनौंधी, रोहे, गुहेरी, लाली, मोतियाबिन्द को आराम करने में रामबाण है, रोज़ाना लगाने से बुढ़ाई तक दृष्टि कम न होगी, यह नेत्र-रोगों की महौषधि है। क़ीमत १), तीन शीशी ३)

बहिरापन

कान के तमाम रोगों पर जैसे कान में पीप आना, जलन, खुजली, कान में भयङ्कर वेदना, कान बहना तथा बहिरापन नाश करने में हमारा चमत्कारी 'बहिरापन तेल' अमोघ है। हज़ारों कम सुनने वाले अच्छे हुए हैं। फ़ायदा न हो तो दाम वापस। क़ीमत २)

पता—शक्ति सुधा कार्यालय, बम्बई न० ४

"फेनका" बाल बनाने का साबुन

यह अत्यन्त सुगन्धित, निर्विकार, कृमिनाशक, पवित्र और स्निग्ध साबुन है। फेन में अधिकता और स्थायित्व है, जिससे बाल बनाने में सुविधा होती है। आप अपने यहाँ के किसी भी स्टेशनर से ख़रीद सकते हैं।

बनाने वाले:—

जादवपुरसोप-वर्क्स, ९ स्ट्रैण्ड रोड, कलकत्ता

व्यापार सम्बन्धी पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से कीजिए:—

ब्रॉडकास्ट कम्पनी, ५८ जॉन्स्टनगञ्ज, इलाहाबाद

करके जो कुछ भी प्राप्त हुआ हो, उस पर सरकार का अधिकार होगा। इस तरह अङ्गरेज़ी सरकार ने कम्पनी की भारतीय प्राप्ति में दाँत ही नहीं लगाए, वरन् वर्तमान शासन-प्रणाली की नींव भी डाली। जब अङ्गरेज़ी सरकार ने जल और स्थल-सेना द्वारा भारत में कम्पनी की सहायता की, तो क्या कम्पनी की हिमायत करने के उत्तरदायित्व से बच सकती है? स्पष्ट है कि कम्पनी ने भारत में ख़ूब कमाई की—जैसे बना वैसे लिया। लूट-मार, छीना-झपटी, चोरी, जाल-साज़ी, मक्कारी इत्यादि करने में भी सङ्कोच नहीं किया। फिर इन सब बातों के कारण यह कैसे कहा जा सकता है कि बुराई जो कुछ भी थी वह कम्पनी की और भलाई अङ्गरेज़ सरकार की।

सन् १८३३ ई० में चार्टर की जब बदली होने को थी तो यह बात उठी कि भारतीय सल्तनत का सञ्चालन कम्पनी के द्वारा ही जारी रक्खा जाए या स्वयं सम्राट शासन-भार को बराहरास्त ग्रहण कर लें। तत्कालीन मन्त्रि-मण्डल अन्य कामों की वजह से इस काम का उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहता था, इसलिए पार्लामेण्ट ने यही निश्चय किया कि अभी कम्पनी की मध्यस्थता ही जारी रहे। इस समय से कम्पनी व्यापार-मण्डली न रही, बल्कि सम्राट की सरकार में एक विभाग के रूप में परिणत हो गई। यही वह समय था, जब क़ानून बनाने की तजवीज़ हुई और प्रथम बार घोषणा की गई कि "न तो किसी भारतीय को और न जन्म के कारण स्वाभाविक प्रजा के किसी भी व्यक्ति को किसी पद पर नियुक्त होने में उसके धर्म, जन्म स्थान, नस्ल या रङ्ग के कारण कोई रुकावट न होगी।"

लॉर्ड मेकॉले के ताज़ीरात के मसौदे की जाँच के लिए जो कमीशन बैठा था, उसने सम्राट की स्थिति के सम्बन्ध में यह मत प्रकट किया कि कम्पनी को दीवानी (१२ अगस्त, सन् १७६५ ई०) मिलने के पश्चात् स्थिति में सचमुच ही गहरा परिवर्तन हो गया था, परन्तु यह कार्य इतनी शीघ्रता से हुआ कि यद्यपि भारतवासियों को अङ्गरेज़ी सम्राट की प्रजा बनना पड़ा, परन्तु फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि वे किस नियत समय से प्रजा हुए। वास्तव में यह बात बड़े महत्व की है, क्योंकि इसके अनुसार अङ्गरेज़ी सरकार का क़ानून की दृष्टि में कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता। इसी प्रसङ्ग में यह बात भी जानने योग्य है कि अङ्गरेज़ी क़ानून में राज-विद्रोह सम्बन्धी जिस धारा का समावेश तीसरे एडवर्ड के शासन-काल में हुआ था, उसी आधार पर मेकॉले साहब ने अपने मसौदे में भारत के लिए भी राज-विद्रोह-विधान रच डाला था। परन्तु इसके बारे में उक्त कमीशन ने यह मत प्रकट किया कि "कम्पनी के कई तीव्र बुद्धि और प्रतिष्ठित न्याय-अधिकारियों की राय में इङ्गलैण्ड का राज-विद्रोह क़ानून भारत जैसे देश पर न्यायतः लागू नहीं किया जा सकता।" इस कथन से यह भी सिद्ध होता है कि अङ्गरेज़ों को जो भक्ति अपने सम्राट के प्रति रखना अनिवार्य था, उस भक्ति की अङ्गरेज़ी न्याय-अधिकारी १९वीं शताब्दी के मध्य-काल में भी भारतवासियों से आशा नहीं करते थे। फिर भी सन् १८७० में उस सन्देहयुक्त बात को भी क़ानूनी प्रमाण प्राप्त हो गया और वह पूर्णरूप से ताज़ीरात में सम्मिलित हो गई।

इसी जाँच-कमीशन ने यह मत भी प्रकट किया था कि "भारतीय धारा-सभा को राज-विद्रोह सम्बन्धी क़ानून बनाने का अधिकार प्राप्त नहीं है।" इन सब बातों से यह तो प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है कि जिस संस्था ने यह क़ानून पास किया वह केवल विदेशी नीति के ही अधीन काम कर रही थी।

सम्राट के सम्बन्ध के बारे में यह सब कुछ इसलिए कहा गया है कि इङ्गलैण्ड और भारतवर्ष की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट हो जावे। इन प्रमाणयुक्त घटनाओं के मुक़ाबिले में यदि राज्य के पक्ष में कुछ कहा जा सकता है, तो यही कि ब्रिटिश सम्राट भारतवासियों की रज़ामन्दी से ही भारत का शासन कर रहे हैं। उन पक्षपातियों के हाथ के पत्तों में बस एक यही तुरुप है। परन्तु दुर्भाग्यवश वह भी कमज़ोर—दुग्गी, तिग्गी, जिससे इस मुर्ग़ का लड़ना भी कठिन है। वर्तमान काल में (सन् १९२९ के बाद से) तो पूर्ण-स्वतन्त्रता की माँग खुले तरीक़े से की जा रही है। इससे पूर्व के लिए जिस दशा को रज़ामन्दी कहा जाता है, वह यथार्थ में मजबूरी थी या असहाय अवस्था की ख़ामोशी।

यद्यपि सन् १७७३ ई० से आतङ्क जमाने की चेष्टा आरम्भ हो गई थी, परन्तु पहिली घोषणा जिसमें सम्राट ने भारतीय जनता को प्रजा स्वीकार किया, वह कदाचित सन् १८३३ ई० में हुई थी। उसके उपरान्त मार-काट बराबर चलती रही। फिर, सन् ५७ का ग़दर आया और सन् १८६० में ताज़ीरात बन गया। इस तरह से सन् १८६० से सन् १८७० तक का ही काल है जिसको रज़ामन्दी का ज़माना कह सकते हैं। यह अधिक से अधिक हैं, परन्तु इस भय से ख़ाली नहीं कि स्यात् भारतीय जनता ग़दर दबाने में अङ्गरेज़ों के नाना प्रकार के अत्याचार देख कर सन्नाटे में आ गई हो और भयभीत होकर कान दबाए हुए निर्जीव सी पड़ रही हो। क्रान्ति के बाद अधःपतन बहुधा देखा गया है, इसलिए सन् ६० से सन् ७० तक का निस्तब्ध काल कोई आश्चर्यजनक बात नहीं।

आज भारत में अङ्गरेज़ी राज्य सफल-मनोरथ है, परन्तु क्या सफलता का प्रमाण यही है कि उसके कारण एक रोए और दूसरा हँसे। अफ़लातून का मत है कि यदि अपने बाहुबल द्वारा हम किसी से कुछ छीन लें, तो हमारी यह प्राप्ति उस सफलता की गणना में नहीं आती, जिसका आदर्श ऊँचा है या जो अच्छी मानी जाती है।

पादरी (फ़ादर) जेरिए ने कहा था कि "क्या इने-गिने प्रशंसा या जय-घोष व्यक्तिगत और हार्दिक स्वीकृति के वास्तविक रूप माने जा सकते हैं? क्या कोई ऐसा समझौता उन करोड़ों आदमियों पर लागू हो सकता है, जिन्होंने समझौते को न तो सुना ही हो और न उसका समर्थन हो किया हो—अस्तु, साथ-साथ बिना अपने जान-माल को ख़तरे में डाले हुए जिसको अस्वीकार भी न कर सकते हों?"

हे समृद्धिशाली साम्राज्य, इतना न भूल कि आँखें खुली रहने पर भी अन्धा ही बना रह जाना पड़े। देख, तेरी इस दमन-नीति ने हमें जाग्रत कर दिया है और तुझे ख़ाना-ख़राब, तेरी वर्तमान स्थिति हम से दुर्बलों की आहों का ही नतीजा है! क्या आज भी तू हमारी प्यारी स्वतन्त्रता, हमारा वास्तविक अधिकार, हमारा जन्म-सिद्ध सम्मान, मनुष्य का प्राथमिक अधिकार हमसे पृथक रखना चाहता है? यह तेरी १२१ (अ) व १२४ (अ) तेरा नग्न-रूप दरसा रही हैं—यह तेरा कब तक साथ दे सकेंगी? उठ, देख और समझ; सन्तुष्ट भारत तेरा मित्र हो सकता है, परन्तु रुष्ट भारत अधीन होते हुए भी तेरा दुख निवारण नहीं कर सकता। ग़दर केवल परिवर्तन की इच्छा से कभी नहीं हुआ करता--उसका स्वाभाविक कारण है दुखों का बढ़ते-बढ़ते असह्य हो जाना। हम अब सहन की अन्त सीमा तक पहुँच गए हैं। हा! तेरे लिए भारतीय किस तरह लड़े, कटे और मरे, परन्तु बदले में क्या मिला—दुख और महान दुख! वह विजय लड़ने वालों की नहीं थी, बल्कि साम्राज्य और पूँजीवाद की थी। इसीलिए तो गत महायुद्ध ने संसार की गति ही बदल दी है।

सन् १८३७ ई० में लॉर्ड मेकॉले ने भारत के लिए फ़ौजदारी क़ानून का विधान बनाया और अङ्गरेज़ी राजद्रोह की धारा के आधार पर इस मसौदे में भी इसी आशय की धाराएँ जोड़ दीं। परन्तु उक्त मसौदा लगभग २० वर्ष तक योंही पड़ा हुआ सड़ता रहा, उसका प्रथम उपयोग सन् १८६० में हुआ और वह भी राजद्रोह सम्बन्धी धारा के बग़ैर। दस वर्ष पीछे आवश्यकता प्रतीत हुई कि यहाँ के फ़ौजदारी क़ानून में भी ऐसी गुञ्जाइश होनी चाहिए। बस, तत्कालीन ताज़ीरात को संशोधन करने के भाव से एक विशेष क़ानून (सन् १८७० का एक्ट नम्बर २७) पास हुआ। यह विशेष धारा मेकॉले की वही असली धारा थी, जिसने गर्भ में पदार्पण करने के लगभग ३३ वर्ष पीछे जन्म लिया।

सर जेम्स स्टीफ़न ने २ री अगस्त, सन् १८७० को धारा-सभा के सामने इस बिल को उपस्थित करते हुए कहा था कि उक्त राज-विद्रोह सम्बन्धी धारा सन् १८३७ के सर्व-प्रथम अङ्कित मसौदे में ११३ नम्बर पर विद्यमान थी, परन्तु ग़लती से ताज़ीरात हिन्द में शामिल होने से रह गई। इस धारा के अनुसार सरकार के प्रति अप्रीति-भाव उत्तेजित करने को अभियोग का रूप दिया गया है। परन्तु अप्रीति तथा विमति (विरुद्ध मत) में अन्तर है। सरकार के किसी काम से ऐसी कोई विमति रखना, जिसके द्वारा सरकार के क़ानूनी अधिकारों की अवज्ञा करने के भाव उत्पन्न न हों, और सरकार के क़ानूनी अधिकारों में बाधा डालने वालों से या सरकार को ही उलट देने वालों को नाजायज़ कार्रवाइयों के विरुद्ध सरकार की सहायता करना दूषित नहीं कहा जा सकता। इससे यह भली-भाँति ज़ाहिर है कि सरकार के कामों की ऐसी आलोचना करना, जिससे केवल उक्त प्रकार की अवस्था उत्पन्न हो सके, इस धारा की सीमा के बाहर है।

उसी वर्ष २५ नवम्बर को जाँच-कमिटी की रिपोर्ट पेश करते हुए माननीय सर स्टीफ़न ने कहा था कि "यह धारा जल्दी में नहीं बनाई गई, बल्कि यथार्थ में लॉर्ड मेकॉले के विधान में मौजूद थी, और प्रारम्भिक मसौदे के साथ-साथ जब संशोधित मसौदा डबल कॉलम में छापा गया, उस समय भी वर्तमान थी। परन्तु धारा-सभा में विचार करते समय, ग़लती से इस पर विचार ही न हुआ, इसलिए यह ताज़ीरात हिन्द में शामिल न हो सकी। अनुमान तो यही है कि कमिटी की भूल के कारण ही ऐसा हुआ।"

आगे चल कर आपने कहा कि "ऐसी भूल हो जाने पर सरकार का कर्तव्य यही है कि उसका निवारण करे। सर बारनीज़ पीकौक (क़ानून-मन्त्री जिनके काल में ताज़ीरात हिन्द पास हुआ था) ने इस धारा के आशय की ही धारा ताज़ीरात हिन्द में शामिल की थी। परन्तु उनकी बनाई हुई धारा प्रारम्भिक धारा से कहीं ज़्यादा कठोर होने के कारण कमीशन ने यही उचित समझा कि उनकी रचना की अपेक्षा प्रारम्भिक धारा को ही धारा-प्रमाण दिया जाए।

प्रारम्भिक धारा भी, जो इस समय उपस्थित है, इस विषय पर अत्युत्तम नहीं है, परन्तु कमिटी का मत यह है कि कमिश्नरों ने उसको जैसा निश्चित कर दिया था वैसा ही रहने देना चाहिए। यद्यपि यह धारा इङ्गलैण्ड की राजद्रोह सम्बन्धी धारा के आधार पर ही करवाई गई थी, फिर भी यह उससे अधिक विहित और स्पष्ट है तथा उसकी सी मलीन या अनिश्चित नहीं है, इत्यादि।"

यह विचित्र बात थी कि भारत के जजों में न्याय-प्रेम के लिए इतना ऊँचा दर्जा रखने वाले जज को, वारेन हेस्टिंग्स और लॉर्ड क्लाइव की जीवनी के सुविख्यात लेखक (मेकॉले) द्वारा बनाई हुई धारा से भी कहीं ज़्यादा कठोर धारा निर्माण करनी पड़ी।

विद्याविनोद-ग्रन्थमाला

की

विख्यात पुस्तकें

आशा पर पानी

यह एक छोटा सा शिक्षाप्रद, सामाजिक उपन्यास है। मनुष्य के जीवन में सुख-दुख का दौरा किस प्रकार होता है; विपत्ति के समय मनुष्य को कैसी-कैसी कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती हैं; परस्पर की फूट एवं वैमनस्य का कैसा भयङ्कर परिणाम होता है—इन सब बातों का इसमें बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलेगा। क्षमाशीलता, स्वार्थ-त्याग और परोपकार का बहुत ही अच्छा चित्र खींचा गया है। मूल्य केवल ॥=) स्थायी ग्राहकों से ।=)॥

गौरी-शंकर

आदर्श-भावों से भरा हुआ यह सामाजिक उपन्यास है। शङ्कर के प्रति गौरी का आदर्श-प्रेम सर्वथा प्रशंसनीय है। बालिका गौरी को धूर्तों ने किस प्रकार तङ्ग किया। बेचारी बालिका ने किस प्रकार कष्टों को चीर कर अपना मार्ग साफ़ किया, अन्त में चन्द्र-कला नाम की एक वेश्या ने उसकी कैसी सच्ची सहायता की और उसका विवाह अन्त में शङ्कर के साथ कराया। यह सब बातें ऐसी हैं, जिनसे भारतीय स्त्री-समाज का मुखोज्ज्वल होता है। यह उपन्यास निश्चय ही समाज में एक आदर्श उपस्थित करेगा। छपाई-सफ़ाई सभी बहुत साफ़ और सुन्दर है। मूल्य केवल ।॥)

मानिक-मन्दिर

यह बहुत ही सुन्दर, रोचक, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। इसके पढ़ने से आपको पता लगेगा कि विषय-वासना के भक्त कैसे चञ्चल, अस्थिर-चित्त और मधुर-भाषी होते हैं। अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए वे कैसे-कैसे जघन्य कार्य तक कर डालते हैं और अन्त में फिर उनकी कैसी दुर्दशा होती है—इसका बहुत ही सुन्दर तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा मधुर है। मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥=)

मनोरमा

यह वही उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में क्रान्ति मचा दी थी!! बाल और वृद्ध-विवाह से होने वाले भयङ्कर दुष्परिणामों का इसमें नग्न-चित्र खींचा गया है। साथ ही हिन्दू-विधवा का आदर्श जीवन और पतिव्रत-धर्म का बहुत सुन्दर वर्णन है। मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥=)

शुक्ल और सोफ़िया

इस पुस्तक में पूर्व और पश्चिम का आदर्श और दोनों की तुलना बड़े मनोहर ढङ्ग से की गई है। यूरोप की विलास-प्रियता और उससे होने वाली अशान्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है। शुक्ल और सोफ़िया का आदर्श जीवन, उनकी निःस्वार्थ देश-सेवा; दोनों का प्रणय और अन्त में संन्यास लेना ऐसी रोमाञ्चकारी कहानी है कि पढ़ते ही हृदय गद्गद् हो जाता है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥=)

नयन के प्रति

हिन्दी-संसार के सुविख्यात तथा 'चाँद'-परिवार के सुपरिचित कवि आनन्दीप्रसाद जी की नौजवान लेखनी का यह सुन्दर चमत्कार है। श्रीवास्तव महोदय की कविताएँ भाव और भाषा की दृष्टि से कितनी सजीव होती हैं—सो हमें बतलाना न होगा। इस पुस्तक में आपने देश की प्रस्तुत हीनावस्था पर अश्रुपात किया है। जिन ओज तथा करुणापूर्ण शब्दों में आपने नयनों को धिक्कारा और लज्जित किया है, वह देखने ही की चीज़ है—व्यक्त करने की नहीं। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय! दो रङ्गों में छपी हुई इस सुन्दर रचना का न्योछावर केवल ।=); स्थायी ग्राहकों से ।)॥ मात्र!!

सती-दाह

धर्म के नाम पर स्त्रियों के ऊपर होने वाले पैशाचिक अत्याचारों का यह रक्त-रञ्जित इतिहास है। इसके एक-एक शब्द में वह वेदना भरी हुई है कि पढ़ते ही आँसुओं की धारा बहने लगेगी। किस प्रकार स्त्रियाँ सती होने को बाध्य की जाती थीं, जलती हुई चिता से भागने पर उनके ऊपर कैसे भीषण प्रहार किए जाते थे—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा! सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥=)

प्राणनाथ

यह वही उपन्यास है, जिसकी ६००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। इसमें सामाजिक कुरीतियों का ऐसा भण्डाफोड़ किया गया है कि पढ़ते ही हृदय दहल जायगा। नाना प्रकार के पाखण्ड एवं अत्याचार देख कर आप आँसू बहाए बिना न रहेंगे। शीघ्रता कीजिए! मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥=)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

धारा १२४ (अ) का आशय इस प्रकार है :—

"जो कोई बोल कर या लिख कर अथवा इशारों से या प्रत्यक्ष में कुछ प्रदर्शन करके या किसी भी और तरीक़े से, सम्राट के या ब्रिटिश भारत में क़ानून द्वारा स्थापित सरकार के विरुद्ध घृणा और तिरस्कार के भावों को उत्तेजित करता हो या उत्तेजित करने की चेष्टा करता हो या अप्रीति फैलाता हो या फैलाने का चेष्टा करता हो तो उसे निम्न-लिखित दण्ड दिया जायगा—

आजन्म या थोड़े काल के लिए कालापानी, जिसके साथ जुर्माना भी किया जा सकता है। और ३ वर्ष तक की जेल, जिसके साथ भी जुर्माना किया जा सकता है।

व्याख्या १—"अप्रीति" शब्द में राज-भक्ति का लोप तथा बैर-भाव, दोनों ही शामिल हैं।

व्याख्या २—बिना घृणा, तिरस्कार या अप्रीति उत्तेजित किए हुए (अथवा उत्तेजित करने की चेष्टा किए हुए) सरकार के कामों से ऐसी विरुद्ध सम्मत्ति रखना जिसका भाव यह हो कि क़ानून युक्त रीति से उन कामों में परिवर्तन कराया जा सके, तो वह विरुद्ध सम्मति इस धारा की सीमा के बाहर होगी।

व्याख्या ३—बिना घृणा, तिरस्कार या अप्रीति उत्तेजित किए हुए (या उत्तेजित करने की चेष्टा किए हुए) सरकार के शासन-सम्बन्धी या अन्य कामों से विरुद्ध मत प्रकट करने के हेतु आलोचना करना भी इस धारा के अनुसार अभियोग नहीं होगा।

शब्द

क़ानून में शब्द और भाषा का बड़ा महत्त्व है, क्योंकि सारा खेल उनसे ही बनता और बिगड़ता है। धारा को पढ़ने से ही मालूम हो जाता है कि हमारे निजी विचारों पर उसका कोई असर नहीं, बल्कि इसके अनुसार अभियोग केवल उस समय ही लग सकेगा कि जब हम दूसरे के विचारों में अप्रीति, घृणा और तिरस्कार के भाव उत्तेजित करें।

इस विषय पर अभी और अधिक न लिख कर केवल शब्दों पर ही विचार करेंगे।

सब से पहिले जो शब्द हमारे सामने उपस्थित होते हैं, वे हैं—"अप्रीति", "घृणा" और "तिरस्कार"। यह कहने की आवश्यकता नह कि यह तीनों ही एक-दूसरे से भिन्न आशय के शब्द हैं। किसी विशेष दशा में यदि कुछ मिलते-जुलते हुए मान भी लिए जाएँ, तो इससे उनका असली भाव विलुप्त नहीं हो सकता, क्योंकि वे तीनों ही भिन्न-भिन्न गतियों को प्रकट करते हैं। "अप्रीति" शब्द को पहिली व्याख्या में काफ़ी बड़ा विस्तार दे दिया गया है। यानी यह कि राज-भक्ति का लोप और बैर-भाव दोनों ही उस परिभाषा में आ जाते हैं। परन्तु और दोनों शब्द ऐसे निश्चित भाव से सम्बन्ध रखते हैं कि उनकी न व्याख्या की ज़रूरत है और न किसी मीमांसा की।

इन शब्दों के बाद ही 'उत्तेजना' पर निगाह पड़ती है। 'उत्तेजना'—किसी वर्तमान चीज़ में हो सकती है। 'उत्तेजना' 'उत्पत्ति' से भिन्न है; क्योंकि उत्तेजना तो किसी वर्तमान चीज़ में तेज़ी या ज़्यादती करती है, परन्तु 'उत्पत्ति' किसी चीज़ का बिल्कुल ही नव-विकास करती है। उसका यह स्वाभाविक गुण है, जिसमें न किसी दलील की ज़रूरत है और न किसी सबूत की। उत्तेजना के प्रसङ्ग में ही 'प्रकाशन' भी आ जाता है। यह दोनों भी एक नहीं, क्योंकि हम अपने विचार को केवल प्रकट करके ही तो दूसरे को उत्तेजित नहीं कर देते। यथार्थ में दूसरे को उत्तेजना उसी समय होती है, जब हम दूसरे को उत्तेजित करना चाहें। यदि हम अपने विचार (चाहे वे ईश्वर के ख़िलाफ़ हों या सरकार के या और किसी के) केवल 'प्रकाशन' मात्र ही कहें, तो हम कोई गुनाह नहीं करते; क्योंकि अपने विचार ज़ाहिर कर देने में हमारे लिए कोई रोक नहीं। साहित्य और इतिहासादि इसीसे तो बचे हुए हैं। सारांश यह कि कोई भी घटना या अपना स्वतन्त्र विचार, हम निर्भय होकर प्रकट कर सकते हैं। जब तक उनसे दूसरों को उत्तेजना न मिले, उस समय तक वे १२४ (अ) की सीमा के बाहर हैं।

अब, उत्तेजना भी एक विशेष प्रकार से क्रम-बद्ध की गई है। अर्थात् वह उत्तेजना सम्राट या क़ानून द्वारा स्थापित सरकार के विरुद्ध होनी चाहिए। सम्राट का भारत से जो सम्बन्ध है, उस पर ऐतिहासिक दृष्टि पहिले ही डाल चुके हैं, फिर भी, क़ानून का जो विधान है वह शिरोधार्य है, परन्तु क़ानूनी रीति से ही। सम्राट की राजनीतिक या शासन-सम्बन्धी स्थिति जो कुछ भी है, उसके सिवाय उनका व्यक्तिगत रूप भी है! इसलिए यह नहीं हो सकता कि उनके विरुद्ध जो कुछ भी लिखा या बोला जाए, वह सब केवल विद्रोह ही माना जा सके। सम्राट को बुज़दिल अथवा मूर्ख कहना राज-द्रोह नहीं। इसी तरह उनको झूठा, धोखेबाज़, प्रजा के साथ विश्वास-घात करने वाला, सिंहासन की प्रतिष्ठा भङ्ग करने वाला इत्यादि कहने से भी दफ़ा १२४ (अ) का जुर्म क़ायम नहीं होता। वह पागल है, मन्त्रि-मण्डल के हाथ की कठपुतली है, नीति के बड़े-बड़े प्रश्नों को भी उलटा ही समझता है, भी इस गिनती में नहीं आते। उक्त बातों के कारण निन्दा या हतक-इज़्ज़ती का अभियोग लग सकता है, परन्तु राजद्रोह का नहीं।

अब, ब्रिटिश भारत में क़ानून द्वारा स्थापित सरकार का महत्त्व नहीं है, जिसका उल्लेख ताज़ीरात हिन्द की दफ़ा १७ में किया गया है। क़ानून द्वारा स्थापित सरकार तो हमेशा ही हुआ करती है। क्या कोई सरकार ऐसी होती है जो अपने को ग़ैर-क़ानूनी कहते हुए भी शासन जारी रक्खे? यथार्थ में किसी भी सरकार का क़ानूनी या ग़ैर-क़ानूनी होना उसके वर्तमान काल में निश्चय नहीं हुआ करता, यह बात तो उस सरकार के अन्त होने पर ही उठती है। हाँ, यदि कोई विशेषण ऐसा लगा हुआ होता, जैसा कि "अङ्गरेज़ी सरकार," "मुस्लिम सरकार" इत्यादि तो और बात थी। केन्द्रीय सरकार में उत्तरदायित्व की मौजूदा माँग इस बात को सिद्ध करती है कि वर्तमान सरकार के अलावा और सरकार भी क़ानूनी हो सकती हैं। इस धारा की दूसरी व तीसरी व्याख्याओं में आलोचना को क्षमता प्रदान करने का अर्थ यही है कि सरकार अपनी अपूर्ण दशा को स्वीकार करती हुई सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव करती है। इन सब प्रत्यक्ष बातों के साथ केवल एक पेचीदगी उपस्थित हो गई है और वह है आलोचना की कोटि (Standard) और सीमा। कुछ काल पहिले यदि हम वे सब बातें कहते जो आज खुले तरीक़े पर कहते हैं, तो निश्चय ही जहन्नुम भेज दिए गए होते। एक ज़माना था, जब 'सेल्फ़-गवर्नमेण्ट' भी नहीं कह सकते थे, परन्तु धीरे-धीरे होम-रूल भी कहा, स्वराज्य भी कहा और अब डङ्के की चोट पूर्ण-स्वतन्त्रता की कामना कर रहे हैं। वही संस्था, जिसका नाम कॉङ्-ग्रेस है, अपने प्रारम्भिक काल के सङ्कोच को परित्याग करके पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव ही पास नहीं कर सकती, बल्कि सरकार से सम्मुख लड़ाई भी लड़ सकती है। न तो अब वह दबी हुई ज़बान ही है और न कहते-कहते गर्दन मटका कर अपने चारों तरफ़ देखने की आदत। कहने का मतलब यह कि यदि हमारे इस उन्नत-स्वभाव को यथेष्ट महत्व दिया जाए, तो वक़्त बेवक़्त जो हम १२४ (अ) के नाम पर परेशान किए जाते हैं, वह बन्द हो जाएगा।

धारानुसार अप्रीति-भाव उत्तेजित करके असन्तोष फैलाना, जिससे बग़ावत खड़ी हो जाए अथवा सरकार का इतना तिरस्कार करना कि उसके न्याय-विधान पर प्रजा की श्रद्धा न रहे और प्रजा विमुख हो जाए, तो यह कार्य, यदि हम जान-बूझ कर करें, तो निश्चय ही राज-द्रोहात्मक होगा।

धारा १२४ (अ) में "अथवा" शब्द का कई दफ़े प्रयोग किया गया है। इसका कारण यही मालूम होता है कि धारा का विस्तार अधिकाधिक बढ़ जाए। अस्तु। धारा के दो मुख्य भाग हैं —

(१) जो कोई वक्तृता या लेखादि द्वारा सम्राट या अधिकार-सम्पन्न सरकार के प्रति अप्रीति, घृणा या तिरस्कार के भाव उत्तेजित करता है; और (२) जो कोई ऐसे भाव उत्तेजित करने की चेष्टा करता है।

यह दोनों ही भाग लगभग एक से हैं—दण्ड भी समान है और महत्त्व भी बराबर ही। परन्तु अन्तर यह है कि एक में नियत रूप से 'उत्तेजना' का उल्लेख है और दूसरे में उस उत्तेजना की चेष्टा का। राज-द्रोहात्मक उत्तेजना का कार्य निश्चय ही प्रत्यक्ष घटना की बात होने के कारण सरल है, परन्तु उत्तेजना की चेष्टा ऐसी बात है, जिस पर बहुत-कुछ कहा जा सकता है, इसलिए अब इस पर ही विचार करेंगे।

सबसे पहिले तो यही देखना है कि चेष्टा क्या है? चेष्टा निश्चय ही वह विचारयुक्त, पूर्व अङ्कित और कल्पित कार्य है, जिसका सिद्ध होना स्वाभाविक हो। अर्थात् उस काम के शुरू से आख़िर तक का पूरा नक़शा बना लिया गया हो और दर्जा-बदर्जा कामयाबी की तदबीर निकाल ली गई हो। इतना कर लेने पर भी यदि वह इच्छित फल हाथ न लगे, तो उस असफलता का कारण केवल अपना स्वतन्त्र कार्यक्रम न हो, बल्कि कोई ऐसा संयोग उपस्थित हो जाए जो हमारे अधिकार के बाहर हो। इस विषय पर उपयुक्त उदाहरण यह है कि एक मनुष्य दूसरे को मार डालने की इच्छा से बन्दूक़ भरे, निशाना स्थिर करके घोड़ा भी दबाए, परन्तु अन्य किसी शक्ति के द्वारा अकस्मात् एक दीवार सी बीच में खड़ी होकर गोली को जज़्ब कर ले और निशाना न लगने दे। विदित होगा कि यद्यपि निशाना नहीं लगा, परन्तु कर्ता की चेष्टा में कोई भी कमी नहीं रह गई थी। यदि कर्ता को असफलता प्राप्त हुई तो अपने कार्य-क्रम की त्रुटि की वजह से नहीं, बल्कि ऐसी वजह से कि जिस पर उसका कोई प्रभुत्व न था।

ताज़ीरात हिन्द की दफ़ा ५११ में एक और प्रकार की अधूरी चेष्टा का भी उल्लेख है, परन्तु दफ़ा ५११ की और दफ़ा १२४ (अ) की चेष्टाओं में अन्तर यह है कि १२४ (अ) की चेष्टा चेष्टा ही नहीं, जब तक कि वह उदाहरण की सी पूरी न हो—अर्थात् सिद्धि की हद तक की गई हो और यदि असफल रहे तो किसी बाहिरी प्रभाव के कारण। इसलिए अप्रीति उत्तेजित करने की चेष्टा भी इस हद तक होनी चाहिए कि ज्योंही सफलता प्राप्त होने वाली हो कि फ़ौज, पुलिस आदि का बाहरी कारण अकस्मात् उपस्थित होकर उस उत्तेजना के इच्छित परिणाम को रोक दे।

यह तो हुई चेष्टा की परिभाषा, अब वह कब और कैसे की जा सकती है? अभियुक्त का विचार ही इस चेष्टा का एकमात्र कारण और आधार हुआ करता है। बैर-भाव या अप्रीति-भाव बिना सोचे हुए स्वयम् उत्पन्न नहीं हो सकते। भावना और कल्पना, यह प्रत्येक इरादे के लिए आवश्यक गुण हैं।

समझने की बात है कि जब तक किसी मनुष्य के हृदय में दूसरे के प्रति घृणा या अप्रीति के भाव न हों, तो वह उन भावों को फैलाएगा कहाँ से? बिना विचार किए हुए कोई भी किसी दूसरे के ख़िलाफ़ अप्रीति नहीं फैला सकता। कहने का अभिप्राय यह है कि इरादे का

"बी" केटलॉग दाम ॥)
"सी" केटलॉग दाम ।)

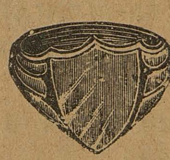

सोने-चाँदी के फैन्सी जेवर के लिए

सोनी मोहनलाल जेठाभाई

३२ आःमनी स्ट्रीट, टेलीफ़ोन नं० ३१४३, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता

पोस्टेज भेज कर मँगाइए !

गृहस्थ का सच्चा मित्र

३० वर्ष से प्रचलित, रजिस्टर्ड

चन्द्रामृत

बालक, वृद्ध, जवान, स्त्री, पुरुषों के शिर से लेकर पैर तक के सब रोगों की अचूक रामबाण दवा। हमेशा पास रखिए, वक्त पर लाखों का काम देगी। सूची मय कलेण्डर मुफ़्त मँगा कर देखो।

क़ीमत ॥।) तीन शीशी २) डा० म० अलग।

पता—चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा

३० साल पुरानी कलकत्ते की विश्वसनीय आढ़त

हमारे ज़रिए से कलकत्ते का कोई भी माल थोक या खुदरा १) से १ लाख रुपया तक का अपने शौक़ या घर के लिए अथवा व्यापार के लिए मँगाइए। अन्दाज़ चौथाई रक़म पेशगी आने से २४ घण्टे के अन्दर बाज़ार भाव माल भेजेंगे। चिट्ठी-पत्री से भाव वग़ैरह पूछ सकते हैं। खुदरा माल पर आढ़त -) फ़ी रुपया और थोक माल पर १) सैकड़ा लेंगे। याद रखिए ठगाए जाने की सम्भावना नहीं, पक्की गारण्टी से काम होता है।

भोलानाथ ब्रादर्स, २९ बलराम स्ट्रीट, कलकत्ता

होमियोपैथिक दवाइयाँ

विशुद्ध अमेरिकन दवाइयाँ प्रति ड्राम -)।, -)॥ व अमेरिका से असली दवा अङ्गरेज़ी पुस्तक, शीशी, काग, गोली आदि मँगा कर सस्ते दर में बेचते हैं।

हैज़ा व सब बीमारियों की दवा, हिन्दी में किताब ड्रापर सहित १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४, १०४ दवाओं का दाम केवल २), ३), ३॥), ४॥), ६॥), ९), ११) रु० डाक-खर्च अलग। वायोकेमिक दवाइयाँ प्रति ड्राम -)॥। वायोकैमिक दवाइयों का बक्स, एक किताब व १२ दवाइयों के साथ मूल्य २॥) डाक-खर्च ॥।-) अलग।

सूचीपत्र मुफ़्त

पता—मजुमदार चौधुरी एण्ड कम्पनी
नं० ९८, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं रही!

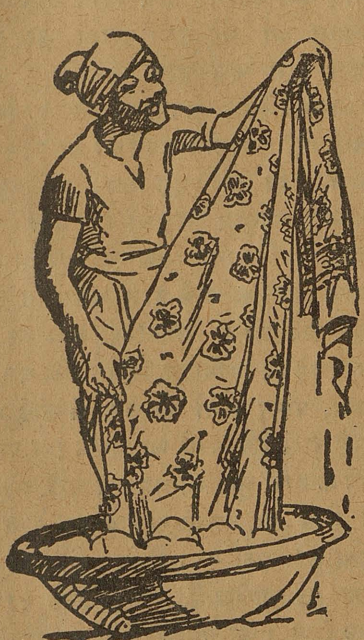

आप "निरमोलिन" से अपने रेशमी, ऊनी आदि सब प्रकार के रङ्गीन और मुलायम कपड़े आसानी से धो सकते हैं।

इसमें किसी प्रकार की हानिकारक वस्तु नहीं मिली हुई है !

हर जगह मिल सकती है।

कलकत्ता सोप-वर्क्स

(हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी सोप-फ़ैक्टरी)

बालीगञ्ज, कलकत्ता

केवल २ सप्ताह तक डाक-खर्च ।=) माफ़

६८ चित्रों सहित **चौदह विद्या-चौंसठ कला**

यह ग्रन्थ १४ विद्या और ६४ कलाओं से युक्त है, यथा

[१] वैद्य-विद्या—सब प्रकार के रोगों की अचूक दवाएँ [२] कोक विद्या—स्त्री-पुरुषों के समस्त गुप्त विषयों का वर्णन [३] शाकुनिक विद्या—शकुन व पक्षियों की बोली जानना [४] योग-विद्या—मृतात्माओं से वार्तालाप [५] ज्योतिष विद्या—मनुष्यों के कर्मफल आदि जानना [६] शिल्प-विद्या—हींग, इत्र, साबुन, ख़िज़ाब, स्याही कौड़ियों में बना लेना [७] राजनीति-विद्या—राज्य नियम, कोर्ट फ़ीस आदि क़ायदे [८] वस्तु-विद्या—गृह-निर्माण रीति [९] सङ्गीत-विद्या—हारमोनियम बजाना सीखना [१०] रसायन-विद्या—नक़ली सोना, मोती आदि बनाना [११] कृषि-विद्या—खेती के सम्पूर्ण नियम [१२] यन्त्र [१३] मन्त्र [१४] तन्त्र आदि विद्याएँ। अन्त में नट-विद्या और ६४ कलाओं का सचित्र वर्णन २२० सफ़ों की पोथी का मूल्य सजिल्द १।) रु०, डा० ख़र्च माफ़।

भारत राष्ट्रीय कार्यालय, अलीगढ़ नं० ६

गर्मी और सुज़ाक की अकसीर दवा

यह पाजी रोग चाहे नया हो या पुराना, लेकिन इस दवा से १ ही दिन में फ़ायदा और ३ हफ़्ते में जड़ से आराम हो जाता है और फिर यह रोग कभी नहीं पास फटकता है। अच्छे मार्ग में चलने से यह दवा सालसा के माफ़िक ख़ून को साफ़ करके नया ख़ून रग-रग में दौड़ा देती है। उपदंश (गर्मी), आतशक और मेह प्रमेह (गनोरिया वा सुज़ाक) को जड़ से खो देती है। स्त्रियों के भी सुज़ाक, जिसके कारण बार-बार पेशाब का उतरना, जलन होना, बूँद-बूँद पेशाब गिरना, मूत्र नली से पानी के समान या गाढ़ा मवाद के समान दुर्गन्धयुक्त स्राव निकलना आदि तुरन्त इस दवा से आराम होते हैं। जरूर मँगा कर देखिए, ३ सप्ताह यानी २१ दिन की ४२ ख़ुराक की क़ीमत सिर्फ़ २॥); डाक-ख़र्च ॥=) इस दवा में नुक़सान पहुँचाने वाली कोई भी चीज़ नहीं, सब काष्ट औषधियाँ (जङ्गली जड़ी-बूटियाँ) हैं। सेवन-विधि दवा के साथ दी जाती है।

भारत भैषज्य-भण्डार, ७८नं० कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता

बरसात में इन औषधों की परमावश्यकता है !

तत्काल गुण दिखाने वाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ

सुधासिंधु

कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट-दर्द, क़ै, दस्त, जाड़े का बुख़ार (इन्फ़्लुएेन्ज़ा) बालकों के हरे-पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय की गड़बड़ी से उत्पन्न होने वाले रोगों की एकमात्र दवा है। इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत न होने से मुसाफ़िरी में लोग इसे साथ रखते हैं। क़ीमत ॥) आना

डाक-व्यय १ से २ शीशी का ।≡)

दद्रुगजकेशरी

यदि संसार में बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को जड़ से खोने वाली कोई दवा है तो बस, वह यह है। दाद चाहे पुराना हो या नया, मामूली हो या पकने वाला, इसके लगाने से अच्छा होता है। क़ीमत फ़ी शीशी ।), डा० ख़० १ से २ शीशी तक ।≡)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती हैं। धोखे से नक़ली दवा न ख़रीदिए !

पता—सुख-सञ्चारक कम्पनी, मथुरा

वर्तमान होना दफ़ा १२४ (अ) के जुर्म के लिए भी अति आवश्यक है। ऐसा भी सुना गया है कि किसी जगह राजद्रोह अभियोग के लिए इरादे का कोई महत्व ही नहीं रक्खा गया है। जिसका अर्थ यह होता है कि बिना विचार किए हुए भी राजद्रोह किया जा सकता है। यह क्रान्तिकारी धारणा है, जिससे बेचारे पागल को भी छुट्टी नहीं मिलती। ताज़ीरात हिन्द की दफ़ा ८४ के अनुसार यदि कोई पागल मनुष्य दिमाग़ सही न होने की वजह से अपने कर्म का गुण और स्वभाव न समझ सके तो वह कार्य चाहे क़ानून के विरुद्ध हो, परन्तु जुर्म नहीं माना जाता। किसी भी जुर्म के करने से पहिले मुजरिम के दिमाग़ में उस जुर्म का अस्तित्व होना अनिवार्य है। और उस मानसिक दशा के दो गुण हैं—(१) उद्देश या आशय; और (२) इरादे का ग़ैर-क़ानूनी भाव। क़ानून-शहादत की धारा ९ के अनुसार प्रत्येक अभियुक्त को उस समय तक निर्दोषी ही अनुमान करना स्वाभाविक है जब तक कि अभियोग साबित न हो जावे। इसलिए इरादे का गुण और स्वभाव स्वतन्त्र रूप से ही प्रमाणित करना चाहिए। जैसे कि वे शब्द, जिनके कारण अभियोग लगाया गया हो, यदि स्वतन्त्र रूप से स्वयं ही राजद्रोहात्मक हों, तो वे रिपोर्टर महाशय (चाहे पुलिस के हों या कोई और) भी मुजरिम हो जाएँगे, जिन्होंने नोट लिए और अभियोग चलाते समय अदालत के सामने पढ़े। परन्तु पढ़ने मात्र के लिए रिपोर्टर पर मुक़दमा चलते किसी ने न सुना होगा। केवल शब्द ही राजद्रोह का स्पष्ट जुर्म (Prima Facie) प्रस्तुत नहीं करते। नहीं तो एक भी कोष न बचता, सब किताबें ज़ब्त होतीं और कोषकार जी कालेपानी भेज दिए जाते। परन्तु जुर्म के सरज़द होने से पहिले तो इरादा लाज़मी है, इसीलिए रिपोर्टर और कोषकार दोनों ही जहाँ के तहाँ वर्तमान हैं और चैन की छानते हैं।

शब्द स्वयम् निर्जीव हैं उनमें जान डालने वाली कुछ और ही चीज़ है। दफ़ा १२४ (अ) में कहा गया है कि जो कोई उत्तेजित करने की चेष्टा करता है वह जुर्म करता है। ये नियत शब्द हैं और निश्चित भाव की ओर सङ्केत करते हैं। इस बात से भी आशय और इरादे की आवश्यकता प्रकट होती है। यदि उक्त धारा के शब्द कुछ और होते, जैसे "जो कोई ऐसा काम करे जिससे अप्रीति फैलाने की सम्भावना हो" तो समस्या बिल्कुल ही तीन की छः हो जाती। अर्थात् प्रसङ्ग और चारों तरफ़ की उपस्थित परिस्थिति भी इतनी दूषित होनी चाहिए कि बात का फ़ौरन ही असर हो सके। बारूद के कोठार में खड़े होकर दियासलाई घिसना एक ऐसा कार्य है जो तुरन्त ही कृतकार्य हो सकता है, परन्तु अभियोग तो उस समय ही होगा जब प्रसङ्गादि से यह प्रमाणित हो कि निश्चित इरादा बारूद में आग लगा देने का था। हृदयगत भाव यद्यपि उन कार्यों से ही जाने जा सकते हैं जो प्रत्यक्ष में दिखाई दें, परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि बारूद के गोदाम में खड़े होकर दियासलाई घिसना उसके इरादे का प्रमाण है—यह कार्य असावधानी के कारण भी किया जा सकता है और इस हालत में उस पर बारूद में आग लगा देने का जुर्म क़ायम नहीं होता।

इसका दूसरा उदाहरण यह है कि केवल यह कह देने से कि "इस सरकार का अन्त हो जाना चाहिए" राजद्रोह का जुर्म नहीं बन गया। यदि कोई महाशय शासन-विधान की मीमांसा करते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार की राज्य-संस्थाओं का आपस में मुक़ाबला या तुलना करें और फिर उनकी परिमित भलाई-बुराई भी बतावें तो क्या इससे ही वे अपराधी हो जाएँगे? नहीं, और केवल यही नहीं, बल्कि यदि वे यह भी कहें कि इस देश के लिए अमुक सरकार उपयुक्त नहीं, तो भी उन पर कोई आँच नहीं आ सकती। कारण यह कि इतना ही कह देने से सरकार से कोई दुश्मनी साबित नहीं हो जाती। और दुश्मनी के भाव (= जुर्म का इरादा) ही न हो तो दोषारोपण नहीं हो सकता। इसका समान्तर भाव यह है कि मालदार होने की इच्छा प्रकट कर देने से ही डकैती का मुक़दमा क़ायम नहीं हो सकता। इसी तरह जब यह कहा जाय कि वर्तमान सरकार में दोष है, उपयुक्त नहीं, परिवर्तन की आवश्यकता है, तो यह कैसे मान लिया जा सकता है कि यह सब कुछ ग़दर करा डालने की चेष्टा-रूप में ही कहा जा रहा है। केवल विचार मात्र पर दण्ड देना न्याय की युक्ति तो होती नहीं, नीति की भले ही हो।

हमारे विचार, भावना, इच्छादि को क्रम-बद्ध करने का क़ानून में कोई विधान नहीं। कौन कह सकता है कि हम किससे, कब, क्यों और कैसे प्रीति करेंगे। इसी तरह सरकार को भी प्रीति कराने का न अधिकार है और न उस बेचारी ने चेष्टा ही की है। यह तो सचमुच का एक मज़ाक ही हो जाएगा। वह सब किसी से कहती फिरे कि उससे प्रीति की जाय? भला, अपने मुँह से भी इस तरह कहीं कहा जा सकता है? यथार्थ में जो बात है वह यह कि उसके प्रति अप्रीति उत्तेजित न की जाए। यदि कोई उससे प्रीति नहीं करता तो न करे, परन्तु दूसरों को भी वैसा ही करने की सलाह भी न दे, बस १२४ (अ) का यही सार है। निश्चय ही उसका हमारे ऊपर कोई असर नहीं, जो कुछ है वह यह कि हम अपने भावों का दूसरों पर ऐसा प्रभाव न डालें कि वे सरकार के विरुद्ध उत्तेजित हो जाएँ। यदि केवल प्रकाशन मात्र से हम अपने अप्रीति भाव प्रकट भी कर दें तो रोक तो कोई नहीं, पर इतना भय ज़रूर है कि शायद उसका मतलब, हमारी भावना के विरुद्ध, दूसरों में अप्रीति भाव उत्तेजित करना न समझ लिया जाए।

राजद्रोह का प्रमाण यह है कि (१) अभियुक्त ने राजद्रोहात्मक शब्द कहे या लिखे; (२) अभियुक्त ने उन शब्दों के द्वारा घृणा या तिरस्कार या अप्रीति के भाव उत्तेजित किए या उत्तेजित करने की चेष्टा की। (३) उक्त घृणा या तिरस्कार या अप्रीति सम्राट या सरकार के प्रति थी। यथार्थ में राजद्रोह भी वर्तमान सरकार की निन्दा का ही एक रूप है और सरकार का मतलब है शासन-प्रणाली से न कि शासक-व्यक्तियों से—इनके प्रति तो राजद्रोह केवल उस समय ही हो सकता है, कि जब अभियुक्त का मतलब अव्यक्त रूप में सरकार से ही हो।

उक्त प्रमाण उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि यह निश्चय न हो जाए कि अभियुक्त का असली भाव क्या था और उसके कामों का असर क्या हुआ। क्या उसके शब्दादि निश्चय ही ऐसे थे जिनसे अप्रीति, घृणा या तिरस्कार उत्तेजित हो सकें? क्या इस काम के लिए अन्य आवश्यक साधन (जो कुछ भी हों) सब ठीक कर लिए गए थे और असन्तोष के बीज का नष्ट हो जाना सम्भव नहीं था? वक्तृता या लेख का असली मतलब क्या था? इधर-उधर से एक दो शब्द ले लेने से काम नहीं चल सकता, बल्कि यह आवश्यक है कि प्रसङ्ग भी देख लिया जाए। याद रहे कि समझदार आदमी को भुलावा देना उतना आसान नहीं जितना कि अपढ़ जनता को। यदि वक्तृता से कुछ उत्तेजना हुई भी तो क्यों हुई, वक्ता ने जान-बूझ कर ऐसा किया या केवल अज्ञानतावश। अज्ञानता की हालत में असावधानी का दोष भले ही लग जाए, परन्तु राजद्रोह का जुर्म नहीं हो सकता।

ज़ाब्ता की एक बात यह भी है कि इरादा को अटकल से न निकाल कर स्पष्ट रूप से साबित करना चाहिए। यानी, यह पूरी तरह से प्रमाणित हो जाना चाहिए कि अभियुक्त में घृणा और दुश्मनी के नियत भाव वर्तमान थे जिनके कारण ही उसने अमुक शब्द कहे या लिखे और फल-स्वरूप असन्तोष तथा अप्रीति सचमुच ही उत्तेजित हुई। इङ्गलैण्ड में एक व्यक्ति ने कहा था कि हम सब शान्ति चाहते हैं—ख़ून बहाना बुरा काम है, परन्तु यदि राजनीतिक सुधारों के हेतु प्राणों की ही बाज़ी लगानी पड़ेगी तो पीछे न हटेंगे।

मुक़दमा चला तो ज़रूर, परन्तु शुभ भावों के कारण वे वक्ता महाशय छोड़ दिए गए। एक दूसरे साहब तो इतने बढ़े कि वे सरकार की काया-पलट तबदीली चाहते थे, परन्तु वे भी इसीलिए छोड़ दिए गए। जब तक कि भाव शुद्ध हैं, उस समय तक तो राजद्रोह नहीं चल सकता, आगे जो हो।

न्याय और नीति यह दो चीज़ें हैं, जिनमें न्याय ही अधिक श्रेष्ठ है। यदि न्याय की युक्ति नीति के अधीन न की जाए, बल्कि स्वतन्त्र रूप से न्याय के आधार पर और उस शुभ नाम पर ही स्थित रक्खी जा सके तो लाइए हम अपने ख़ून से लिख दें कि कभी कोई दुखद अन्याय उपस्थित ही नहीं हो सकता।*

* History and Law of Sedition, by *W. R. Donogh* के आधार पर।

*   *   *

बहरेपन की अपूर्व दवा!

हमारी दवा से बहरापन, चाहे थोड़ा हो या बहुत, एकदम दूर हो जाता है, इसकी हम गारण्टी दे सकते हैं। पूरे विवरण के लिए इस पते से पत्र-व्यवहार कीजिए—'श्री' वर्क्स, बीडन स्कायर, कलकत्ता,

फ़ोन नं० बड़ा बाज़ार ९८०

ख़ुशी की ख़बर!

बिना उस्ताद के सङ्गीत सिखाने में बाज़ी जीतनेवाली पुस्तक "हारमोनियम, तबला एण्ड बाँसुरी मास्टर" तीसरी बार छप गई है। नई-नई तर्ज़ों के ६२ गायनों के अलावा ११९ राग-रागिनी का वर्णन ख़ूब किया गया है। इससे बिना उस्ताद के उपरोक्त तीनों बाजे बजाना न आवे तो मूल्य वापिस देने की गारण्टी है! अब की बार पुस्तक बहुत बढ़ा दी गई है, किन्तु मूल्य वही १) डा० म० ।~) पुस्तक बड़े ज़ोरों से बिक रही है।

पता—गर्ग एण्ड कम्पनी, नं० ५, हाथरस

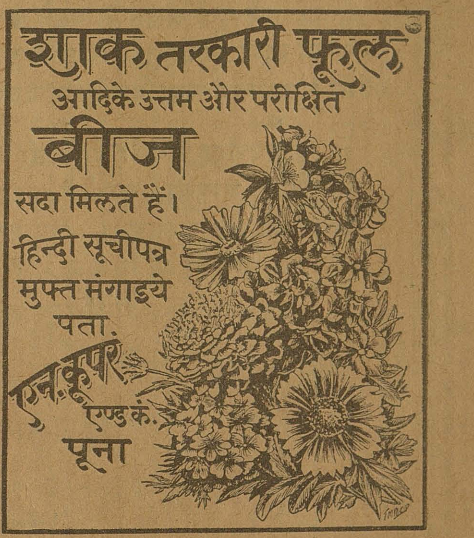

५०) रु० की पुस्तकें

२) रु० मासिक क़िश्त पर कैसे ली जा सकती हैं ?

(१) जो लोग अपनी ज्ञान-वृद्धि के उत्सुक हैं और प्रत्येक मास पुस्तकें मँगवाया करते हैं—जिससे बार-बार उन्हें डाक-व्यय देकर सरकारी ख़ज़ाना भरना पड़ता है—उनकी सुविधा के लिए तथा हिन्दी के प्रचार को दृष्टि में रखते हुए यह निश्चय किया गया है, कि कार्यालय से ५०) रु० के मूल्य की इच्छानुकूल पुस्तकें इस स्कीम के अनुसार प्रत्येक मेम्बर को रेलवे-पार्सल द्वारा भेज दी जावें और वे नियमित रूप से प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में २) रु० कार्यालय को भेजते रहें।

(२) पुस्तकें केवल 'चाँद' तथा 'भविष्य' के प्रतिष्ठित ग्राहकों को ही दी जावेंगी, हर किसी को नहीं।

(३) कार्यालय का छपा हुआ प्रार्थना-पत्र इसी के साथ भेजा जा रहा है। ग्राहकों को इसी पर हस्ताक्षर करके भेजना चाहिए।

(४) प्रार्थना-पत्र स्वीकृत होने पर पुस्तकें देने पर विचार किया जायगा, यदि किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का सन्देह उपस्थित हुआ, तो बिना किसी प्रकार का कारण बतलाए, उन्हें इन्कार कर दिया जायगा।

(५) सब प्रकार का इतमीनान हो जाने से यहाँ से इक़रारनामा हस्ताक्षर करने के लिए भेजा जायगा और साथ ही उनके पास पुस्तकों का बड़ा और नया सूचीपत्र भेज दिया जायगा, ताकि ग्राहक अपनी इच्छानुकूल पुस्तकें पसन्द करके अपना ऑर्डर बना कर भेज सकें।

(६) सूचीपत्र में जिन पुस्तकों का उल्लेख न होगा और यदि ग्राहक अन्य पुस्तकें मँगाना चाहेंगे तो उन्हें भेजने के लिए संस्था बाध्य न होगी।

(७) इन पुस्तकों पर किसी भी प्रकार का कमीशन नहीं दिया जायगा, चाहे वे अपनी प्रकाशित हों अथवा बाहरी (कमीशन केवल नक़दी पुस्तकें ख़रीदने पर ही देने का नियम है—इसे पाठक स्मरण रक्खें)।

(८) ऑर्डर देते समय ग्राहकों को ५०) रु० की जगह ६०-७० रुपयों की पुस्तकों का ऑर्डर बना कर भेजना चाहिए, क्योंकि प्रायः ऐसा होता है, कि माँगी हुई समस्त पुस्तकें स्टॉक में तैयार नहीं होतीं, अतएव उस समय जो भी पुस्तकें तैयार होंगी, उनमें से ५०) रु० के मूल्य की पुस्तकें भेज दी जावेंगी।

(९) पुस्तक भेजने में रेल का जो किराया लगेगा (जो नाम-मात्र का होता है) वह, तथा बिल्टी की रजिस्ट्री आदि का व्यय, ग्राहकों को ही देना होगा।

(१०) बिल्टी रेल तथा डाक-व्यय के अतिरिक्त ६) रु० की वी० पी० द्वारा भेजी जायगी, और शेष २२ क़िश्तें २) रु० मासिक का होंगी, जो प्रत्येक अङ्गरेज़ी मास के प्रथम सप्ताह में आ जाना चाहिए। भेजने में जो व्यय होगा वह ग्राहकों को ही देना होगा।

(११) यदि २ क़िश्तें पिछड़ गईं तो शेष सारा रुपया ग्राहकों को एक-मुश्त फ़ौरन चुका देना होगा! अन्यथा क़ानूनी कार्रवाही की जायगी और मुक़दमे के ख़र्च लिए ग्राहकों को ज़िम्मेदार होना पड़ेगा।

(११) यदि एक वर्ष तक प्रत्येक मास की क़िश्त समय पर अदा होती रही, तो उस ग्राहक को दूसरी बार भी ५०) रु० की पुस्तकें इसी शर्त पर भेज दी जावेंगी—पर यदि एक भी क़िश्त समय पर न पहुँची अथवा मुक़दमा आदि करना पड़ा तो उस ग्राहक से भविष्य में कोई व्यवहार न रक्खा जायगा।

हमें पूर्ण आशा है, पढ़ने के व्यसनी पाठक इस नई स्कीम द्वारा ईमानदारी से उचित लाभ उठावेंगे और हमें भी उत्तरोत्तर सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे।

* *

उपरोक्त नियमों में किसी भी प्रकार का परिवर्त्तन नहीं किया जायगा, व्यर्थ में आए हुए पत्रों का तब तक उत्तर नहीं दिया जायगा, जब तक पते का टिकटदार लिफ़ाफ़ा पत्रोत्तर के लिए न भेजा जायगा।

—मैनेजिङ्ग डाईरेक्टर की आज्ञा से

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक,

इलाहाबाद

ऑर्डर-फ़ॉर्म

श्री० प्रबन्धक महोदय,

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

महाशय जी,

मुझे आपकी नई स्कीम बहुत पसन्द है। आप मेरा नाम इसके मेम्बरों की सूची में लिख लें और प्रकाशित होते ही पुस्तकों का नया सूचीपत्र तथा इक़रारनामे (Agreement) का फ़ॉर्म हस्ताक्षर करने के लिए भेज दें। मुझे ५०) रु० के मूल्य की पुस्तकें एक साथ मँगाना स्वीकार है। ६) की वी० पी० (डाक-व्यय सहित) स्वीकार कर ली जायगी और नियमित रूप से आपको २) रु० हर मास के शुरू में पहुँचते रहेंगे।

मेरा 'चाँद' / 'भविष्य' का ग्राहक-नम्बर —————— है।

हस्ताक्षर ——————

पूरा पता ——————

——————

——————

यदि पुस्तक मँगाना चाहते हों तो इसी ऑर्डर-फ़ॉर्म को साफ़-साफ़ भर कर भेजने की कृपा करें ताकि शर्तनामा हस्ताक्षर करने के लिए भेजा जा सके।

साहित्य-समालोचना

लेखक प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा; प्रकाशक साहित्य-मन्दिर, दारागञ्ज, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या १६२, मूल्य १)

वास्तव में समालोचना सम्बन्धी यह एक उत्कृष्ट पुस्तक है। इसके विचार गम्भीर, विवेचनात्मक, स्वच्छ, सुन्दर और विशद हैं। इसमें कविता, कहानी, रङ्ग-मञ्च और समालोचना, इन्हीं चार विषयों पर विचार किया गया है। हिन्दी-साहित्य में अपने ढङ्ग की यह एक अनूठी पुस्तक है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। उसी साहित्य-मन्दिर से निम्न-लिखित तीन पुस्तकें भी निकली हैं :—

(१) समाधि—अनुवादक श्रीयुत पं० गणेश पाण्डेय; मूल्य १।); यह लॉर्ड लिटन के "लास्टडेज़ आव पाम्पियाई" का अनुवाद है।

(२) यौवन और उसका विकाश—लेखक श्री० केशवकुमार ठाकुर; मूल्य ॥।); पृष्ठ-संख्या ११७

(३) महात्मा गाँधी का विश्वव्यापी प्रभाव—लेखक श्री० केशवकुमार ठाकुर; मूल्य ॥=)

रसाल वन

लेखक पं० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'; प्रकाशक लेखक मण्डल; दारागञ्ज, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या ६३, मूल्य ॥)

रसाल-वन की प्रशंसा में इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि यह उसका तीसरा संस्करण है। इस पुस्तक में कई प्रकार की स्त्रियों का अच्छा चरित्र-चित्रण किया गया है। कथा रोचक तथा सुन्दर है और भाषा प्राञ्जल है। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति का अच्छा चित्र खींचा गया है :—

अम्मा मुझे क्लेश देती थीं, इसकी थी परवाह नहीं।
रो-धोकर सह लेती थी मैं, थी अपार वह दाह नहीं॥
हृदयेश्वर के चरण-कमल का दर्शन जब-जब पाती थी।
उसी लाभ से अपनी सारी, वह ताड़ना भुलाती थी॥

उक्त बातें किसी नायिका ने अपनी सखी से कही हैं, वास्तव में यह अत्यन्त ही सुन्दर है। इस संस्करण में और भी कई अध्याय जोड़ दिए गए हैं, जिनसे इसकी उपयोगिता और बढ़ गई है। इसी लेखक-मण्डल से 'गिरीश' जी की लिखी हुई जगद्गुरु का विचित्र-चरित्र नामक एक सुन्दर पुस्तक निकली है, इसका मूल्य केवल आठ आना है। हास्यरस की यह बहुत सुन्दर पुस्तक है। इसमें गन्दी हँसी नहीं है।

कबीर का रहस्यवाद

लेखक श्री० रामकुमार वर्मा, एम० ए०, अध्यापक, हिन्दी विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय, प्रयाग; प्रकाशक गाँधी-हिन्दी-पुस्तक-भण्डार, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या लगभग २०५; मूल्य २)

उक्त पुस्तक को पढ़ कर यह आशा अधिक बलवती हो गई कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। पुस्तक पाण्डित्यपूर्ण है। इस पुस्तक में रहस्यवाद की परिभाषा, उसकी परिस्थितियाँ, अद्वैतवाद और सूफ़ी-मत आदि कई विषयों के सम्बन्ध में विचार किया गया है। रहस्यवाद की विशेषताओं का भी बहुत अच्छा वर्णन है। पुस्तक के विचार गम्भीर, विचारपूर्ण और प्रामाणिक हैं। सारी पुस्तक पढ़ जाने से मालूम हो जाता है कि पुस्तक पर्याप्त अध्ययन के बाद लिखी गई है। आजकल ऐरे-ग़ैरे नत्थू-ख़ैरे भी रहस्यवाद के ऊपर क़लम-कुल्हाड़ा चलाने लग गए हैं और कल्पना के मैदान में अपने सड़े और गन्दे दिमाग़ का घोड़ा दौड़ाने लग जाते हैं। जिसे देखो, वही इस पर कुछ न कुछ लिख ही तो मारता है और अपने को हास्यास्पद बनाता है। परन्तु वर्मा जी ने ख़ूब सोच-विचार कर लिखा है और अध्ययन के बाद लिखना प्रारम्भ किया है। हम वर्मा जी को ऐसी सुन्दर पुस्तक लिखने के लिए हृदय से बधाई देते हैं और उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि अभी तक हिन्दी-भाषा में रहस्यवाद पर ऐसी सुन्दर पुस्तक नहीं लिखी गई है। इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है कि इस अंश में वर्मा जी ने पथ-दर्शक का काम किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि वर्मा जी मेरी निम्न-लिखित बातों पर अवश्य विचार करेंगे। पृष्ठ ८ में वर्मा जी ने लिखा है—"कबीर की बानी" को आद्योपान्त पढ़ जाने पर ज्ञात हो जाता है कि वे सच्चे रहस्यवादी थे। कई और स्थानों पर वर्म्मा जी ने इसी बात की पुष्टि की है, परन्तु फिर पृष्ठ २९ में उन्होंने कबीर के रहस्यवाद का आधार अद्वैत-वाद और सूफ़ी-मत बतलाया है। इस सम्बन्ध में यह प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि दोनों बातों की सङ्गति कैसे बैठाई जा सकती है। यदि कबीर सच्चे रहस्यवादी थे तो उन्हें आधार पर लिखने की क्या आवश्यकता थी और यदि उन्होंने आधार पर ही लिखा है तो वे सच्चे रहस्यवादी कैसे हुए !!

इसी प्रकार कुछ और स्थानों पर भी पुस्तक में ऐसी बातें आ गई हैं। पृष्ठ ५४ में लेखक ने "सम्पूर्ण हृदय" शब्द का प्रयोग किया है और उसी के लिए पृष्ठ ५९ में "आत्मा की सारी शक्तियों एवं आत्मा" का प्रयोग किया है। इस प्रकार पृष्ठ ५४ का प्रयोग विरोधात्मक ही नहीं, ग़लत भी है।

पृष्ठ ७९ में तथा उसके आगे ग्रन्थ-कर्ता ने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक आनन्द के बारे में विचार किया है। उसके लिए जितनी दलीलें दी गई हैं, लँगड़ी मालूम होती हैं। जेम्स आदि प्रधान मनोविज्ञानकों को इस सम्बन्ध में विचार प्रगट करना आवश्यक था। जितनी जल्दी लेखक ने उन भेदों के उड़ा देने का प्रयत्न किया है, यह काम इतना आसान नहीं। हमारे यहाँ जड़-समाधि की सत्ता में लोग केवल विश्वास ही नहीं करते हैं, परन्तु इसे सत्य भी मानते आए हैं।

हठ-योग के प्रकरण में लेखक ने बहुत कुछ लिखा है। परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आया कि हठयोग में पतञ्जलि ऋषि के अष्टाङ्ग योग की गणना क्यों की गई? इसके अतिरिक्त हठयोग का प्रकरण असम्बद्ध भी प्रतीत होता है। संस्कृत ग्रन्थों के अनुसार उनके वर्णन करने से कुछ भी लाभ नहीं, यदि उनका सामञ्जस्य कबीर के विचारों से न किया जाय। इस प्रकरण में पाण्डित्य-प्रदर्शन अधिक है और सत्य कम। पुस्तक के पढ़ जाने से पता चलता है कि ग्रन्थकार ने अन्य पुस्तकों की अपेक्षा कबीर-ग्रन्थों पर कम ज़ोर दिया है और उसके अध्ययन की उतनी अधिक आवश्यकता नहीं समझी है।

इसीलिए इसमें कई तरह की ग़लतियाँ हो गई हैं, जो दूसरे संस्करण में सुधार दी जानी चाहिए। पहले तो कविता में रहस्यवाद, दर्शन में रहस्यवाद और धर्म में रहस्यवाद के भेदों के करने से पुस्तक में कुछ गड़बड़ी हो गई है, जिसके कारण पुस्तक में कुछ ऐसी बातें आ गई हैं, जो परस्पर विरोधी मालूम होने लगती हैं, दूसरे कबीर के ग्रन्थों के अध्ययन की कमी के कारण भी कुछ अशुद्ध बातें लिखी गई हैं। इस प्रकार के उदाहरण के लिए मैं 'अनाहद' और 'सुन्न' शब्द लेना अच्छा समझता हूँ। अनाहद का जो अर्थ लेखक ने लिखा है वह वास्तव में नहीं है। समाधि से अनाहद से सम्बन्ध अवश्य है और यह बात सच है कि समाधि योग-अवस्था में योगी लोग अनाहद शब्द सुनते हैं। परन्तु बिना समाधि के भी यह शब्द सदा योगी सुना करते हैं। इसी प्रकार 'सुन्न' के लिए ब्रह्म-रन्ध्र शब्द का प्रयोग किया गया है। ब्रह्म-रन्ध्र तो इसी शरीर की खोपड़ी का एक अङ्ग है और मरने के समय कुछ योगियों का यह फूट जाता है। परन्तु कबीर का 'गगन' और 'सुन्न' इससे सर्वथा भिन्न है, वह आकाश है, बहुत सूक्ष्म है और ब्रह्म-रन्ध्र से इसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

परन्तु इन बातों से पुस्तक का महत्व कुछ कम नहीं होता। हिन्दी-प्रेमियों तथा कबीर के विद्यार्थियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

कालिदास और भवभूति

लेखक स्व० द्विजेन्द्रलाल राय; अनुवादक पण्डित रूपनारायण पाण्डेय; प्रकाशक श्री० नाथूराम प्रेमी, हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, हीरा बाग़, पो० गिरगाँव, बम्बई।

इस ग्रन्थ में द्विजेन्द्रलाल राय ने कालिदास और भवभूति की तुलना की है। तुलनात्मक-समालोचना का यह बहुत ही अच्छा ग्रन्थ है। वास्तव में द्विजेन्द्रलाल राय एक सफल नाटक-लेखक थे। इनके ग्रन्थों का बँगला में बड़ा आदर है। इनके सब नाटकों का हिन्दी में भी अनुवाद हो गया है और यहाँ बड़ा आदर है। द्विजेन्द्रलाल राय एक अच्छे नाटक-लेखक समझे जाते हैं, इसलिए वे नाटकों की तुलनात्मक समालोचना लिखने के भी उपयुक्त पात्र थे। उनकी समालोचना-शक्ति भी बड़ी तीव्र थी। वह ऊपर ही ऊपर उछल-कूद नहीं मचाते थे, बल्कि साहित्य-सागर की तह तक पहुँचने का प्रयत्न करते थे। उन्होंने आख्यान वस्तु, चरित्र-चित्रण, नाटकत्व, कवित्व, भाषा और छन्द आदि सभी विषयों पर ख़ूब अच्छा विचार किया है। इसमें सन्देह नहीं कि कोई भी आदमी पुस्तक की सब बातों से सहमत नहीं हो सकता, तथापि इसमें भी सन्देह नहीं कि ग्रन्थ की समालोचना पाण्डित्यपूर्ण तथा सुन्दर है। हम चाहते हैं कि हिन्दी भाषा में इस ग्रन्थ का ख़ूब प्रचार हो।

मँगाइए और केवल एक ही बार

अगर आप तमाम हकीमों और डॉक्टरों से नाउम्मेद हो चुके हैं तो एक बार हमारे कारख़ाने का बना हुआ अर्क़ और अञ्जन, जो आँखों के लिए निहायत ही फ़ायदे-मन्द साबित हुआ है, इस्तेमाल कीजिए! इसके इस्तेमाल करने से आँखों के तमाम रोग जैसे रोहा, आँखें दुखना, उठने पर सूज जाना, धुन्ध, जाला, माँड़ा, नजला, पड़-वाल, तींगुर, गुहाइयों का निकलना, कन्दरी हो जाना इत्यादि दूर होते हैं। दोनों दवाइयों का मूल्य केवल १=) डाक-ख़र्च ।=) अलग।

बजरङ्ग एण्ड कम्पनी २८९, अहियापुर, इलाहाबाद

विशेषांकों की धूम !! [बिना मूल्य भेंट]

साहित्य-अङ्क मूल्य १)

कला-अङ्क मूल्य २)

प्रवासी-अङ्क मूल्य १)

१५ नवम्बर तक नए ग्राहक बनने वालों को उक्त तीनों विशेषाङ्क बिना मूल्य भेंट !

"मासिक पत्रों में 'विशाल-भारत' ही एक ऐसा पत्र है, जिसके विचारों की गम्भीरता, लेखों का चुनाव और हर तरह की उपयोगी सामग्री सङ्कलित करने की परिपाटी बहुत ही उत्तम है।.........हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में 'विशाल-भारत' अपना सानी नहीं रखता—यह सर्वोत्कृष्ट पत्र है।"

—'प्रताप'

विशेषाङ्कों का पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य ६।=) मनीऑर्डर से भेजिए, या वी०पी० से मँगाइए।

'विशाल-भारत' के ग्राहक बनने वालों के लिए पुस्तकों का मूल्य घटाया गया

१ 'कुमुदिनी' (उपन्यास) ले० श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, धन्यकुमार जैन, मू० ३) ग्राहकों को २॥=)
२ 'गल्पगुच्छ' कहानियाँ— " " मू० १॥) " १।-)
३ 'षोड़शी' (कहानियाँ)— " " मू० १॥) (छप रही है)
४ 'रूस की चिट्ठी' (भ्रमण-कहानी) " " मू० १॥।) ग्राहकों को १॥-)
५ 'भेड़ियाधसान' (हास्यरस)—ले०, "परशुराम" " मू० १॥) " १।-)
६ 'लम्बकर्ण' (सचित्र हास्य)— " " मू० १।) " १=)
७ 'प्रेम-प्रपञ्च' (उपन्यास)—ले० तुर्गनेव; अनुवादक, जगन्नाथप्रसाद मिश्र, बी० ए०, मू० १।) " १=)
८ 'मुसोलिनी और नवीन इटली'—ले० पी० एन० राय; अनुवादक ब्रजमोहन वर्मा, मू० २॥) (छप रही है)

पता—'विशाल-भारत' कार्यालय, १२०।२, अपर सरकूलर रोड, कलकत्ता

पढ़ कर गुप्त विद्या द्वारा जो चाहोगे बन जाओगे जिस की इच्छा करोगे मिल जावे या मुफ़्त मंगवाओ पता साफ़ लिखो।

गुप्त विद्या प्रचारक आश्रम, लाहौर

आप व्यापारी हैं

तो थोड़ी ही पूँजी में अधिक लाभ और नाम कमाने के लिए हमारी दवाओं की एजेन्सी लीजिए, बहुत जल्द मशहूर और मालामाल हो जाएँगे।

पता—श्री० जगदीश औषधालय, डालीगञ्ज, लखनऊ

१) में ४ घड़ियाँ, दो जूते सैकड़ों इनाम

आश्चर्य नहीं, बात सच्ची है !

मस्तान सीमसीम—इसकी ख़ुशबू का गुण जो ख़रीदे वही जाने, १ शीशी का १) तसवीर की सारी चीज़ें दिवाली के उपलक्ष में मुफ़्त भेजी जाती हैं। एक सप्ताह के अन्दर ऑर्डर आने से रिस्ट-वाच, पाकेट-वाच और सच्चा टाइम बताने वाली १ जर्मन बुल सण्ड घड़ी

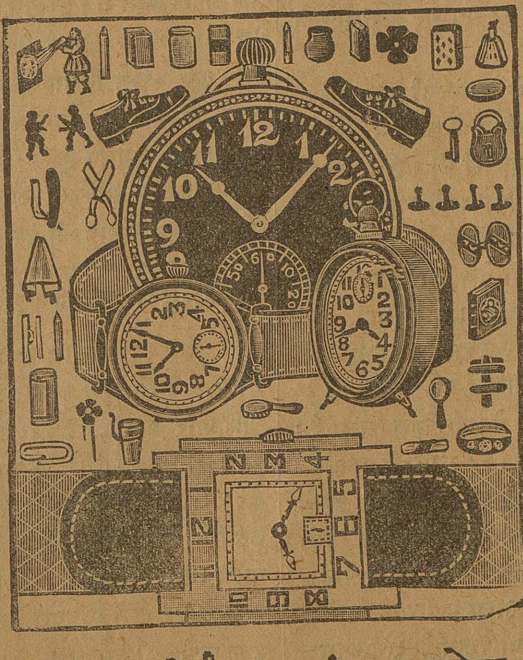

तीन वर्ष की गारण्टी सहित और दो जूता, बायसकोप, कहाँ तक गिनावें, तसवीर में जितनी चीज़ आप देखते हैं, सभी इनाम में भेजी जाएँगी। डाक-व्यय १॥।-) प्रति सप्ताह की देरी करने से एक एक घड़ी इनाम कम मिलेगा और ५ सप्ताह के बाद इनाम कुछ नहीं।

पता—एल० एक्स० फ़ोर्ड वाच कं० हाटखोला, कलकत्ता

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

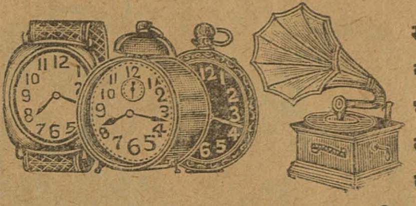

मशहूर दाद की दवा। २४ घण्टे में दाद को आराम करती है ! १ डब्बी का दाम ।=), एक साथ १२ डब्बी दाद की दवा मँगाने से तीन सच्ची घड़ियाँ; गारण्टी ३, ४, ५ वर्ष। और डेढ़ दर्जन मँगाने से १ किडी ग्रामोफ़ोन इनाम। डाक-व्यय १) पृथक।

पता—बी० बी० भवन,
हाटखोला, कलकत्ता

दवा दाद

बदबू, जलन आदि से रहित
२४ घंटे में दाद को खोनेवाली
की० एक दर्जन १ᴗ डा० ख० ।ᴗ
पता:-चन्द्रसेन एण्ड को० इटावा नं० ७

५) की पुस्तकें १॥) में

१ विश्वव्यापार—सोडावाटर, ख़िज़ाब इत्र, बालसफ़ा, रबड़ की मुहर, अञ्जन, मञ्जन बना धन कमाओ मू० १)
२ नवीन कोकशास्त्र—८४ आसनों के चित्र, स्त्री-पुरुष सर्व गुप्त भेद, ज्योतिष, सामुद्रिक, शकुन का पूरा वर्णन मू० १)
३ इङ्गलिशटीचर—घर बैठे अङ्गरेज़ी पढ़ना सीख लो मू० १)
४ करामात—मैस्मेरिज़्म, हिप्नोटिज़्म, छाया-पुरुष वर्णन मू० १)

सब पुस्तकें एक साथ १॥) में डाक-व्यय ॥)

पता—बी० आर० जैसवाल, पोस्ट-डिबाई (E.I.R)

बेरोज़गारों को शुभ समाचार

भारतवर्ष भर में अपनी तरह का पहला कॉलेज है, जो निर्धनों के साथ विशेष रियायत करता है, व आसूदा सज्जनों से केवल ५०) रुपया फ़ीस दाख़िला रूप में लेकर दो माह के मामूली समय में ड्राइवरी और फ़िटर का पूरा काम सिखा देता है। यह सरकार से रजिस्ट्री शुदा कॉलेज है। नियमावली आज ही पत्र लिख कर मुफ़्त मँगा कर देखिए।

नोट—नियमावली के लिए पता पूरा और साफ़-साफ़ लिखें।

पता—मैनेजर, इम्पोरियल मोटर ट्रेनिङ्ग कॉलेज, नं० १, चाँदनी चौक, नियर इम्पीरियल बैङ्क, देहली

असल रुद्राक्ष माला

-) आना का टिकट भेज कर १० दाना नमूना तथा रुद्राक्ष-माहात्म्य मुफ़्त मँगा देखिए।

रामदास एण्ड को०
३ चोरबागान स्ट्रीट, कलकत्ता

बिजली की स्याही

यानी गुप्त पत्र-व्यवहार

लिखते ही अक्षर गुम हो जाते हैं—जिससे मित्र-मण्डली आश्चर्यान्वित होती है।

नोट—अक्षर देखने की कला पारसल के साथ भेजी जाती है। नमूना ≡) का टिकट भेज कर मँगाइए।

इण्टर नेशनल मार्केट; पो० ब० १२६, कलकत्ता

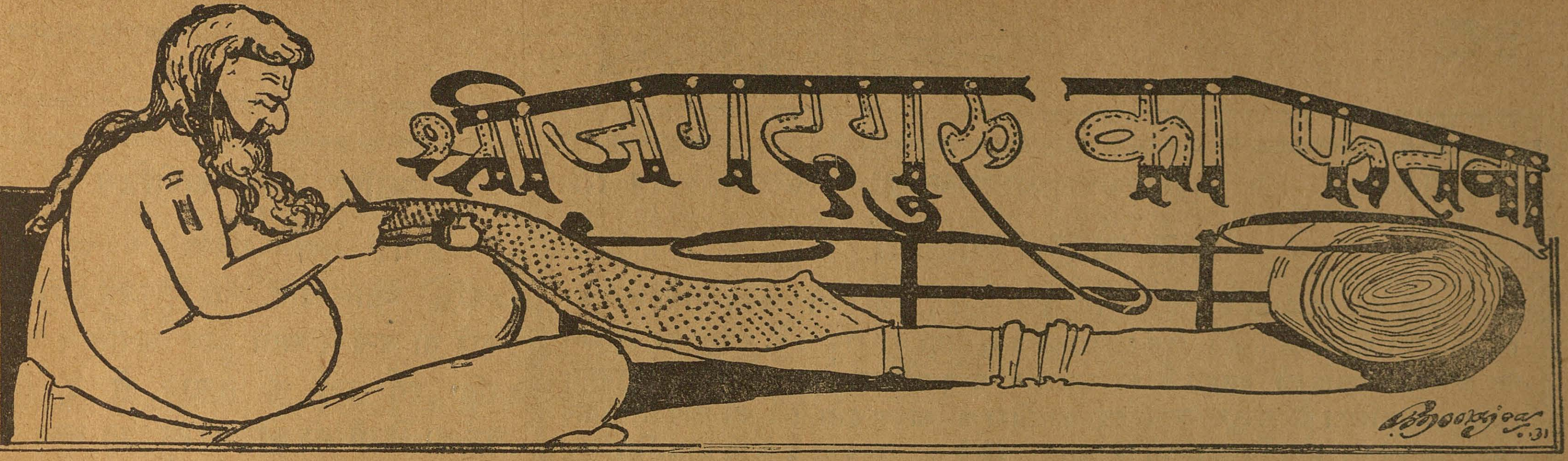

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द जी विरूपाक्ष]

राष्ट्रवादी मुसलमानों के लाहौरी जलसे के कारण आजकल 'ख़िलाफ़ती भठियारख़ाने' में ख़ासी चहल-पहल मच गई है और हिज़ होलीनेस को ईर्ष्या हो रही है, डॉ० अन्सारी और मलिक बरकतअली की ख़ुश-नसीबी पर, कि दोनों भाग्यवानों को घर बैठे ही ससुराल के मज़े मिल रहे हैं।

❃

विश्वास न हो तो किसी ख़िलाफ़ती अख़बार के पन्ने उलट डालिए। मानो सभी एक साथ ही अपनी-अपनी ज़बानों की काई साफ़ करने में लगे हैं। राष्ट्रवादी मुसलमानों के साथ-साथ कॉङ्ग्रेसी और हिन्दू-सभाई हिन्दुओं की भी ख़ूब ख़बर ली जा रही है। मानो दूल्हे के साथ ही बरातियों की भी ख़ातिरतवाज़ो हो रही है। आख़िर वे भी तो अपने मेहमान ही ठहरे।

❃

और अगर सच पूछिए तो हिन्दू भी इस 'ससुराली ख़ातिरदारी' के कम मुस्तहक़ नहीं हैं। क्योंकि ये 'पैन इस्लाम' के ही विरोधी नहीं, वरन् भारत की आज़ादी के भी ख़्वाहाँ हैं। इन्होंने कुछ मुसलमानों को बहका कर सर शफ़ी और मि० ग़ज़नवी की भावी गवर्नरी की आशा पर एक दम पानी फेर दिया है। इसलिए सारी ख़ुराफ़ात की जड़ तो यही हैं।

❃

इन्हीं कमबख़्त काफ़िरों के बहकावे में आकर कुछ मुसलमान राष्ट्रवादी बन गए हैं और भावी मुस्लिम राज्य की राह के रोड़े बन रहे हैं। ऐसे मौक़े पर, जब कि मोटे मौलाना और उनके अनुचरों ने बी गोलमेज़ का फ़ातिहा पढ़ डाला है और अङ्गरेज़ों से समझौता करके ग़ुलामी के बन्धन को मज़बूत करने में पौने सोलह आने सफलता प्राप्त कर चुके हैं, राष्ट्रवादी मुसलमानों ने अपने प्रबल अस्तित्व का परिचय देकर सारा गुड़ गोबर कर दिया है। ऐसी दशा में अगर दाढ़ीदार बिल्लियाँ ग़ुस्से में आकर खम्भे नोचना आरम्भ कर दें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

❃

दक्षिण भारत के कोई श्री० रामानुजम आयङ्गर नामक ब्राह्मण-कुल तिलक महादय सर इक़बाल के भावी मुस्लिम राज्य की ख़बर पाकर फूल कर कुप्पा हो रहे हैं और अपने ब्राह्मणत्व की रक्षा के लिए सपरिवार और सकुटुम्ब यहीं आकर बस जाना चाहते हैं। क्योंकि आपकी राय है कि भावी मुस्लिम-राज्य में निश्चिन्तता-पूर्ण धर्म-कर्म करने का ख़ासा मौक़ा मिलेगा।

❃

इसलिए हिज़ होलीनेस की दुआ है कि पण्डित-प्रवर श्री० रामानुजम की यह शुभ कामना शीघ्र पूर्ण हो और साथ ही रामानुजम जी से अनुरोध है कि कुछ दिन हैदराबाद में जाकर धर्म-रक्षा का रिहर्सल कर आवें, ताकि अभ्यास बना रहेगा तो आसानी से इक़बाली मुस्लिम राज्य में आकर सनातन-धर्म की सुन्नत करा सकेंगे।

❃

अल्लाह मियाँ की इस पुरानी फ़ौजी अर्थात् भारत-वर्ष में एक से एक ख़ुराफ़ाती दिमाग़ वाले आदमी मौजूद हैं। कोई जाति-पाँति की कमर तोड़ कर लुआछूत-जैसे पवित्र धार्मिक कृत्य का गला घोंटने को तैयार है, तो कोई विधवाओं को सधवा बना कर सनातन-धर्म की जड़ में मट्ठा डाल रहा है। कोई बाल-विवाह के विरोध में आकाश-पाताल एक किए डालता है, कोई बेचारे बूढ़ों को षोडशी-पाणि-पीड़न-जैसे परम धार्मिक कृत्य से वञ्चित कर देना चाहता है।

❃

परन्तु इन तमाम ख़ुराफ़ाती दिमाग़ वालों से बढ़ा-चढ़ा दिमाग़ सेठ जमनालाल बजाज का है। अन्यान्य ख़ुराफ़ातियों ने तो अपने अधार्मिक कृत्यों द्वारा सनातन-धर्म की थोड़ी सी हानि मात्र की है और कतिपय वेद-विहित सुन्दर प्रथाओं का सत्यानाश कर डाला है; परन्तु इस सेठ ने तो एकदम सनातन-धर्म के तैंतीस कोटि देवताओं पर ही धावा बोल दिया है।

❃

ख़ुदा झूठ न बुलवाए तो इस आए दिन की 'जमना लाली' उत्पात के मारे बेचारे देवताओं की नींद-भूख हराम हो रही है। सेठ जी वैसे तो बड़े शान्त-शिष्ट जान पड़ते हैं, परन्तु मौक़ा पाते ही अपनी अछूत-वाहिनी के साथ देव-मन्दिरों पर चढ़ाई कर देते हैं और बेचारे देवता जी का भोग-राग छूकर उन्हें बिना रमज़ान के ही रोज़ा रखने को बाध्य कर देते हैं। कुछ समझ में नहीं आता कि आख़िर इन पत्थर के देवताओं ने सेठ जी का क्या बिगाड़ा है?

❃

वर्षों से ये हाथ धोकर देवताओं के पीछे पड़ गए हैं। आज तक दर्जनों देवताओं की जाति मार चुके हैं—उनका हुक़्क़ा-पानी और बेटी-रोटी बन्द करा चुके हैं। बताइए, जिस देवता के घर में अछूत घुस जाएँगे, उसे भला कौन पूछेगा? मनुष्यों की तरह उनके यहाँ कोई प्रायश्चित विधान भी तो नहीं है कि उसके अनुसार बालू फाँक कर या पञ्चगव्य पीकर किसी तरह पवित्र हो सकें। बस, बेचारों के लिए आत्म-हत्या के सिवा और कोई उपाय ही नहीं रह जाता।

❃

उस दिन हज़रत पुरी पहुँचे। परन्तु अपने राम निश्चिन्त थे। क्योंकि इन्हें अच्छी तरह मालूम था कि महाप्रभु श्रीजगन्नाथ जी के यहाँ सेठ जी की दाल नहीं गलेगी। क्योंकि उन्होंने अपने यहाँ छूत-छात का झगड़ा पहले से ही मिटा रक्खा है और ऐसा पक्का नियम बना दिया है कि आपका महाप्रसाद अगर कुत्ते का भी जूठा हो तो वह अपवित्र नहीं हो सकता। बल्कि उलटे उसके खाने से जन्म-जन्मान्तर के पातक-पुञ्ज उसके साथ ही पच कर दूसरे दिन बाहर निकल जाते हैं और प्राणी परमगति लाभ कर लेता है।

❃

बल्कि श्रीजगन्नाथ जी महाराज के दरबार में जूठन का ही महत्व है; जो जितने मनुष्यों का जूठा खा लेता है, वह शायद, उतनी ही बार सद्गति लाभ करता है और जो जूठन खाने में सङ्कोच या घृणा करता है, वह पुण्य-फल से ही हाथ नहीं धो लेता, वरन् महा-पाप का भी भागी होता है और मरने पर कल्पान्त तक नरक में वास करता है।

❃

ऐसी दशा में अपने राम का यह आशा करना कि सेठ जी बाबा जगन्नाथ देव का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, स्वाभाविक ही था। परन्तु वाह रे सेठ जी की ख़ुराफ़ाती खोपड़ी! आख़िरश बेचारे जगन्नाथ जी को भी तङ्ग करने का एक ज़रिया ढूँढ़ ही तो निकाला। बाबा कबीरदास कह गए हैं—'जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ!' परन्तु यहाँ सेठ जी ने 'पाइयाँ' सब से ऊँचे ताक!

❃

बस, फिर क्या था, वही हालत हुई कि अब 'कैसे... बचाओगी गोरी!' झट आपने श्रीजगन्नाथ जी के मोटे-मोटे अनुचरों को बुला कर फ़रमाया कि जगन्नाथ-मन्दिर के कङ्गूरों की शोभा बढ़ाने वाली मूर्तियाँ अश्लील और हिन्दू धर्म तथा संस्कृति को कलङ्कित करने वाली हैं; इन्हें फ़ौरन हटा दो, नहीं तो हम सत्याग्रह आरम्भ कर देंगे! देखा आपने नीरस खोपड़ी का ख़ब्तपना?

❃

हज़ारों धर्म-प्रेमी हिन्दू अपनी बहू-बेटियों के साथ भगवान के दर्शन से पहले और पीछे इन स्फूर्तिदायिनी मनोहर मूर्तियों के दर्शन कर, आँखों का मोरचा छुड़ाने के साथ अपना जीवन-जन्म सफल करते हैं। भगवान की लुप्त-मूर्ति का दृश्य चाहे स्मृति-पट से बिलकुल हो जाए, परन्तु उन मूर्तियों का नेत्ररञ्जक दृश्य कभी नहीं भूलता।

❃

अक्सर जब भगवान भोग-राग ग्रहण करने में या किसी धनवान यात्री की मूल्यवान श्रद्धाञ्जलि ग्रहण करने में व्यस्त रहते हैं, तो यात्रियों को मन्दिर के प्राङ्गण में ठहर कर उपेक्षा करनी पड़ती है। उस वक़्त उन्हीं मूर्तियों द्वारा उनका थोड़ा-सा दिल-बहलाव हो जाता है। इसके बाद नमकीन के बाद माधुर्य में कुछ विशेष मज़ा भी तो मिलता है। इसलिए हमारी तो राय है कि यात्रियों को आँखों का ज़ायक़ा बदलने के लिए वे मूर्तियाँ अत्यन्त आवश्यक हैं।

❃

भगवान की पावनपुरी में छूतछात, जूठ-अजूठ का कोई भेद-भाव नहीं है, तो सलज्जता और निर्लज्जता तथा श्लीलता और अश्लीलता का ही बखेड़ा क्यों रक्खा जाय। बड़े-बड़े आचार-विचार वाले वहाँ जाकर थोड़ी देर के लिए अपना आचार-विचार भूल जाते हैं तो उसके साथ ही अगर थोड़ी देर के लिए लज्जाशीलता और सभ्यता को भी बालाए-ताक़ रख देते हैं, तो इसमें क्या बुराई है?

❃

जाड़े की बहार ! जवानी का सच्चा आनन्द ?? शक्ति का सञ्चार ???

धातु पौष्टिक गोलियाँ

तीन दिन के भीतर ही अपना गुण दिखा देती हैं, पेशाब की समस्त बीमारियों को हटा के दस्त साफ़ करती हैं। सब प्रकार का दर्द; पीड़ा को रोकती हैं, शरीर को बलवान कर के स्मरण-शक्ति को बढ़ाती हैं, यह स्वप्नदोष, धातु क्षीणता, पेशाब के साथ धातुपात, अधिक विलासिता के कारण उत्पन्न हुई कमज़ोरी के कारण हाथ पैरों का काँपना, चक्कर आना, आँखों के आगे चिनगारियाँ निकलना, कलेजे का धड़कना ये सभी बीमारियाँ दूर होती हैं। दाम २॥) रु० डिब्बा, डा० म० ।) अवश्य लीजिए। इन गोलियों को हर मौसम में खा सकते हैं। और आयुर्वेदिक औषधियाँ भी सब प्रकार की सदा तैयार मिलती हैं। सूचीपत्र मुफ़्त !

विजय ट्रेडिङ्ग कम्पनी, अलीगढ़

'ब्लॉक' हमसे ख़रीदिए !

'चाँद' तथा 'भविष्य' में छपे हुए इकरङ्गे ब्लॉक यदि कोई सज्जन ख़रीदना चाहें तो उन्हें वे आधे मूल्य अर्थात् ३ आने प्रति वर्ग इञ्च के हिसाब से दे दिए जावेंगे; किसी भी छोटे ब्लॉक का मूल्य २) से कम न होगा। डाक-ख़र्च ख़रीदार को देना होगा।

'भविष्य' चन्द्रलोक—इलाहाबाद

मेरी लकड़ी छूट गई

नवाब मीर महमूद अली ख़ाँ उमर ७० साल हैदराबाद दक्षिण फरमाते हैं कि मैं बेहद कमजोर हो गया था, लकड़ी के सहारे चलता था बहुत सी इश्तिहारी दवायें इस्तेमाल किया कोई फायदा नहीं, आखिर मैंने (मनोहर पिल्स चन्द्रप्रभा) एक शीशी इस्तेमाल किया कि जिसने मुझे पूरा ताकतवर बना दिया और मेरा लकड़ी पकड़ना छूट गया, कीमत ५) छोटी शीशी २॥)

महाशिव साहब ख़ुफ़िया पुलिस

मुहम्मद करीमुल्ला हैदराबाद दक्षिण व मीर कुरसिह अली इन्स्पेक्टर सी०आई०डी० परभनी तहरीर फरमाते हैं कि हम बवासीर से बेहद परेशान थे, लेकिन वै० भू० पं० मनोहरलाल की दवा (अर्श कुठार) ने २४ घन्टे में मेरी तकलीफ दूर कर दी और मुझे कामिल सेहत है कीमत ५) शीशी छोटी २॥)

आयुर्वैदिक मेडिकल हाल चौक मैदान ख़ाँ हैदराबाद दक्षिण

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

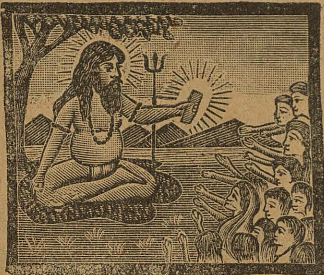

जो कवच २) में मिलता था, आज वह सिर्फ़ १५ दिन के वास्ते मुफ़्त भेजा जाता है। यह कवच संसार भर के जादू, तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष-चमत्कारों से परिपूर्ण है, इसके धारण करने से हर तरह के काम सिद्ध होते हैं। जैसे रोज़गार में लाभ, मुक़दमे में जीत, सन्तान-लाभ, हर तरह के सङ्कटों से छुटकारा, इम्तिहान में पास होना, इच्छानुसार नौकरी मिलना, जिसको चाहे बस कर लेना, हर प्रकार के रोगों से छुटकारा पाना, देश-देशान्तरों का हाल क्षण भर में जान लेना, भूत-प्रेतों को वश में कर लेना, स्वप्न-दोष का न होना, मरे हुओं से बातचीत करना, राज-सम्मान होना, कहाँ तक गिनाएँ, बस जिस काम में हाथ डालिएगा, फ़तह ही फ़तह है। १५ दिन तक फ़्री, बाद १५ दिन के १ कवच का मूल्य २), तीन का ५॥), डाक-महसूल ।।=); ध्यान रहे, मरे हुओं की १ पुश्त तक का हाल बतावेगा, दूसरे के ज़िम्मेदार हम नहीं। अगर कोई झूठा साबित करे तो १५) इनाम। सन्तान चाहने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही कवच मँगावें।

पता—एस० कुटी, हाटखोला (कलकत्ता)

बीसों प्रकार के प्रमेहों पर विजय प्राप्त कराने वाला

(रजिस्टर्ड) धातु पौष्टिक चूर्ण

यह चूर्ण जङ्गल की जड़ी-बूटियों एवं अष्टवर्गादि द्वारा धातु रहित शुद्ध बनाया गया है। सब के खाने योग्य है। केवल २१ दिन के सेवन से पानी के समान पतले वीर्य को घन तुल्य गाढ़ा बना कर समस्त प्रकार के प्रमेहों को जड़ से खोकर वीर्य-विकारों को दूर कर नपुंसकता, नामर्दी को नष्ट कर पुरुषत्व एवं सौन्दर्यता का देने वाला है। मूल्य फ़ी डिब्बा २) मय डाक-ख़र्च, वी० पी० द्वारा। पेशगी १।।) भेजने से डाक ख़र्च माफ़। नोट—स्वास्थ्योपयोगी मासिक पत्र 'रत्नाकर' का नमूना १ कार्ड डाल कर मुफ़्त मँगाइए।

पता—'रत्नाकर' भवन, इटावा—यू० पी०

"Victoria" Safe

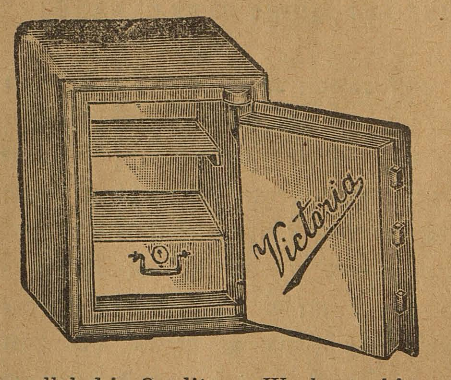

Unparalleled in Quality. Workmanship and Price. Detailed catalogue on request.

G. GHOSE & Co.,
94, Harrison Road, Calcutta

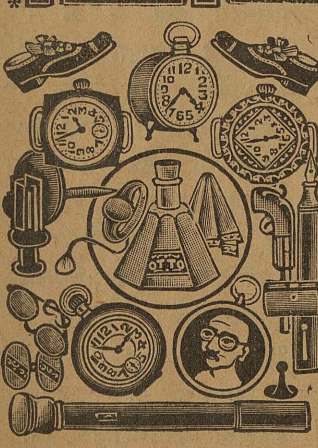

दो दर्जन दाद की दवा और सब सामान ३॥)

"दाद की अक्सीर दवा"—कैसा ही पुराना दाद क्यों न हो सिर्फ़ १२ घण्टे में जड़ से आराम हो जाता है अगर आराम न हो तो पूरा दाम वापस, २४ डिब्बी का दाम ३॥) रु० साथ ही बेश क़ीमती सामान मुफ़्त जो कि आज तक कहीं पाया न होगा और न सुना होगा, दो अदद सुन्दर "डमी रिस्टवाच", एक रेलवे टाइम 'डमी पाकिट वाच' एक मशहूर बरमा टाइमपीस गारण्टी १० साल, एक रूमाल, चश्मा, पिस्तौल, सेन्ट, फाउन्टेन पेन, शेरबीन, (बायसकोप), पाकिट चरखा, महात्मा गाँधी का फ़ोटो, एक जोड़ा बढ़िया जूता—आर्डर में पैर का नाप ज़रूर लिखें। पे० पो० अलग।

पताः—शरमा ब्रदर्स एण्ड को०
पो० ब० ६७६५ सेक्सन ७१ कलकत्ता।

भृगुसंहिता का

चमत्कारी, अपूर्व, बृहत् खण्ड हिन्दी में छप गया, अवश्य मँगा पूरा धन व यश कमावें मूल्य प्रचारार्थ २)

बिजली का

फ़्रान्स का नया आविष्कार, पति-पत्नी में दाम्पत्य सुख का स्वर्गीय आनन्द, सच्चा प्रेम व हर्ष उत्पन्न करता है, मुर्दा दिलों और शिथिल नाड़ियों में भी आनन्द और उमङ्ग की लहरें तथा नौजवानी की शक्ति पैदा करने में लासानी है, एक बार का ख़रीदा आयु भर काम देगा, प्रचारार्थ ६)

सी० यस० एण्ड ब्रादर्स, महराजगञ्ज, ज़िला सारन

आवश्यक सूचना

'चाँद' और साप्ताहिक 'भविष्य' में विज्ञापन देकर अपने कारबार में अपूर्व लाभ उठाइए! इसका रेट बहुत ही सस्ता कर दिया गया है। आज ही पत्र भेज कर नियमावली मँगाइए।

अरे भाई, बेचारे धर्म और पुण्य कुछ नपुंसक थोड़े ही हैं—उनके भी तो कोई 'धर्माइन' और 'पुण्याइन' होती होगी। इसलिए हम तो समझते हैं कि जगन्नाथ-मन्दिर के कङ्गूरों पर उन्हीं धर्म-भगवान की ही 'युगल मूर्तियाँ' बनी हैं, फलतः उनके दर्शन से महापुण्य का प्राप्त होना अनिवार्य है।

❀

इस साल पुरी में काँङ्ग्रेस का अधिवेशन होने जा रहा है। भारत के विभिन्न प्रान्तों से लाखों मनुष्य वहाँ जाएँगे। नीरस राजनीतिक चर्चा के बाद कुछ सरस और मनोरञ्जक दृश्य तो उनके लिए होना ही चाहिए। इसलिए हमारी पक्की राय है कि वे मूर्तियाँ उसी तरह रहने दी जाएँ और श्लीलता की रक्षा के फेर में पड़ कर सनातन-धर्म की शोभा न नष्ट की जाए।

❀

चेहरे पर दाढ़ी और हिन्दुओं को 'काफ़िर' आदि कह कर गालियाँ देने का शऊर—बस, एक मुसलमान के लिए इतनी योग्यता काफ़ी है। परन्तु काश्मीर के मुसलमान कुछ ऐसे ईमानदार, हक़परस्त और न्याय-परवर हैं कि अपनी उस 'योग्यता' को भूल कर काश्मीर-नरेश को एक इण्ट्रेन्स पास मुसलमान को एक ग्रेज्युएट अ-मुसलमान पर तरजीह देने को कह रहे हैं।

❀

यानी अगर किसी कॉलेज के अण्डर-ग्रेज्युएटों को पढ़ाने के लिए किसी प्रोफ़ेसर की आवश्यकता हो, और उसके लिए कोई एम० ए० पास हिन्दू उम्मेदवार हो तो वह जगह उसे न देकर, किसी इण्ट्रेन्स पास मुसलमान को दी जाए। बस, यही सीधी सी बात है, जिसके लिए काश्मीर के आसपास के तमाम हिन्दू अख़बारों ने तूफ़ाने बे-तमीज़ी बरपा कर रक्खा है। आख़िर काफ़िर ही तो ठहरे। कमबख़्त ईमानदारी क्या जानें?

❀

काश्मीर में ७५ फ़ी सदी नौकरियाँ मुसलमानों को ज़रूर मिलनी चाहिएँ और अगर इसकी पूर्ति के लिए ७५ फ़ी सदी योग्य मुसलमान काश्मीर में न मिलें तो बाहर से अर्थात् ईरान और तुर्किस्तान से बुलाएँ जाएँ, परन्तु काफ़िरों को वह जगह कदापि न दी जाय, वरना सारा इस्लाम नापाक हो जाएगा। यह है, काश्मीर के मुसलमानों की हक़परस्ती नं० २।

❀

काश्मीर की सारी मिनिस्टरियाँ मुसलमानों को मिलनी चाहिएँ, योग्यता की कोई ज़रूरत नहीं। क्योंकि वे 'मिनिस्टरी पास' की सनद लेकर अम्मीजान की गर्भस्थली से निकलते हैं। आपको विश्वास न हो तो हदीस देख लीजिए। यह अल्लाह का फ़रमान है।

❀

वास्तव में यह मुसलमानों की ईमानदारी और दयाशीलता है कि उन्होंने उपर्युक्त माँगों के साथ ही काश्मीर के हिन्दुओं को वहाँ से निकाल बाहर करने की बात नहीं कही है। वरना, हिन्दुओं का कोई हक़ नहीं कि वे काश्मीर में रहें। उन्हें कोपीन धारण करके हिमालय में चला जाना चाहिए या समुद्र की तलहटी में अपनी बस्ती बनानी चाहिए।

❀

मुसलमानों के वालिद माजिद कभी इस देश के बादशाह थे। काफ़िर उनकी रिआया थे। हज़रत आदम की सलाह से अल्लाह मियाँ ने यह व्यवस्था की थी और जिबराईल की मार्फ़त इसकी सूचना भी भेजवा दी थी। बस, काश्मीर उनका, पञ्जाब, सिन्ध, ब्लूचिस्तान और बङ्गाल उनका है। हिन्दू अगर इस धरा-धाम पर रहना चाहते हैं, तो मुसलमानों के ग़ुलाम बन कर रह सकते हैं।

❀

कुछ हिन्दू हैदराबाद, भूपाल, भावलपुर, रामपुर आदि मुसलमानी रियासतों का उदाहरण देते हैं और जानना चाहते हैं कि इन रियासतों में हिन्दुओं को कितनी नौकरियाँ दी जाती हैं और वहाँ उन्हें कैसी-कैसी सुविधाएँ प्राप्त हैं? बताइए, इन मूर्खतापूर्ण प्रश्नों का उत्तर कोई भला आदमी क्या दे सकता है?

❀

प्रतिष्ठाता

डाक्तर एस० के० बर्म्मन

डाबर
(डाक्तर एस० के० बर्म्मन)
लिमिटेड
कलकत्ता

स्थापित
सन् १८८४ ई०

५० वर्षों से भारतीय पेटेन्ट दवाओं के अतुल्य आविष्कारक!

बच्चे ही राष्ट्र की भावी आशा हैं!

इस आशा-पूर्ति के लिए अपने बच्चों को?

लाल-शर (Regd.) (लाल शर्बत)

पिलाइए! क्योंकि, बच्चे, लड़के व प्रसूती के लिए यह अमृत-तुल्य पुष्टई है।

बच्चों की

तन्दुरुस्ती का ख़्याल रखना प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है। इसके सेवन से उनके शरीर में नया, शुद्ध रक्त उत्पन्न होता, हड्डियाँ मज़बूत होतीं और वे सदा प्रसन्न तथा हृष्ट-पुष्ट बने रहते हैं।

मूल्य—फ़ी शीशी (३२ ख़ुराक) ।।।–) डा० म० ।।=)। ❀ नमूने की शीशी =) मात्र।

नोटः—❀ नमूना की शीशी केवल एजेण्टों को ही भेजी जाती है। अतः अपने स्थानीय हमारे एजेण्ट से ख़रीदिए।

विभाग नं० (१४) पोस्ट बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

इलाहाबाद (चौक) में हमारे एजेण्ट बाबू श्यामकिशोर दूबे।

अलीगढ़ (महाबीरगञ्ज) में हमारे एजेण्ट, चुन्नीलाल प्यारेलाल सौदागर।

गया (चौक) में हमारे एजेण्ट सुगन्ध भण्डार।

स्वदेशी मूँज के फ़र्श

हमारे यहाँ मूँज के फ़र्श बहुत मज़बूत, निहायत ख़ूबसूरत अत्यन्त सस्ते और हर साइज़ के बनते हैं। कृपया एक बार मँगवा कर लाभ उठाइएगा। यह फ़र्श ९ नवम्बर से १९ नवम्बर तक स्वदेशी-मेला और नुमायश प्रयाग में स्वर्गीय पं० मोतीलाल जी नेहरू की पुरानी कोठी (स्वराज्य भवन) में भी मिलेंगे।

रेट्स, नमूने और एजेन्सी के नियम निम्न-लिखित पते पर मुफ़्त मँगाइए।

पता:—दी मैनेजर "गङ्गा मूँज मैटिङ्ग फ़ैक्टरी"

कासगञ्ज (यू० पी०)

असली किफ़ायत

स्पार्लिङ्ग पेटेण्ट ताले हमेशा लाभदायक होते हैं क्योंकि वे सच्चे, मज़बूत और देरपा हैं तथा झूठी ताली से कभी नहीं खुल सकते।

बड़ी-बड़ी परीक्षा लेने पर भी यही साबित हुआ है कि क़ीमती सामान, जवाहरात, ज़ेवर इत्यादि की रक्षा के लिए यह ताले पूरी तरह विश्वासपात्र हैं, इसीलिए यह हमेशा सब से ज़्यादा पसन्द किए जाते हैं।

इन अद्भुत तालों का व मास्टर—की का पूरा हाल जानने के लिए हमारा सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

स्पार्लिङ्ग पेटेन्ट लौक वर्क्स, अलीगढ़

होमियोपैथिक दवाइयाँ

९ पैसे फ़ी ड्राम किताब देख कर थोड़ी पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ भी इलाज कर सकती हैं। गृह-चिकित्सा बक्स में असली अमृत तुल्य दवाइयों से भरी १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४, १०४ शीशियाँ हैं; जिनका मूल्य क्रमानुसार उपयोगी हिन्दी पुस्तक तथा ड्रापर सहित २), ३), ३।।), ४।), ६।=), ६), १०।।।=) है। सब प्रकार की होमियोपैथिक सम्बन्धी पुस्तकें, बायोकैमिक दवाएँ ग्लोबिलस, सुगर आफ़ मिल्क ट्यूब, शीशी, वेलवेट कार्क, बुख़ार देखने का थर्मामीटर मू० ।।) और छाती की परीक्षा करने का यन्त्र मू० २) इत्यादि। सब डॉक्टरी सामान सस्ते दाम में मिलते हैं। १९ होमियोपैथिक डॉक्टरों के नाम भेजने से "Biochemic Twelve Tissue Remedies" Book मुफ़्त भेजी जाती है।

एस० आर० विश्वास एण्ड सन्स ७५—१ कोलूटोला स्ट्रीट, कलकत्ता

उस्तरे को बिदा करो

हमारे लोमनाशक से जन्म भर बाल पैदा नहीं होते। मूल्य १), तीन लेने से डाक-ख़र्च माफ़।

शर्मा ऐण्ड को०, नं० १, पो० कनखल (यू० पी०)

जब वह घर पहुँचें

तब आप थके हुए, मन्दे और दिन की झञ्झट व चिन्ता से मुर्झाए हुए चेहरे से उनका स्वागत करेंगी, या नवविकसित फूल-से सुन्दर चेहरे, कोमल ताज़े कान्तिमान सुगन्धिपूर्ण शरीर से उन्हें कण्ठ से लगा कर तृप्त करेंगी, जो कि ओटिन के उपयोग से ही होगा।

प्यारी पत्नी अपने पति की दृष्टि में सदा सुन्दरी रहने की इच्छा करती है, बुद्धिमान पत्नी इस इच्छा की पूर्ति का तरीक़ा जानती है। इसीलिए वह ओटिन को अपरिहार्य समझती है। प्रत्येक रमणी का यह कर्तव्य है कि जितने अधिक काल तक सम्भव हो, अपने बदन को जवानी की मोहनी से परिपूर्ण रक्खे। रोज़ रात को सोने के पूर्व ओटिन क्रीम से पाँच मिनट तक मलने से चर्म के छिद्र स्वच्छ होते, झुर्रियाँ नहीं पड़ने पातीं तथा चर्म की नाज़ुक कोमलता बनी रहती है, जो कि जवानी का अत्यन्त मोहक गुण है।

ओटिन शृङ्गार-सामग्रियों में कोई पशु-द्रव्य नहीं है, तथा बनाते व पैक करते समय वे हाथ से नहीं छुए जाते।

ओटिन क्रीम—रात को मलने से चर्म को शुद्ध कोमल करके पुष्ट, कान्तिपूर्ण करता है।

ओटिन स्नो—दिन को लगाने से वैनिशिङ्ग क्रीम शीतलता व शान्ति देती एवं चर्म की रक्षा करती है।

सब जगह सौन्दर्य-सामग्री की दूकानों में मिलती है।

दि ओटिन कम्पनी, १७ प्रिन्सेप स्ट्रीट, कलकत्ता

The Oatine Co. 17, Prinsep St. Calcutta.

तीनों घड़ियाँ बिलकुल मुफ़्त

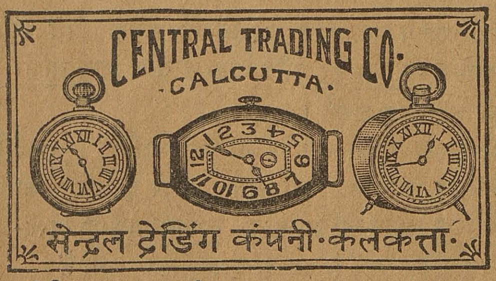

हमारी मशहूर दाद की दवा के लगाने से नया या पुराना कैसा ही दाद क्यों न हो २४ घण्टा में जड़ से ग़ायब होता है। ६ शीशी एक साथ मँगाने वाले को सिर्फ़ २) देना पड़ेगा और साथ में एक डमी रिस्टवाच और एक इनफैंट पाकेटवाच और एक असली बी टाइमपीस गारण्टी ५ साल मुफ़्त मिलेगी। साथ ही में १०० जादू की तस्वीरें भी मुफ़्त। इन तस्वीरों को जी चाहे जहाँ दीवाल, कपड़ा, किवाड़, किताब पर छाप लीजिए। डाक-ख़र्च अलग।

सेण्ट्रल ट्रेडिङ्ग कम्पनी, पो० बा० ११४२५, कलकत्ता

बृहत होमियोपैथिक दवाख़ाना

होमियोपैथिक दवा—-)।, -)॥ मदर टिञ्चर ।) ड्राम।

सब बीमारी के दवाओं के बक्स, किताब और ड्रापर के साथ १२ शीशी के बक्स का २), २४ शीशी के ३), ३० शीशी के ३॥), ४८ शीशी के ५), ६० शीशी के ६।=), ८४ शीशी के ६) और १०४ शीशी के १०॥=) डाक-ख़र्च अलग। होमियोपैथिक हिन्दी किताबें—गृहस्थ चिकित्सा सजिल्द १) चिकित्सा शिक्षा ॥=) हैजा चिकित्सा ।=) डा० म० अलग।

एन० के० मजुमदार एण्ड कं०, ३४ क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

आर० एल० बर्मन कम्पनी की सुप्रसिद्ध पुस्तकें हमसे मँगाइए!

चीना सुन्दरी	१॥)
जर्मन षड़यन्त्र	१॥)
ताया का ख़ून	।)
भक्त सूरदास	१)
वीर चरितावली	१)
जेल-रहस्य	१॥।)
भीषण भण्डाफोड़	॥)
राजर्षि प्रह्लाद	१।)
काला साँप	।=)
काला कुत्ता	॥)
ख़ूनी औरत	१।)
बालक श्रीकृष्ण	१।)
वीर अभिमन्यु	१)
दारोग़ा का ख़ून	१।)
घटना-चक्र	२।)
जासूस की डायरी	१।)
जर्मन जासूस	१॥)
ख़ूनी सरपञ्च	॥।)
शिशुपाल बध	२॥)
चण्डाल चौकड़ी	१॥।)
सोहराब रुस्तम	१)
जासूसी चक्कर	२॥)
धन कुबेर	१॥।)
पिशाचिनी	१॥।)
गुलाब में काँटा	१॥।)
चोर चौकड़ी पर	।-)
अदल-बदल	।)
चित्रकाव्य (राजसंस्करण) ...	२॥)
कीचक बध	॥=)
नया महल	१)
जासूस के घर ख़ून	१॥)
राजसिंह	२।)
आर्य-महिला रत्न	२)
कोहेनूर	१॥)
जासूसी पिटारा	॥।)
सचित्र बालरामायण	॥।)
चित्रकाव्य (साधारण) ...	२॥)
महाराष्ट्र वीर	१)
जासूसी कुत्ता	१॥)
आत्महत्या	॥।)
नक़ली रानी	१।)
बनवीर	१॥)
जासूसी कहानियाँ	॥।=)
नव रत्न	१॥)
सती सीता	॥=)
गोपालन शिक्षा	॥)
लाल क्रान्ति	२॥)
विजय किसकी ?	१।)
आख़िरी दुश्मन	१॥।)
बोलशेविक रहस्य	१॥।)
कापालिक डाकू	१॥)

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक—इलाहाबाद

दीवाली का अनूठा उपहार

इस अङ्क का मूल्य केवल १॥) रु०

चाँद

ग्राहकों को मुफ़्त !

का

राजपूताना-अङ्क

"भविष्य" और "चाँद" के विद्वान् लेखक—

डॉक्टर मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी-लिट्, विशारद

के सम्पादकत्व में प्रकाशित होगा !

इसकी विशेषताएँ :—

राजपूताने की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक दशा का

सच्चा चित्र और सुधार के उपाय

इसमें निम्न-लिखित लेख प्रकाशित करने का उद्योग किया जा रहा है :—

वर्तमान राजपूत कौन हैं—हूण या आर्य ?
मेवाड़—प्रताप से पूर्व और पीछे (सचित्र)
राजपूताने के प्रसिद्ध युद्ध
राजपूताने के प्रसिद्ध क़िले (सचित्र)
जौहर और भीषण आत्मोत्सर्ग (सचित्र)
मुग़ल-कालीन राजपूताना (सचित्र)
राजपूताने की रियासतों से अङ्गरेज़ी सरकार की सन्धियाँ।
राजपूताना और मराठे
राजपूतों के अन्तःपुर
रियासतों का राज-प्रबन्ध

राजपूताने में राजनैतिक असन्तोष
बीजोलिया और बूँदी
ग़ुलाम और बेगार
राजपूताने के कर
मारवाड़ी व्यापारी
राजपूताने के अङ्गरेज़ी अफ़सर
डिङ्गलकाव्य
मीराबाई के भजन
जयपुर का अजायबघर
राजपूत चित्र-कला
इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि।

शीघ्र ही ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Registered No. A—2085

उपन्यास-प्रेमियों के लिए एक नूतन उपहार !

[अत्यन्त मनोहर, मौलिक, सामाजिक उपन्यास]

सांसारिक आपत्तियों में डूबे हुए मनुष्यों के लिए यह उपन्यास ईश्वरीय सन्देश है। विपत्ति-काल में मनुष्य को किस प्रकार स्थिर-चित्त, शान्त, सहिष्णु, धैर्यवान तथा धर्मनिष्ठ होना चाहिए; शत्रुओं के प्रहार सहते हुए उनके प्रति कैसे पवित्र भाव रखने चाहिए; दीनता का ताण्डव-नृत्य होने पर भी प्रसन्नतापूर्वक त्याग-व्रत लेकर किस प्रकार लोक-सेवा तथा परोपकार के लिए उद्यत रहना चाहिए; और इसके फल-स्वरूप किस प्रकार सारी आपत्तियाँ स्वर्ग-सुख में परिणत हो जाती हैं, इसका बहुत ही सुन्दर वर्णन आपको इसमें मिलेगा। जो मनुष्य किसी समय एक दीन-हीन व्यक्ति के ख़ून का प्यासा था, दैवी संयोग से वह किस

छपाई-सफ़ाई अत्यन्त सुन्दर व दर्शनीय ! मूल्य केवल लागत मात्र !

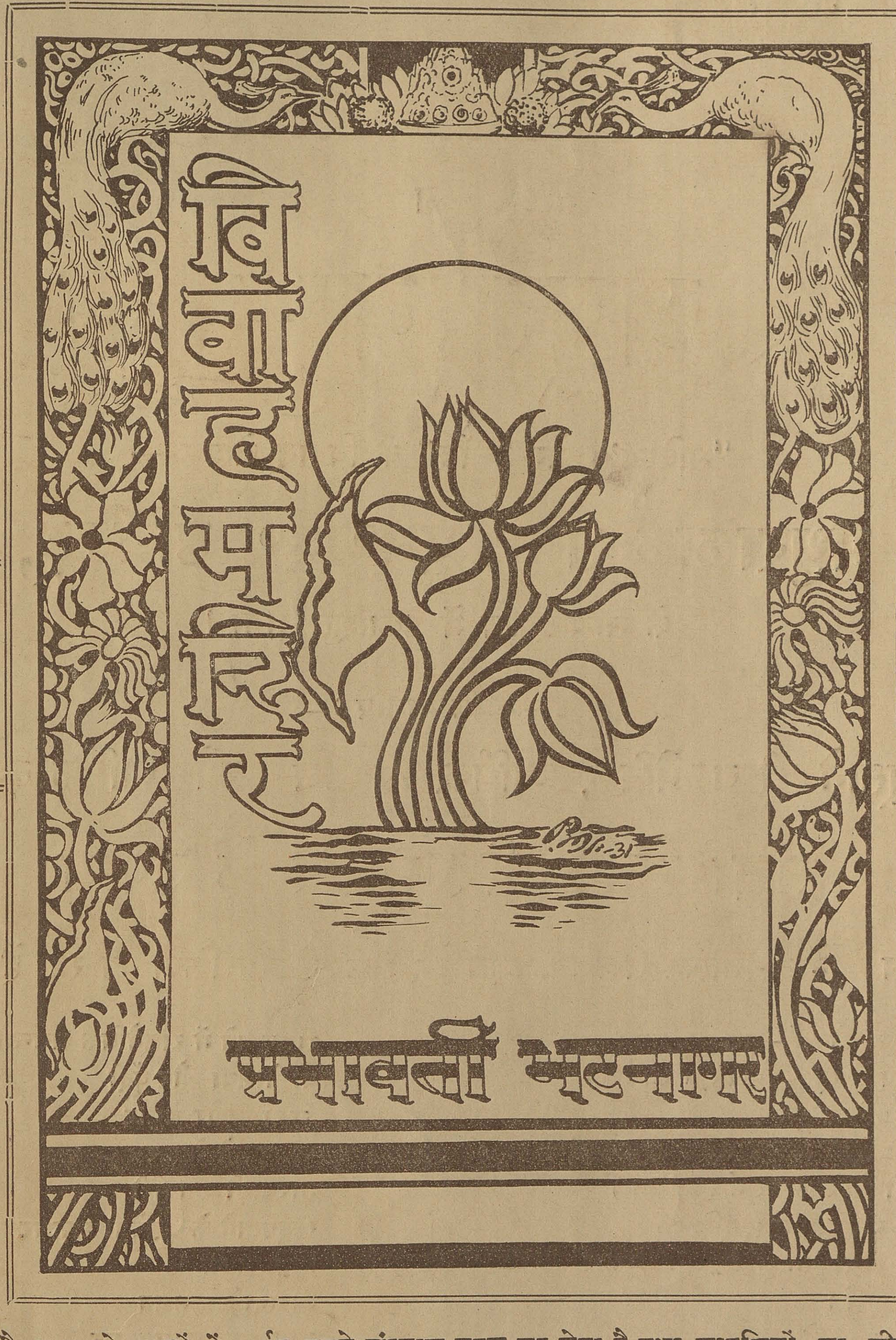

पुस्तक छप रही है ! अभी से ऑर्डर रजिस्टर्ड करा लीजिए !

प्रकार अपना सारा वैभव उसके चरणों में अर्पण करके संन्यास ग्रहण कर लेता है तथा आपत्तियों का क्रीड़ास्थल—एक दरिद्र की कुटी किस प्रकार विवाह-मन्दिर बन जाती है, इसका अद्भुत रहस्य पुस्तक पढ़ने से ही मालूम होगा।

स्त्रियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य रत्न है। अपर्णा देवी का चरित्र पढ़ कर प्रत्येक स्त्री अपना जीवन सफल बना सकती है। उसका आदर्श पति-प्रेम, सेवा-भाव, एवं दारुण परिस्थिति में सर्वदा प्रसन्न रहते हुए पति को धैर्य एवं साहस प्रदान कर क्षण-मात्र के लिए भी दुखी न होने देना वह अलौकिक गुण हैं, जिन्हें प्रत्येक भारतीय रमणी को हृदयङ्गम करना चाहिए। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल है, जिसे छोटा सा बच्चा भी समझ सकता है। वर्णन-शैली अत्यन्त मनोहर है। पुस्तक छप रही है; शीघ्र ही प्रकाशित होगी। अभी से ऑर्डर रजिस्टर्ड करा लीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक-इलाहाबाद

Edited, Printed and Published by Shrimati Lakshmi Devi, at The Fine Art Printing Cottage, 28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

This PDF you are browsing now is in a series of several scanned documents by the Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), Delhi

CSDS gratefully acknowledges the enterprise of the following savants/institutions in making the digitzation possible:

Historian, Writer and Editor Priyamvad of Kanpur for the Hindi periodicals (Bhavishya, Chand, Madhuri)

Mr. Fuwad Khwaja for the Urdu weekly newspaper Sadaqat, edited by his grandfather and father.

Historian Shahid Amin for faciliating the donation.

British Library's Endangered Archives Programme (EAP-1435) for funding the project that involved rescue, scan, sharing and metadata creation.

ICAS-MP and India Habitat Centre for facilitating exhibitions.

Digital Upload by eGangotri Digital Preservation Trust.

CSDS
centre for the
study of developing
societies

BRITISH
LIBRARY